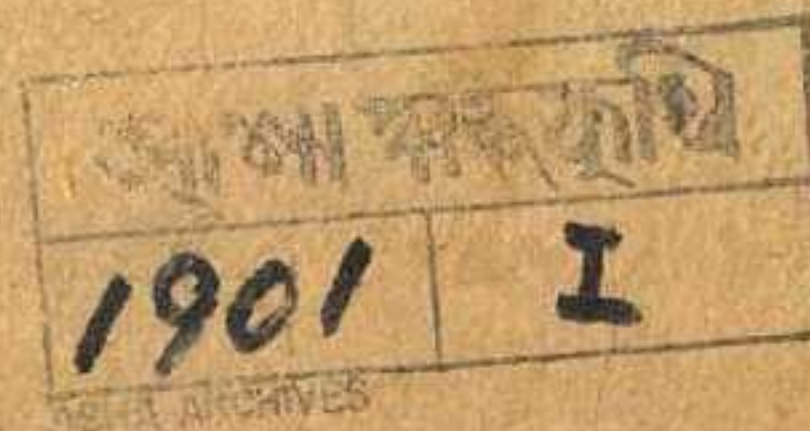


पतिहालक्यासार





धानि शुभं वजाग संस्कृती यश्च वजा निद वस्य पंचाम मचिद्वय ॥ कामिकिया गजवा न्यो कान दीवा जिगीतथा दीक सु
 श्री वसारु स मंडम सुपरंदध ॥ निवरादा समाख्या ग नूदरा दान ग ४ य न । विजय पात्र मेधवर्ध निधर्व सा जी ग संस्कृती ॥ पा मी ग
 मुख विम्वं सु सिद्धि स कान मव चानान सिद्धि वन्दु हा सी वी नखाय यु नो न व ॥ माफागी किले र्ग ये व ललिनी विवनी यन । नूदरा द स
 माख्या गा दधम दधम दधम ॥ हन दू कान कंचे व विदु सानं क लामु री । दवरा स ३ सु ग सी भव न काल भव न ॥ य कि ना ज नि
 खाया ग निखा धम न निखामु नी पश्चम ग विरा ग ३ धू न्य रे द वि निरु यी ॥ काल कर्त्त च काल भि काल कू ट पट्ट मी क म्भा र्ज क
 म्भली कर्त्त काल उ लू क ठा रु की ॥ सुवर्धु ने ख स ग्री व ता रु नी ता ग ला रु नी ॥ भनू उ य विमरु दा अखा विं धा ति नी निगा ३ सु च्छु र्ते
 म व रे उ का धम नारु रे न वी ॥ सिगा धन नू वे व कृपा लो ही समु च्चर्य ॥ अधा न धा घ ण धा र्ज निभ म सी चान द म्भ र्खी ॥ री मा धन ३

12

मनाना वी री मी व गाल मर्दु की उच्छु मी वाम काया ली णा घनी पृथ म चर्य ॥ जि जि न च क पा द लु सिद्ध या ग ष्व नी म नी पंचामु री य प
 ३ ३ ३ या नि नो जाल स म्भली ॥ विष्म विकट संका री तिल का दान रे न वी च व द्वा रि ण ग लानि सा रु ना नि च ग द्यी ॥ व उ म्भ विषु
 माना नि द क्रि धा था रु वा निव । नय न या रु नी सु र्क मा रु नी मा रु ना मु री ॥ क न पू जा वि धन नु वी ण ग लु नू द रु नी जय च विजय च
 व अ जि री वा प ना जि री ॥ सिद्ध नि था द री य र्थ चि का म नि म हा द री । वा रु र्द क रु की वि री काम धन क द म्भ र्क ॥ आ न द नू द म्भ र्ज
 र्थ किं क री किं क ना नू र्ग ॥ अ न नू विजय च व गो र्द द्वा र्सी वी रु द क ३ ॥ जी वाम द म्भ म द वा लुं च लु विं धा ति रु द क । ह ला रु
 लु द र य गी वी क न क टि क टि क टि ॥ क या टि म्भु मा ली च र्क का टि ख म्भ चान दी । च ३ सि धन र्द कान र्हा रु कान नि वान वी ॥ धा
 ना द रु स म्भ र्क र्थ य र्ध न इ य ग्रा स नी । विमली कि क टि च व सु धान र्ग म हा रु द ॥ य म द य टि च रु ग म्भ विष र द म्भ र्ज र्ज र्ज

[illegible][illegible]

79

५१

यप १

स्वर्गनिकुलान्न विनागमद्विजादिषु किं सिद्धिर्हि नैलाक र्कदाकीचाण लिख्यते ॥ सनकादिग्रन्थासु अष्टाध्यायिषु च ॥ क्रियासागर
 वेत्ता श्रीमन्महर्षिः कनकद्विजा ॥ कुर्याद्विषयदायायास्तन विद्यापचादिना ॥ अग्निष्वा मादयायदसु निष्ठायाश्च ततथा ॥ नैड्या हि नमस्तु ॥
 गोचरे चोपसर्पिता ॥ स्वर्गलोकं लोकां विष्णुयावेदिकी क्रिया ॥ स्वर्गकांत्यत्रिभुवा ॥ सामादादि त्र्यमागता ॥ शवानस्यार्थं समासाद्य स सनकी
 हयाक्रिका ॥ ॐ ह्यकगुर्गता ॥ क ॥ स्वर्गलाकमवाकवान् ॥ यन ॥ यथा क्रियाकीर्ति ॥ क्वावनादिष्ठायाग ॥ सत्यलाकात्तर्ननालि ॥ क्वा नस्यापि
 हलीमरुता ॥ तस्मात्तु नय ॥ सर्वं जेवाथन विमानदा ॥ सर्वेषां भववर्जनां क्रिया ॥ गोवीरुलपदा ॥ विष्णुर्वा ॥ नो वद विद्यापचादि
 ना ॥ ॥ स्वर्गलोकं लोकां विष्णुयावेदिकी क्रिया ॥ स्वर्गकांत्यत्रिभुवा ॥ सामादादि त्र्यमागता ॥ शवानस्यार्थं समासाद्य स सनकी
 नां च यो दया ॥ इदं विद्यापसाधितं ॥ हविर्वा ॥ यथाया ॥ ॥ सर्वं जेवाथन विमानदा ॥ सर्वेषां भववर्जनां क्रिया ॥ गोवीरुलपदा ॥ विष्णुर्वा ॥ नो वद विद्यापचादि
 नां च यो दया ॥ इदं विद्यापसाधितं ॥ हविर्वा ॥ यथाया ॥ ॥ सर्वं जेवाथन विमानदा ॥ सर्वेषां भववर्जनां क्रिया ॥ गोवीरुलपदा ॥ विष्णुर्वा ॥ नो वद विद्यापचादि

१३

उया ३

वि २

यनयागदीक्षायाश्च विष्णुसंग ॥ सर्वेषां भववर्जना मनसह ॥ कनकपत्र ॥ लक काटि सरुजा नि विंशतिर्वेदानि च ॥ काटिखच्चिद्वन्द
 प्रमकास्ती ॥ निनिर्गता ॥ दासफ तिसरुजा नि काटि लकंगथर्वद ॥ ययगा निचपेचा ॥ नमस्तु ॥ ददि नि ॥ सुगा ॥ शिं ॥ काटि सरु
 याहि सफां कठगानि च ॥ नियगानि च ॥ दिं ॥ ननु यदा निनिर्गता ॥ नवकाटि सरुजा नि यचणी ॥ ययगा निच ॥ काटि ॥ गता
 निपेचा ॥ नमुतावामा नि ॥ सुगा ॥ सफ काटि सरुजा नि सफ शिं ॥ कठगानि च ॥ गती सरुसल ॥ च सया ॥ जगता नि निर्गता ॥ शयः
 चवका ॥ इवमेव ॥ शिवकि ॥ सिद्धि मकिट ॥ ते मुलिभादि सकार्यं ॥ नान्ये वदादिचादिना ॥ अकानादिक कर्त्ता ॥ सदा शिवादि नि
 र्गता ॥ ते कृती पञ्च ॥ भववाखी सिद्धि मकिट ॥ अग्निमादि सरु सिद्धि सिद्धि तखचनदय ॥ निं ॥ शयाय थ सिद्धा ॥ पाय
 काधधसादय ॥ तथवा ॥ नुदकाया कम्बलारुकादय ॥ निर्मले नावद ह्यु सिद्धा ॥ शिवकि मरुग ॥ नासत्य मेध्वन

गङ्गागङ्गाविक्रयादवर्णं कुर्यादालरुनं पुनः॥ गङ्गागी (गङ्गा) नक्षत्रं च विरुद्धं प्रययद पि। गाउनीरससौ नाशुदा प्राकटं निववा नि
 ६॥ लखनं वासुदहं न तन्मन्त्राय निलेखनीं। वरुणिसुरीव कृत्य गिलायाधक गमनिनी॥ कृत्वा शुरु निमिनि यङ्गा थगुनरुनी। स
 दिगाकेन मरुदा सानवकु। दिक्क वग॥ गं धनपूष धूपा र्यां नेवशे ४ पूजयद् मी। दयाद्वलिचमाषाञ्च नामिषा सवसंयते। जन्दाः
 गमनं धरुगमनं नृदस्याश्च। रुनं गरी। मेर्यद त्वाउ नृदस्य मरुसंभावक वदत्॥ धीनिक गनमरुखं दवशु वनस्य ग। घट्टमान्यः
 दिगं ४ सारु। एवय मनारुनं॥ उं धीं को वोषट् संभावमरु॥ ॥ पूषुद्दिगिं निवेनेव गगादयाद्वहिर्वलिं। थायय विदिनामरु ४ः
 गङ्गाद्याद्वलिकर्मणि॥ स नवविदिनामरु ४ खनामषववा थवा। स्तानमि न्या निरुता नि पिषा चाना कसा ध्यथ॥ सिद्धविद्याधना लं गम
 दवा। श्वेव सदानवा ४ गारु संपूष विधिव। बियवाक्के ४ गाययत्॥ निवलिं गमथमसाकं यागवेधानिवा कुर्या। निवार्थं गुरुवे कार्यय

गङ्गाकमपि गुरुवत्॥ पुननव लिदानन पीगारव। गसर्वदा। सखन गङ्गा नाना मरुत्वा। स्तानमिदं दमी॥ गगधमचम्य विधिवत्सुक्लीकृतः
 विरुह ४। निर्वसंपूष कुर्या। स्वप्रमानवकी जयत्॥ व नृपाध्वस्य परुरु कृगग ल्याध्या क्रिक ४ स्वप्रमानवकी नाशो। गगमक्षरु नृजयत्॥ उंः
 नमाऊय सिनराय। पिङ्गलाय मरुत्मान। वामाय विध्वनूपाय। स्वप्राधियगयनम॥ स्वप्रकथय मगथं। सर्वकार्यसु गायन ४। क्रिया सि
 द्विविधास्यामि। स्वसुसादमरुध्वन॥ उं हिलि २ मारीनिनेमरुध्वन गूलयाने ३ ४ स्वप्रहृन २ गुरुदहय १ दूँरुदस्तरा॥ स्वप्रमानैकमरु
 ४॥ ॥ निधुर्मरुनिगुरुं पृथिनीरुलिगंधिया। नृडगवा निगीखध्वद्वद्वावाचं गुरुसदा॥ सिधमानं उनकं न नक्षारु गयनी गथाक
 यं गुरुमानुषा। तं खड्गदधुरुपदी॥ नगकी गयदायुर्कुं लकधमद्यि। गगरनी। रुद्रयाचनदास्तात्वा। धानदाघ निवुरुय॥ उद्वेव
 नस्य ग मूढीत्यादध ४ यादक ल्येना ४। नृद सोमन। धेगमन। मूषका। दिमृखेकेमात्॥ नृगममयादिर्मरुन्या। सिद्धायेरुऊय बिय

[illegible]

27

यच्च ननु धिनीयवता यमनमभ्यस्त्या रुदाहामाविधीयते ॥ आद्याकृति सहस्रं वै बहु रूपं नहामयत् ॥ दद्यात्पुष्पं हि निवापि, निवः
 नाभिवहानि ॥ इह याद्निर्मितुं श्रानमकुण्ठतं गुरुं ॥ गिलादनिगतपूजा दर्वदानयत् ॥ ॥ गिला ४ संप्रत्यहं वै चिय
 वादिश्रुदितलि ॥ द्विजादिवर्गं दननूपरदनरहिता ॥ द्वाविंशत्तु कृष्णद्वयं गीतिदासविवर्जिता ॥ श्रयवतासागिलाशमक्रा, रिष
 लिङ्गध्वनना ॥ धर्मयद्नरहताथ प्रजानां कलस्यच ॥ चर्द्धिदयाश्रिलानूनी, तनूलीलकृष्णान्विता ॥ आकनी, दोनु विद्मशो, वनापवन
 संक्रको, रुपा, इकुलो दिगलि, आधे गंखादोचतुर्विधो ॥ लखानां कुर्य ४६ द्वा ध्वनसाजातयकृष्णाननूधमकमिश्रवर्द्धाणि ॥ लक
 धानि ॥ ॥ विक्की, पुर्मरुगी, लासर्मदीधेकवर्णिनी, सिन्धु, शनिम्रागिलाधन्यासिक, पुष्पनदीजले ॥ कृलादिजावत्तु, गुफाः
 रुणगमीन, ददकनासगन्धिनिविज, मीच, डूमकायाहितासदा ॥ यत्रागगरेहीनाच, लखाकीलकवर्जिता ॥ दृढामनाममाय

श्रीमन्मन्त्रनिर्घण्टुः। गुणरत्नासिन्धुना मासादनद्विजादिगणैः। कर्मभङ्गाद्युपवर्त्तमानगन्धर्वगणैः। ४३। गिला। ४४। भद्रवी। ४५। नवा
 यक्षगणैः। ४६। गिला। ४७। वल्लो। ४८। निजयं धनं चायुषो वृद्धिं प्रयच्छति। ४९। पञ्चमी। ५०। नितासाधी। ५१। मन्त्रिभ्यां। ५२। गिला। ५३। नूयसंय
 न्नाधनदण्डेदिक्किं। ५४। पाठना। ५५। यमा। ५६। कर्मदारा। ५७। निताद्विजा। ५८। नकृत्तं। ५९। मृगकृत्तं। ६०। दवृत्तं। ६१। गिला। ६२। कल्लो। ६३। नूयसंय
 सा। ६४। नूयसंय। ६५। नूयसंय। ६६। नूयसंय। ६७। नूयसंय। ६८। नूयसंय। ६९। नूयसंय। ७०। नूयसंय। ७१। नूयसंय। ७२। नूयसंय। ७३। नूयसंय। ७४। नूयसंय। ७५। नूयसंय। ७६। नूयसंय। ७७। नूयसंय। ७८। नूयसंय। ७९। नूयसंय। ८०। नूयसंय। ८१। नूयसंय। ८२। नूयसंय। ८३। नूयसंय। ८४। नूयसंय। ८५। नूयसंय। ८६। नूयसंय। ८७। नूयसंय। ८८। नूयसंय। ८९। नूयसंय। ९०। नूयसंय। ९१। नूयसंय। ९२। नूयसंय। ९३। नूयसंय। ९४। नूयसंय। ९५। नूयसंय। ९६। नूयसंय। ९७। नूयसंय। ९८। नूयसंय। ९९। नूयसंय। १००। नूयसंय।

[illegible]

23

[illegible]

यगकुमानामध्याह्नविलविशीतयागस्यधनकयशानकविश्वचष्टंगीत्याख्याभकमयमरूशायीताविश्वपरीगष्ट्यासवेस्व
 लानहानिदशकषुविश्वचष्टंगानाष्टशानकवाधिकानक॥ वक्षिकावयवविश्वयाफलनृविश्वरीतिदशसकेतानिदुविश्वोदिः
 क्रूर्यानिर्गामलकलोशावाकायुहोयलविश्वगदाशानक॥ यलपयत। कुरुविकानरुदनगुरुविश्वसुलपतशवभ्रादीकनवीन
 शुशुद्धिदृष्टमेमचिगशोनाहीतालसंयुक्तसोवीनगचयीषयग॥ भनलिफा॥ सितानागीवाध्वदादिसंयुता॥ शरुंगहीकषुमः
 ल्यावाकात्यातांदाषदांखड्ग॥ जिहलाविश्वमासीचभयकषुसमचिता॥ पिष्टुवसमरागलुनानीकीनलपयत॥ लीपाक्षिमि
 णिलीकात्यागरीविश्वान्नाविषीगनकुरुविश्वसुलपयत॥ कीनपिष्टु॥ यतिश्याम्कामीषणेनिकेशभूदाना
 राधितनकेत्याश्वसुमाचिंतनयत॥ ॥ पिष्टुचष्टुवकानिभूयावेष्टुवोकिता॥ गीकुरुदुदयकासविदीनेष्टुपयव

२४

५१

२कि

स वि २

॥ लिफाजिलोपितायध्यापुनादियदधयित्। द्रव्यादिनूपकगर्तकृत्वायाध्यापदांखड्गता॥ ॥ किडवारयतश्रुडनयाका
 र्वविर्गती। कुरुसुलनकननगुनादयाकुर्यामय॥ कीलककीलकाकानेकात्राश्रुधनेनाष्टकगठकयागैरिदाकानोसीधि
 कुरुविनाष्टकगठुषिनेष्टुषिनाकानेकुरुदृष्टनाष्टक। कुरुदृष्टिगर्तविश्वचुमुद्यागानदायकी॥ सुश्रुगर्तनसंख्यागै
 पनित॥ यनिवक्षित॥ यामकासारवक्षाम॥ साचिनालकुरुजाष्टक॥ कुरुटिकागुरुवदाना। टकरंगकनीचसा। गयाकुरु॥
 यजनाष्ट॥ गीयमवनसंगय॥ कुरुत्वष्टुयमाभ्याय॥ पठलीगिसकिरित॥ गनकुरुथान्नलिभूनि। कुरुचदोविनष्ट॥ गशाजाः
 लकीषुधकानेसासधकाषयुठायमी। यीगैसीनगथाकषुनकीनीलचमिष्टकी॥ नाहोनावभदचवरायापूगथदुखमान। न
 वयदुमहादाया। रुदरिनाङ्गिसुगा॥ ॥ मध्यादायाः। यवक्षामिनाम्नाषाउगधक्षितान्। वक्षपलुविरागस्तुमिध

लिङ्गवदायदान ॥ नृदणमभिता नृदणं लङ्गजकामशुरुयदान ॥ निधाय लिङ्गवदायदान ॥ विमलददुविन्दुहि ॥ चिन्ननरवांक नखा
चमकिकावर्धुहीनके ॥ विजला ॥ अक्षरगममाय काकपादीकितास्तु ॥ याविदुलताकाला सोमिलावदुदायदा ॥ यकिने
यान्नतागन्धि ऊ ० नामयदायक ॥ यद्रयगुह्यानीय कनिकासदृशकुर्यत् ॥ उषानीतद्विजानीयात्युल्लभकारिदायक ॥ च
उदविमलनूर्य मीनगन्धायलकिनी ॥ हसधाघायसंतर्प ॥ इदं पिगलामता ॥ इदं कावर्धुदह मी ॥ यंकर्तु विमनां ॥ की
ऊनीदन्त्या ॥ यसाका का ॥ जिलातासीचनिलिनी ॥ मदी वृत्ताचभूषा ॥ ददु ॥ स्यादतिनागदा ॥ कृष्णीतान् ॥ आविन्दु ॥ स ॥ क
हयनाम ॥ मृद्विति ॥ सिते ॥ नृनकयापर्वदुर्वी ॥ यीतेधनकयंक ॥ दु ॥ कर्षव ॥ अक्षयादिधा ॥ कुला मिद्विला नूना नखा
किरुति ॥ सचया ॥ नखानखान विद्वानपाधिर्वसा विना गयत ॥ गायत्री चिन्ननखाया द्विचिन्नासुगार्थकता ॥ स्वामिप्रीत

चउकितावदुचिन्नाकलाकुर ॥ पूमानीलासिगानखा ॥ इदं इदं किनागकत ॥ मकिका मकिका नात याकृष्टसदान ॥ की ॥
आवर्धुवजावर्धु ॥ उद ॥ अक्षरगममाय काकपादीकितास्तु ॥ याविदुलताकाला सोमिलावदुदायदा ॥ यकिने
यान्नतागन्धि ऊ ० नामयदायक ॥ यद्रयगुह्यानीय कनिकासदृशकुर्यत् ॥ उषानीतद्विजानीयात्युल्लभकारिदायक ॥ च
उदविमलनूर्य मीनगन्धायलकिनी ॥ हसधाघायसंतर्प ॥ इदं पिगलामता ॥ इदं कावर्धुदह मी ॥ यंकर्तु विमनां ॥ की
ऊनीदन्त्या ॥ यसाका का ॥ जिलातासीचनिलिनी ॥ मदी वृत्ताचभूषा ॥ ददु ॥ स्यादतिनागदा ॥ कृष्णीतान् ॥ आविन्दु ॥ स ॥ क
हयनाम ॥ मृद्विति ॥ सिते ॥ नृनकयापर्वदुर्वी ॥ यीतेधनकयंक ॥ दु ॥ कर्षव ॥ अक्षयादिधा ॥ कुला मिद्विला नूना नखा
किरुति ॥ सचया ॥ नखानखान विद्वानपाधिर्वसा विना गयत ॥ गायत्री चिन्ननखाया द्विचिन्नासुगार्थकता ॥ स्वामिप्रीत

सकृत्कृत्वा मेधरुषिता ॥ कृत्वा कृत्वा चैव गथावकाशिरुषिता ॥ दृष्टीवत्तनाया च याजितावाचकमिति ॥ वाञ्छलान्वाचः
 जावेव आसीत्कृत्वा मनमयग ॥ यायापलानुलभसा हृदविकिरिकनिका ॥ मधुदातुमूलका वलीककानगपदा ॥ उषनका ॥ थद
 क्रिया विगिह्वा ३४ खदायिनी ॥ काष्ठाविद्यमरुक्तान्वाविद्योदरुगत्तदा ॥ पायदाय्यदगत्तदा ॥ वधकृद्विस्तसविता ॥ इनागयमनका
 म् ॥ मन्दिक्कायथकर्म ॥ दाहृहानिष्ठलक ३३ नेस्वेनागं गथावहृत् ॥ गजा ॥ कृत्यगकाया दपूता धर्मोदत्तदा ॥ सनापक्रिवसा गः
 ॥ उद्विगजनेनीगिता ॥ लवणकदकाया च साकृत् ॥ रुफिका निधी ॥ वज्रदन्त ॥ विदन्त ॥ चनाका ॥ नलरुययदा ॥ रिन्नता ॥ अकृक
 कृकृत्वा दगिनागदा ॥ अन्यकर्मधमाना गौनादेषा हिका निधी ॥ निरुका वदुव ॥ क्षया लघून वाकवलिनी ॥ अंत्यजाता नितारु
 या दिना दीना विगहिता ॥ इत्यतीता च नृकाया ॥ कृत्वा लामो ॥ मनानमा ॥ नानावर्ग ॥ च वाञ्छली ॥ साकृदुत्तना सिनी ॥ लघुदावाचिता

२३

नि २

भक्ता मरुत्तकानसेरुता ॥ उमानाहिगार्थय काममकृधिनानृषी ॥ अन्तजावा कृत्वा नानु वाञ्छलानोहिगार्थिक ॥ सत्यदावा
 मरुताग ॥ विषमिर्वदुदग ॥ वदुदग ॥ विवयानखा ॥ लोचुनानिचमयुला ॥ तऊमी ॥ गानमकुद ॥ तऊमिजननीरवत् ॥ ॥ यथाहि
 मगमानन ॥ लिङ्गार्थनिलादमी ॥ लोचुयित्वायथान्याय ॥ कृदुयक्ता धयदधि ॥ यद्व ॥ अयनयलीर्ग ॥ नयययी ॥ मिषर्ग ॥ पित्रिकासहिर्ग
 गत्र विष्णुगामकमुवरी ॥ लिङ्गार्थमनविली ॥ वरुनारिनलेदगी ॥ एकख ॥ उवकरु ॥ व्यापिठिका वेगिवस्यु ॥ वक्रयी ॥ वदुदले ॥ कार्यम
 कदलकथा ॥ यथालमेदुसोमवा ॥ जलाधनमधलथा ॥ लोचुयित्वा गितामादी ॥ पित्रिकार्थसर्महृत् ॥ अन्यकर्मजदयिभक्ता ॥ पित्रिकालिङ्ग
 वलिक्ता ॥ नउवक्रगिलापाके ॥ निरुक्तमुयराचिरी ॥ निरुक्तमूलावमिषा ॥ अक्रवक्रनिलापरा ॥ लिङ्गदुदगत्तदा ॥ तदधरागगमपि
 वा ॥ निरुक्तसाराहिरागन ॥ वरुथ ॥ गानवारुवत् ॥ उचुयननुलिङ्गाना मकख ॥ अविधीयते ॥ रुक्मापुस्यलिङ्गस्य ॥ निंसा लादुष्टिता धिः

महं१

का॥ अथ सामयित्तिमानां कामानेकांशुलाधिका॥ यद्वाक्यं यिर्नैव द्रष्टुं गत्यमथ ॥ तत्तु यदर्थं तां गन, दिंगविल्लगाधिका॥ अथर्व
सानसां गन वद्वत्सधिकविल्लगा॥ स्वमानविल्लगाधन वाइत्यनसमन्विता॥ अयिमानाधिकाकार्या नमानं जासयद्वधवाक्यविल्लगि
लावाक्य, लिंगत्यापिल्लिकागथा॥ चतुर्नर्गो गिलाकत्वा, चन्दनन विल्लगा च॥ अथ यत्तु वद्वत्सयाइ ॥ नां गेउं ममु विल्लम ॥ पूजयच्च निर्वः
सां गे, तर्पयच्च यत्तु गगापसान् निवृत्तकां ध, तर्पयित्वा नयउथं॥ तर्पयत्तु महिषां ध, न्याजयित्वा च दधिक ॥ नथ वत्ता च दवर्ग, पु
जयित्वा तमानयत्तु॥ अन्निदिनेदिने कार्या यावत्त्याक्य गृहं वत्ता यदा नथ नर्थं गनी, यमदा स्वलितं वत्त॥ निवाग्निं नयित्वा तु तर्पय
यत्तु वद्वत्तु पिनी॥ गेनमध्वाक्य नैवत्ता मयत्तु सर्वद्वत्तु ॥ निर्वध्वात्ता यत्तु दद्वत्तु मर्धं लिंगममद्वित्यत्ता नथ मार्ग गतीकत्वा, गेनं स्वयन
मानयत्तु॥ समीपयत्तु मानलु, यत्तु दद्वत्तु सर्वयत्ता॥ गेतां धज पटाकाइ ॥ श्रीरामे नैवत्तु गीतके ॥ कांयित्वा द्विजं स्वस्ति, वाचयित्वा तमानयत्तु

一

२१

五

गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥
 न्यदिक् सिंहातडा गृहीता विधिना नित्या ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥
 तर्पयदकुजं महापाशुपतं यत् ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥
 शास्त्रं कृतं तननिवामूर्त्तं ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥
 रगवान् यन्मन्त्रं मेनश्च ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥
 षष्ठ्ययथाविधि ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥
 क्वचिन्मन्त्रं ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥ गायत्र्यादशाहं नैषां कर्म कथा निवेदयत् ॥

वि २

८२

[illegible]

दुलादिग ॥ चलसिंभानां च कर्माणां च कानां च विमल ॥ घाण्णोऽचवदायुर्गन्तव्यद्वयं तद्वर्णितं तत्त्वादिनां च कानां च विमल ॥
 लाययता ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ त्रिपुरेण कथाया ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥
 ४ कमानां लिंगद्वयं च कानां च विमल ॥ नर ४ समा ॥ गह्वरेणाधर्मसिद्धं च कानां च विमल ॥ त्रिपुरेण कथाया ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥
 दयं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥
 चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥
 चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥
 चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥
 चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥ चतुर्दिशं च कानां च विमल ॥

तथा त्रिकुटुम्बमयाता दधाना संतुल्य न ॥ तदेकैकयुगं दत्त्वा न केकांशं समाह्वयता ह्यनया मुकुमात्सुते दधाना पीयन द्वि
धा ॥ क्वचिच्छुषे वलन लोचयित्वा सिंहागनी धातुगम संतुल्य रुद्ध रुद्धं वदितं घातु ॥ तन्मध्यस्थं सन्तुल्य नडा तवति वदु
लक्षणार्धमाये ४ संदृश्य वनिग्निनगरा निरि ॥ क्रियद्वा मुन्यदा घट्टे रुद्धादिका रुतं कमाग धातुवन्मादिरियोष्टि तनयक
गुलेष्वात्मान ॥ धातुगमं क्रियन्नाथ वदां सममना द्विते ॥ दयं दयं च वस्त्रं ॥ माद्यं सर्वं समनये ॥ लिङ्गतामिगे यैः ४ पाक माया म
ममना द्विते ॥ स्वर्णमाजिन रागा मय मन्त्रात्कनक रुत ॥ तव यूवर्द्धमानो नि वस्त्र द्वि रूता निच ॥ अथाद्यादि लिङ्गनां कया
दाघवियक य ॥ विश्वक मायते दृष्टु वकवीपी ० वरुनी ॥ मध्याम ॥ अर्द्ध दणच रागण्य समन्विते ॥ तच्च सर्वं समं लिङ्गं पार्श्व
दवशुद्धिते ॥ नदी सर्वं समं कार्यं सर्वं काम रुत यद ॥ दोषा दोषा न्ययर्क चतुर्धनं धिता मरु ॥ तद्दृष्टं नाशियर्कं विष्णु

[illegible]

जयंरुवनाधनी सर्वकामपदार्थक विनाशं विनाशकिये ॥ विनाशं दहीमं विनाशक वेदोपागनात् ॥ वलरुत्तपदं तच्च चयुर्द
 जयंरुवत् ॥ ॥ तयर्षकं चन्द्रं ककवाकृत्तुं कमात् ॥ कयादिपादिकार्थं अकं वाकृत्तुं कमात् ॥ कियपादिषु सीसिदी
 नास्ति यादातयत्तुगदीययिक्तु मथर्षदो ॥ ककवाकृत्तुं ४ पजे ॥ ॥ ॥ निर्मनाहविकानां कृत्वाकृत्तुं वयत्तु ॥ जिनविग
 तिगर्षदं नायवकादिवदने ॥ नखान्धिविकानां जेनकाद्यवतथरवत् ॥ विकानां सप्रवर्णां रतीयां गयत्तु नच ॥ रंगस्याद
 विलागनयका कनसुनाजिते ॥ रागरतीयागन नखवडा निगनच ॥ मसं रतीयागन वायव्यां गयत्तु नच ॥ ससफदः
 गारिधो ॥ ४ पविधि ॥ त्यासमाकृत्तुं ॥ चयुर्दं विनाशक कृत्वा सफा कृत्तुं ॥ साद्विदि विनाशक विषु ॥ साधु कृत्तुं ॥ ४ पजे ॥ ॥
 मद्रुतिगमहा राग ४ पजे ॥ गलारु नवच ॥ यवग रतीवत्तु ॥ ४ पजे ॥ ॥ सवाधिव रतीवत्तु ॥ ४ पजे ॥ ॥ सवाधिव रतीवत्तु ॥ ४ पजे ॥ ॥

२२

४२ २२
 ककोरुयं न्योरे लूलमूलत्तु नागता ॥ गलारु विकलं मुद्रिपजां हनिसकृत्तुं ॥ निमचल श्रिगं कृत्तुं नधन्यविनाशनी ॥ कर्तुं
 चमुद्रिनिमं गदन्नातक कृत्तुं ॥ विडानिगं तथराया ललाट निमकं सरी ॥ मुद्रिपुलं चक कृत्तुं वरुं वेवार्थ निमिदताम ॥
 कृगं ॥ गकाय इहिकुदमध ४ पजे ॥ ॥ हीन ॥ विपिता ॥ चरुययी जचजायता ॥ तलिमामयव द्विध ॥ इहिकुवा निकाटन ॥ ॥
 न्यादीद्यक ॥ गनाव ॥ कसंवा विषु कयति ॥ धनघ्नयुष्ट निर्मस्या डार्गया ॥ धन ॥ ॥ सुनिषानीयदा सिद्ध ॥ यस्या ॥ गनादिरिच
 ४ ॥ सम्यक् निवृत्तिं धेनं ॥ गदाचिकानिल कयत्तु ॥ ससिकाडा कृत्तुं ॥ चका सिधुज के सव ॥ मकानादगं चाया मिमकम
 शुलतान ॥ ४ ॥ मस्या कृमाद्रिग निन्द ॥ कयसिंहा कसुचका ॥ गीवसेन नदिकावरुं नध ॥ हाने र हय ॥ ॥ नरु कृत्तुं ॥ जय सिद्धि
 गाना ॥ लचामला ॥ मयून वाजिवासा ॥ हि रुनवज यविशका ॥ ॥ सासादक नवकृत्तुं ॥ रंगाकसाच नखिका ॥ ॥ लिमो गयत्तु ॥

संयगरागतशचनस्यवृत्तं स्यात्तागवदान्वांशुली ॥ देवार्द्धि न विरागन वदार्धमनिरागतशकं यागुयकंदीर्घं च लम
 चादृष्टं ॥ कथासर्वसर्वमेलिं गे सु लंदं मिरीयार्क गदगमुदनी वलवृद्धिकर्तुं निर्व ॥ नाहार्द्धि न उरागन विष्कं य विरा
 गडी ॥ चतुनयसकं शर्म शूलं नो दं मुकिदी ॥ नसरा गवर्तनी हायकी गोधे रुनर्क ॥ अथासार्द्धि वदार्धम वाद्री सग्नययम
 गन ॥ नाहार्द्धि न गरागन विष्कं मुदुयरागनश चतुनयसकं स्या द्देवार्द्धि व वृत्तं ॥ मृदुदय विरागार्द्धि स्या गमर्द्धि
 निवारवतानडा रिहानिग ॥ किं हृदं अदिगु मिहानिनी ॥ रिहिरु ते न सि ॥ गोला दोलन द्वा निर्लं निव ॥ शकृदा ॥ ३३
 वायं रुगोभमिदिय न गदा ॥ गदा ॥ रि विना गमत्वां कुनर्ग शूलसंस्कृती ॥ दका लु मज विष्का ॥ स्थं वेखामनन पि ॥
 ॥ उ संदीर्घं गो सु लं वरुं ख ॥ च वामनी ॥ सु टिर्ग र्द्ध व ल्वरं ॥ स्थापयदा रिचा निव ॥ नवमय क सि नि नि की रि

गोशुलाशुली ॥ वाक लिभानि चानि नाना नूया विव श्रुग ॥ ॥ नित्यमिष्टा गे ल क वसमवय ॥ शक लिं ग वरुना विधि श्रु
 थ ॥ ॥ यकाच्चालि कर्णसम्य गदादीनी पवक्षते ॥ पूर्व हिल यमाने न द गपवा कुली ॥ गृह रूप तिमा पूरना धिका रि प्रग
 म्भत ॥ कि विद्व स्य मा यसा ॥ क्व चिच्च रिं ग द कुला ॥ अधिकां स्थापय द्वा मि द्वा नरु रूप मा नि को द्वा ना कुर्य विरागदा वरु धे कं वि धा
 यच ॥ यूनर्ली धा विरु श्वा थ रागने कन पि लि का ॥ वि धा गवा दिरा गन कन्य सीप तिमा वसा ॥ द्वा दर्थी न व धा कला ॥ य के कां धं रि धा
 पनी ॥ मधमासा दिरा गन कार्य कां ण न पी ठिका ॥ द्वा न नार्द्धि नि धा कला रागने कन पि लि का ॥ क र्द्धा ग दिरा गन य तिमा सा रु
 मामता ॥ कन मान कर्न द ॥ ४ स्या द्दे क कथा रु ना रु नी न वानं डि रि का न्ध कन्य सा या ॥ ४ य की रि गा ॥ ग र्द्ध क लु रि रागन य तिमा
 ति के ग म कुर्य ॥ पी ० द्वा न य विस्तरं मय श्रु क मग ॥ वा श्रु य तिमा कथा मरुगी कन मान ग ॥ ति धि मा स न व र्द्धे री नं धं

का१

वरुणाय

हमाक्षि ध्या॥ सातं भैना सुधा रूपा वगलाः कूलवामनाः ॥ यदु नूपा ध्रुवा ॥ ७४ ॥ सफ भद्रा ध्रुवः ॥ ॥ निदोषाः कायसं
यकांच उग्रमायतां गिलां । विरुद्धा किं सुगुण मद्रा दिव्यं गुरुदिने ॥ संपूजा दीर्घनीकानं कृत्वा स्वस्वयनादिकीर्त्या भक्त्या यज्जी
वांश्च यथादींश्च यकल्पयत् ॥ विरुद्धा द्विगुणं कुरुं यंच धरु विरुद्धच । कृत्वा चाध्यागत ४पीठं लिता गडी वकल्पना ॥ रूपां गानय
रां चेत्युक्त विद्याधनादिकं । साम्ना यथासं इतींच यतिमां वरुये कृत ॥ सुगलिसफ र्तिगत्सु क्रियं क्ति गतं तथा । हागेक मद्रु
लं कृत्वा महीदां वरुये द्रुध ॥ देव्यं च नव धा कृत्वा रणे कीर्त्यं समिगे । उकला गद्रुलं गत्वा । केना भयं विकल्पयत् ॥ मोति रत्ना टनासा
गु नाति भयं यि क्ति धीम । ध्रुवः सर्मन्यस्य गद्रुवः क्ति यत् ॥ पादा रुद्रा सत्ता ठा न्क मद्रु रुद्रा गत्वा रुलं । जीव ४ स्यादी घमा भनः
पत्यु न्ना न्यधना पुव । तातं न मद्रुटा काय । रुद्रि ला नाद ग्मा रुलं ॥ मागारि क्ति यि संख्याति मद्रुटं वं रुनी र वत् । तासे क मद्रु विरुद्धा न

श्री ३

35

लक्ष्मि २

सङ्

可

उक्त्या ललकद्वय ॥ तालमानेन वदकी शीवाचचनकुला ॥ कृष्णपादध ध्रुव नारिगुप्तसंभक्तम् ॥ तालेकेकपमादीत्याद
रुक्मिणीनिर्गमो ॥ द्विकनजाननीतस्या उधवेव दितालक ॥ क्रूरयोरुद्धिनरीचपात्रीद्विदुलककमागावृत्तचयकुलाकायः
पादोसफाकुलायगो ॥ मधुकलादयोकाया वसोर्गद्विदमागको ॥ गद्विद्वानोद्धिनरीचयकुलद्वयो ॥ पञ्चकुलाव
यननसाद्विद्विपवर्णीपदसि नीवदर्थेन साचयंशलकामता ॥ शकुलायनिष्ठाहन कथंनलधनायना ॥ अन्याद
यविकानां गहोनावयनवावृत्ति ॥ पादाकुलादिपवर्णीपदवर्द्धिनखलभरिता ॥ पादायुषनखोनिम्ना वरुकायाय
वान्नगो ॥ नखीयितलकीनकी नखासर्वान्नगयुष्म ॥ वक्रादितालविकारं वाद्मूलंषडकुली ॥ उपवाद्दुदध्यांभेधा
नींउत्तुलकोत्तुनी ॥ सफाकुलंकलायाम ॥ पञ्चकुलपविकृत ॥ तन्माकुलावन्मध्याद्विद्वानाचलनामिको ॥ तन्मागर्जः

नृवर्कयवमण्डु द्वियवर्कमभुली ॥ नारिषुदक्षिणवर्क निमगाद्वाहुलादिगा विष्णुपद्ममुलविद्या नारायणध्वजकलादीनी ।
 दृष्टिगार्थमुल्लेखी नारिषुदक्षिणवर्क निमगाद्वाहुलादिगा विष्णुपद्ममुलविद्या नारायणध्वजकलादीनी ।
 ॥ वरुननगरानारिषुदक्षिणवर्क निमगाद्वाहुली ॥ कटि ४ सर्ववर्कननाका शगाचक्षुषिकाहुला ॥ हिचोरीनामसुवर्कच लमोचद्विकलादीनी ।
 गो ॥ चतुर्भुजविष्णुगो मऊक शायमोष्ठो ॥ वृषलोदाहुलायामो रत्नध्वजमहजकिमि ॥ मरुजसुहुलादिद्या लनिषाहोषगुहु
 लशतकोषार्थद्विजर्चयविष्णुनकीकिती ॥ यारोष्ववृषास्यान विष्णुपद्मदिगलकी ॥ उल्लेख मूलचतुर्भुजध्वजानद्वारा
 ॥ गदधंयिषिकाया ॥ ऊर्ध्वार्याय विष्णुपद्मशतकोषीयनगालायावर्तवाहुलकिमि ॥ जर्वीविष्णुनचतुर्भुजवर्कनकिगुलध्वि
 की ॥ यवगर्हकालिभ कलाहुल्यकतथा ॥ कुऊर्ध्वार्याय कर्वव सुविष्णुनादि वरुन ॥ नरदूर्कचसामानी क्रियायां सध्वः

३१

कान्द २

लक्ष्मी ॥ नार्यवर्चसो गन्तवी चरु ४ ध्वजो रुना धिका ॥ गच्छि सुगन्धामा शुभकूर्मो नरकर्म ॥ गन्धध्वजकलादीनी ॥ नर्यवर्चसो गन्तवी चरु ४ ध्वजो रुना धिका ॥ गच्छि सुगन्धामा शुभकूर्मो नरकर्म ॥ गन्धध्वजकलादीनी ॥
 गच्छि सुगन्धामा शुभकूर्मो नरकर्म ॥ गन्धध्वजकलादीनी ॥ नर्यवर्चसो गन्तवी चरु ४ ध्वजो रुना धिका ॥ गच्छि सुगन्धामा शुभकूर्मो नरकर्म ॥ गन्धध्वजकलादीनी ॥
 ॥ मरुटाद्विष्णुकेकी यक्षिपन्नध्वजिकी वक्ताः
 वाङ्मनूयार्या कनादीनां कर्मदाया ॥ गालकादण रि ४ कर्मा हुगवगालनकसी ॥ द्विचवेवाहुलदयवका दिष्यथकर्म ॥ किः
 कना ४ हुलनूपाध्व सफगालाद्वयामगा ॥ वामन ४ यचगालीच रगाणि ४ पदु कडकी ॥ कृष्णाहुकेध्वजकाली नन्मा म नयकल्प
 यतावदाव द्वाउयत्नन सूत्रदृष्टा ॥ विलक्षणा ॥ पाषाणरुनदी कर्मा सवर्गसिन्नवनूपक ॥ मर्वगमानग ४ कर्मा सवर्गवियवद
 धिगा ॥ सर्वध्वजिकी वीधन्या नदीनानाधिकोशिका ॥ स्नानकेष्ववर्णका सगिमे हुलपदा ॥ विक्षिफा ॥ धमखीरुवाही

मा १

36

॥५॥

॥ वरुणाजटिनाम्ना ॥ कान्तिनालासमपरा ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥ चतुर्भुजाः ॥ नविन्दस्वः ॥ निवः ॥
 चन्द्रनिर्मलः ॥ दीपिवन्मोहिरुक्ताङ्गुली ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥
 गीर्वाणसिद्धिदायकः ॥ सनवाङ्गुली ॥ दिग्भङ्गुली ॥ यवयोवनवृद्धकीर्त्तिलारथीचवक्ररुगासंयकः ॥
 दण्डकृष्णवनदगूलरुगादकिं ॥ रायमन्त्रकः ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥
 रागभराः ॥ सन्देशकः ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥
 कृष्णायाम् ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥
 वीगवान् ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥ कयालयरुक्मायवामाशानवकयः ॥

दिनशासर्वेवायु रुद्राऽसौम्या धनुनाभ्यंजटाविताऽनिवायधधनाशुक्राऽशून्यसिर्थाविनाकविता॥ दिग्बुजटिलाशुक्राऽशून्य
 उडूलभ्रिगऽपटाऽनिकनाऽसर्वविद्यभ्रिगऽकवक्रकाऽ॥ ॥ सितधनुर्जुजुक्राऽकंउत्कारुसभ्रिगऽवलोरयकपाला
 उजटनुजिननागरुत॥ कायऽसिमभ्रिगऽक धनुनाभ्यायवाकऽकऽदकिऽगशूलनिर्मिगऽकभनारयभ्रिगऽकऽघृष्टकपाला
 द्वाभ्रियासदहृष्टुवामकऽमृगुमालीगवानूराद्वेताद्वेताकुमान्तऽसामभ्रिगऽ॥ ॥ पीनाभ्रं योवनाहिनंदगवाहृडिनाचर्नऽ॥
 सोम्यऽपुरुसितास्यं च चन्द्रमोर्लिं ऊटाधनं॥ वायुचर्मऽशुकंभ्रिगऽबालयक्रायवीजिनीनागदभ्रिगऽलयकऽसद्वरिनगदधिनी॥ उ
 क्रमदमहादीपऽवेगभ्रिगऽकनगकिरी॥ नृशकवंमहाद्वयऽमायऽभ्रिगऽलपानिर्न॥ दधुसिगऽकिशूलानि विगर्नदकिऽगकभ्रिगऽवल
 कामकवाहृभ्रिगऽकत्वाहृदिऽकिरी॥ कपालचैवरवद्वभ्रं रवटर्कनागनायकऽवामभ्रिगऽनिगुरुऽसम्यक्त्वाभ्रिगऽभ्रिनी॥ कपालः

मालिनीदिवा रूपसत्रीसुखतिदीप्तवर्णमृत्कनकादिधर्वसोमनूपर्क॥ वृषस्त्रितं हनैक्यादिवासनसमावृतीसुन्दनदि
महाकालगणगणेशसैयरी॥ वृषाश्रयप्रभारिष्वृत्तविद्याधनादिशिखसानन्देनूपसम्पन्ने श्रीकृमानेर्महेश्वरी॥ दिवाच
नयनीधनेऽसत्वरिनदरुघिरुशतदण्डवपुर्नृप्यध्वरुमीकार्यकंशमरुगं॥ यनः४पांश्चक्षुताम्रचदीफाग्नसोमनूपर्क
विकरागीकृतासाचत्रोनाम्नादिप्रदाः४कृमान्॥ यथक्त्वात्तद्वृषमादिमक्षानुसंस्मृती॥ रुनस्यवैरुवदञ्चस्त्रान्तकानंरु
त्पदा॥ नाद्येग॥ ॥ वरुनरुचयंताम्रपिङ्गुभृशमूर्द्ध्वा॥ रुक्मीलीषर्गकषूँलसिद्धान्तद्विदी॥ मृण्मालाकल
दिवाकपालारुनक्षत्रकली॥ नागसपवीतिनंदीर्कनागसरुनदरुघिरु॥ वीरासनंगवत्कञ्जगजचमालनीयर्क॥ वरुद्वेगक
नेकाम्यसोम्यथायाकिनाम्यरी॥ गुलासिगकिवाधायगमनिकंदकिंलकन॥ खट्वाङ्गखट्वाङ्गयागंवायारुयकपालर्क॥ वि

जगद्वामहन्तद्वयाद्यगजचर्मरु ॥ मारुहतावितीक्याहेनवर्णभक्तिकानक ॥ वलुसेनव ॥ ॥ नतसर्वसमायुक्त कलि
 गमिभनाधिक ॥ कथादिधानय (वर्ण) द्विनवकुजमभित ॥ अयानय (वर्ण) सेनव ॥ ॥ उद्वलितरिक्तिनकुर्दपागुपपुष्टव
 कुर्क ॥ अष्टादशकुर्क्याद्विनदारयवडित ॥ यालिद्वयकचूलसमिन्वान्धकदानवी ॥ यन्धदमेनूर्कवेव कथा नमस्तुत ॥
 ॥ भानयनैरु नदंष्ट्रे नवर्तधकानक ॥ सर्वगुरुनैनिर्णय मारु रिषविवाविनी ॥ अन्धकान्नकरेनव ॥ ॥ षड्गुर्जुति
 लंघितेतिनैरु रुषित ॥ यायाजिनैरुकीसोम्यनागयक्यापवीतिनी ॥ रिगूल अकसू ॥ कपालं कलिकाकमातायाभिसोभा
 वतिशर्वा दार्यायास्थानककथा ॥ यन्नासनकिर्तक्याद्विधनाथेनैरुपुर्द ॥ गोर्नसिताम्वर्णभर्त कमलुलुसमन्विनी ॥ धनननि
 सुवनेरु दाननायन ॥ नकीयमगागमदरु ॥ कथालिन्वाध्वया ॥ सदा ॥ ॥ सदागिर्वनदाकालं कलिकायविवडि

वेधनाथ ॥ १

४०

मृ लैरुय ॥ ८

गीर्णवन्दसनासीनी ॥ नगनाडी वमध्वर्ग ॥ दनाष्टकचविद्यणे नवकायेष्टदिशुवा विदिशुचेक नूडायैरु था (ने) योदि
 रिनेलो ॥ दिचसिदासनासीनीवक्रायेपनिवाविनी ॥ सदागिव ॥ ॥ रिनेरुषड्गुर्जुभर्त उदारव (वर्ण) मभित ॥ कपालमा
 लिनी ॥ यगासनं कजुक्तिनी ॥ बाधचमोचनं नूड नाग (वर्ण) नसिरुषित ॥ रिगूलचाकसू ॥ विशावद कि (वर्ण) कन ॥ कपालं
 कलिकासवथागमडाक नद्वय ॥ कथान्मय ॥ यदव मयनागविनागनी ॥ ॥ उद्वलितरिक्तिनकुर्दपागुपपुष्टव
 रुनशावांगललनार्कना ॥ याषिदारुनभन्विनी ॥ दकि (वर्ण) नय ॥ कजुठानाग नुसयन ॥ रिगूल कपालं च वामजायम
 थात्यनी ॥ अद्विनानीध्वन ॥ ॥ अद्वचन्दसनाडका उदारव (वर्ण) मभित ॥ कलुलदुन ॥ सोभा ॥ द्विनुडादीपिचर्मरुत ॥
 वामानु ॥ स्वयं नूयमा वामपाणिनिगूठक ॥ मिथ ॥ सचीकुमावस्था ॥ याम्यरुहकि भात्यल ॥ दवीयाम्य कनासिद ॥ स्त (वर्ण) क

मा ३
 रु १

जा २

सादिनखकूर्चदिक्कात्वाकूर्ममिवरुय ॥ कूर्म ४ ॥ ॥ कदाच भृङ्गुलायामोवदनं गमलकावर्कं रुन्गद्वकृता गच दे
यात्संफाडुलास्यं विष्कान्ममैकानासिकाविली ॥ दक्षुचगुलवकु सितषिकलिकायम कर्त्तु क्रियोदिनरुच तन्म ॥
षाउभभुल ॥ पाश्चानाशवहीनमु वकुभनूलाचनै ॥ अष्टादिकठययनं नननूपं चदुर्ज ॥ गदाचकाडुर्वाद्यामा लीड
कैलास्तिनी ॥ जीवांगैकूर्यनकाउ मा इव कोचनधनज्जो ॥ जववनाहनूपीया धनमाला विरुषिनी ॥ वनाह ४ ॥ ॥ पूर्वनूप
यनी ॥ धनमूत्रकभंसकसनी नमगी सिंदुवकुच वरुाकैरुवटी कूर्व ॥ विरुलाया दिरेयुश्च वामानक गदानवी गद्वकादा
नयनश्च रुन्गवगदाधनी ॥ ॥ सनमिवलाकांडी नृत्तारुदीय ऊं नै सी वनमाला चिनी कूर्या न्ननसिंदुज गत्पुड ॥ ननसिंदु
पाश्चानवा मनी कूर्या द्विउडं कुरु धानिनी ॥ जटिलं कुरु कायकै गो रं धमामान्दकृदी ॥ वामन ४ ॥ ॥ चतुर्जुगदाया

42

व५

ॐ विक्रम ॥१

[illegible]

द्विऊ० ज्ञोत्रा २

वरुह उवनेकमात॥ वामदक्षिणया ४यांश्च तथा गेनीमहासिका॥ सेवनकावने सिद्धाग्निदीनाललितान्यथा॥ स्कंध
 सूरक नावम दितीयश्च तदर्थं वहायाम्यरुला ३३ नीरुला सोराय्यतमं दिक्का॥ अर्द्धवन्द्यसनाडुका रुनायाघद्वयः
 उजा॥ गिनजजटिलासोम्या जानारनगरुषिता॥ गर्भश्चसूर्यपद्मश्च विजयदक्षिणकम्प॥ अर्यकलिकाधूलिहि
 रीवामकत्रसदा॥ याम्यांघ्रिर्षिपृष्ठस्काच उर्वर्द्धिचिन्मन॥ विनोवनारयायांशु करुणासर्वमङ्गला॥ दिगुजकेट तीका
 याग्नेनवधुसिन्धुविवा॥ गयानूटापसफाच योगनिडीसमाधिगा॥ उमामूर्तिः॥ ॥ एकवर्णीजवाक श्लेषाननग्नस्व
 त्र किगा॥ वामस्तककलिकाकलुषे रीलायकगनीनिवी॥ वामपादं च सन्धोरु रुगखड्गकरुषणावर्द्धन्यर्द्धधुजाकृष्णकालना
 शिर्यकनी॥ कालनागी॥ ॥ वरुलास्याविलाडीचै मश्वरामासुर्योवना॥ रुमवधुडिसंकाच पीनान्नगपयाधनावान्

॥४॥

४३

सर्वमसंयुक्तं सवर्णिनवमलिना सदायामकनाश्रुजा वामशी ४थीरुलानिगा॥ वालग्रजजघनि (श्लेषे) कार्यनन्याध्वर्या ४ छि
 यो ४ गजोर्द्ध्वमनरुलोच ज्ञापयते च पाश्वर्गश्चामहाधी॥ ॥ श्वताडुकास्वनूपाच श्वतारनगरुषिता॥ पलाकमालिका
 रुलावीधरुदासनस्रगी॥ सनस्रगी॥ ॥ श्वतामकनसंकाच उर्द्धकायासूतारुना क्रुन्दीवनसकाच दानकाडिद्रूप
 पैरिका॥ गभा॥ ॥ क्रुमानूटाडुरुलाच दानकाकनंशानिगा॥ ॥ न्दीवनदलश्चमा स्वनूपायमना नथा॥ यमना॥ ॥
 सिनेसोम्यवृषावृट उटा रुन्दलिदृग्धर्ग द्विपिचमधनकर्या दीधरुलुं रुम्भनं॥ मारुधमादिगानिर्य गूलरुक्रमधपिः
 वा॥ रुम्भन॥ ॥ अननरुनरुमारुध्व वक्राध्वानुसफच॥ ॥ गेनीचरुमेखीपीना मरुमालासुवानिती॥ वक्राक
 पाशिनीवाम वक्रावीरुससंकिनी॥ वक्रावी॥ ॥ विजयगूलरुलाच उटाच उर्द्धमलिनी कपालमालिनींशुक्रान्

३३

डागीं विसरुहितां ॥ मारुष्टनी ॥ ॥ नर्कं किं धर्मं देवीं न कर्मालीं वलं चितां ॥ निखिद्युः समानुर्ता कोमानी सुन्दर
 पिणी ॥ कोमानी ॥ ॥ चक्रवर्त्तु गदायुध चतुर्दला चतुर्गुण ॥ अमो नृपिणी कुर्याद्विष्णुवी वनमालिनी ॥ वेष्णुवी ॥
 ॥ कर्पूरीनादनी कुनां शुकनस्यां नकायिकां सुवर्णयो वनादिनां नाथारुनगरुषितां ॥ वीनादीं महिषकां तु मदि
 नादलुधानिनी ॥ लक्ष्मणकसंयुक्ता मधवापि चतुर्गुण ॥ वावाही ॥ ॥ सरुजाका मजानुर्ता रुमार्ता वज्रधनिनी ॥
 डागीं सद्यसिद्यार्थं वरुणका न संयुतां ॥ लुडागी ॥ ॥ गलकिं की वद हानु कामरु किमु यद्वनी ॥ विवताया लुदक्ष
 मं जववाको निकहितां ॥ निलिहानी सुवकादीं दल लक्ष्मि मलितां ॥ दीपिचमविनां कुद्वी चामुर्ता मालिनी ॥ वा
 मृष्टा ॥ ॥ जटिलविलुलेशु को चतुर्विच विरुतां कपालकरुनी यामि पाणं गूलच वामक ॥ कपालकरुनी य
 म ॥ २

४०

कां द्विष्टां चापि पिङ्गलां मारुक्ता न धवे कां चारुद नंगा वृष्टनी ॥ मारु नृपोति ॥ ॥ कपालकरुनी गूल पाण
 रुद्राम्भरा मया ॥ गजवर्म रुद्रकाया षष्ठा ॥ स्यादुच चिका ॥ सेवाचा रुद्रादवी निना उम नृकान्चिता ॥ ननसा नृदवा
 मृष्टा नाथे श्रया धन्यनी ॥ ॥ यमवमरालक्ष्मी नृपविष्टा चतुर्मुखी नवादि महिषरां धखादनी चक्र नहितां ॥ नव
 मृष्टकना न्यरुण षडासु च पूर्ववत् ॥ नकास्यां वनवधुच वृतात नगरुषिता पूर्व नृपकसंयुक्ता नृथनी नाति नोदि
 कादगवाइ सिनर्गच गलसिंठमं नृक ॥ विरुनी दकिं हारुल वामघं च खटक ॥ खद्वाम श्रुतिगूलच सिद्धचाम
 लिकादया ॥ सिद्धया वृष्टनी दवी सर्वसिद्धिदायिका ॥ नरदूपा रुद्रदन्ता पाणं रुद्रायता नृग ॥ रुद्राखाप विष्टा रु
 रुद्रादगारुषिता ॥ वतालक्ष्मिनी गृध्र का कलूक गिवाकला ॥ नता ॥ सर्वां भग्न नका मरुमीस पराजना ॥ आया

एकमिदं विद्यां (गणपतदशुविहारा ॥ वाम ॥ अमूर्ति ॥ ॥ कामाग्निवाहनादुद्धा द्विजुजा विवृता नना दहनाक्रम
 कारीत्याहमोजानकनकिता ॥ यद्विधुयदीर्घा ॥ ॥ किं अथ वद वय ॥ नमो दद्यामहादया नृपि ॥ यन्नमसः सदा ॥
 नासादुद्धा विहारा ॥ ॥ पणमकाया गयदवानाया गयवनाथवीनाथ अद्विचन्द्रासनकिता ॥ सयाहुलिरुहाहुर्वाम
 मादुष्टिगाहुली ॥ वद्धा विन्यासदयः ॥ यथा काननकनदयी ॥ ॥ ध्वनस्तुका दिवा इधु जटीटकाक्रमालिक ॥ यत्र बुद
 बुध्नीचकाया अलुधुनामहान ॥ कविच ॥ ॥ गगनाप्यनवाकाना गजक ॥ गजानन ॥ महोदयो वरु
 दह नकदकसिलावन ॥ यनकाया वरुक् ॥ ॥ गगनधौर्जनानके ॥ दिव्याम्बुनधन ॥ कथी नागय क्कोयवीगवा
 ना ॥ चन्द्रदेवमहर्लंगस्य विहारा नमननीशुही धाउगमहुलर्कदेवो कूँडपडिं गदहुली ॥ अर्काहुली पृथ्वीवा अहु

४८

लावाकुर्यगुपीनसमूहगानस्य ॥ कर्तव्यागवनायक ॥ सगरुहिरुलाकाया नारिचिह्ननगावधे ॥ कष्टगुर्धन
 कार्य समदा रिं गदहुली ॥ उन्नीधचकर्तव्य पादोचदादगमहुलो मरुर्क निविर्गवर्क वागवर्क समूहनी ॥ कष्टगुर्धन
 विहारा वाइत्येनाहुलोमनी ॥ नध्वनस्तु लोकं रोगम ॥ अमूर्तिमानन ॥ ॥ दह का लववर्कस्य ॥ अमूर्तिमानन ॥ ॥
 ॥ यकेकजासया गन यावददाहुलकिता ॥ किं देसाद्विहारीपूक नमसमूर्ति ॥ पश्चरं लपदेयचिचवर्क विवधनी ॥
 गालगालचमराकं किन्नाकोत्थनवरुयन ॥ सुदभंद कि ॥ यया ॥ वामदहचलपुर्क ॥ पनगुदेकि ॥ गदशा इत्यलीच
 रथेगव ॥ नगमानसमायक ॥ सर्वलाक दिगावरु ॥ गगललक्ष्मीयाकं चतुर्लक्ष्मीनान्यथा ॥ गगल ॥ ॥ नागया
 ध्वनवाम दकि ॥ गसाक्रमालिक ॥ उजायामधिककथा ॥ स्वर्गपूववर्क ॥ नरियर्क दिहलाद्या दकि ॥ लोकपसा निगं वाम

वालयदरुर्लुगुर्वावुउजानिर्ग॥वेभरवकनलोयर्क नानारनवमलिगीयद्याधकाकुरुथामहाकधनूयवान्
 ॥सिगयभायविष्टु पूरुनूपचउडुडा।षडुजंघाववाइधपदरुसाथवाकल॥गलगांलिधनूर्य विघ्नघ्नसर्वसिद्धिदा
 आर्य सिगीठरुगीर्ष विविधं सुनमलिन ॥रुनम्ब॥ ॥यरुनेनगनकार्येणवाधगजानन॥रुडेददिगारिर्गक॥
 रुदामूरुयंनूपग॥गकीष्यागनिर्दिष्ट गरुदाकुरुनीयग॥भन्नाचदकि।रुदरु षड्विधमिकनगथा॥निखिपुक्क
 धनूषवट पताकारयकुरुठ॥गोद॥रुगु॥धवाषडो नकवकु॥पगस्यग॥विउक्कसिक्का निदरुय॥धचवटकी
 यधकमीसदाषडि दकि।रुनयागिरि॥अमवायादि वने।ध द्विउज।धकवकु को।विउक्क किंकनयाभ रासव
 दग।थरु॥॥नका।भानकवकुध वालनूयाध मांसल॥निख्यानूरुधु॥धयिं सवर्लिकालरुषिग॥रुन्द॥ ॥पि

४२

भलाखमगाइर्क लिभेदर्थगदात्मकी।गिलाहमाहिलारुवा वरुकर्यायिथपिती॥नवेवर्धकनाद्यायां पुनामयमगादिह
 साधन।वषलिभष पलावादिहिगावष॥कमनेदवतगपि किरापाकाधयानिनि।लिंगर्ग।भषिरांकार्य रुदिनाय
 निविगुरु॥यो ०यु॥समालका दलार्पहिगलाचन॥उरु।मीलितदृगुल्लिंगमरु कमरु क॥पसिद्धमन्यरुदूर्य
 गथयद्वं।उचग।देवाधु नगीयंगम धमरुलिंगनकल्यर्न॥मानानांगमलका।दी नाने।भोसैरुगिगि॥भषन
 पथर्त्तचै।सोसो।वेरुदुदीयर्ग॥नरुनरुसमंदया।रुदद्विभ्रनव।रुगिरु।मरुनारुया।अनिले।चमांसग॥
 नरुद्विके।शुवा॥रुकोरु।दर्थगायां दिभरुकी।नासाहुल्लमादुरु।दिनरुसगिनानुनी।धरुभरुविरुनरुग सुलगायाद्व
 ग॥पुनराप॥भरुगु विरुना।रुदुद्वि।उविवर्धन॥नरुभरु।दिभरुया।रुनरुगु।कपालको।चरुनरु।भयाया।ध वरु

नासा।द्विउल्लस।धिनारु धिर्नरुदगीउल्ल॥२

[illegible][illegible]

कृया भेषादिना निरीक्षिता शक्यमानकामनायकः पीतवर्णः शुक्रेण सिता ॥ कपिलः पीतवर्णः शुक्लः शुक्राक्षः धनलक्ष्मः
 । धूम्रः नीलः ॥ निष्कृया वल्लुनिर्घोषधामकर्म ॥ ॐ तासूयन्ना विष्णुं त्रिन्दुमैकपुमदिनी । पुरुषिणी महाकाली कल्पिः
 काचयवाधनी ॥ नीलाश्वनाद्यानाकृत्वा अष्टगोत्राचः कियः शवन्मदिकमा कृया ॥ गकथाद्वादशे वदु ॥ सदव
 नृपः शुक्तिः शङ्खनायकः विनयसतः ॥ द्वादशमदित्यमूर्तिः ॥ ॥ मारुतः शुद्धवल्कायः शुद्धवल्किर्विष्णुः प्रह्लादकि
 लः गूलधनी च वामरुद्रकपालरुतः ॥ हलटङ्कः सिरुत्तमः हलपाणकपालौ धनयन्त्रितनुरुक्तं द्वायामङ्कोकः
 नाभः केशः ॥ द्विधमामरुतः ॥ ॥ धामसूर्याग्निः शूर्याङ्गुः द्वेद्विद्विगिरियुगः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः
 ॥ जीवेदुर्लभः धनः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः शूरुर्गिरिः

53

५१२

宋

हा २

卷八

३२

[illegible]

लधुमवर्णं नववर्णं नवपिण्डं ॥ दीपकवर्णं धनं कुरु मधवाधिकता ॥ ३३ ॥ नतां दिव्यजान्मर्षी कुरु वनसीयतां नार
 यं मर्षं मयूनं ॥ ३४ ॥ वरुणं शोकं वासतो ॥ ३५ ॥ कटं मयूनं मर्षं मधवाधिकता ॥ ३६ ॥ गुरुमूर्तिः ॥ ३७ ॥ ॥ अनेनानेन कोयः ॥
 नितायकजमोलिकः ॥ ३८ ॥ सिगः सरुयराण ॥ ३९ ॥ दीपकवर्णं वलयाचिगः ॥ ४० ॥ नकां मर्षिकापनः ॥ ४१ ॥ सगजालक कामलानां कुरु ॥ ४२ ॥
 कटिकक ॥ ४३ ॥ नखायान्चिगः ॥ ४४ ॥ नकायन निरुपयः ॥ ४५ ॥ नखायान्चिगः ॥ ४६ ॥ नखायान्चिगः ॥ ४७ ॥ नखायान्चिगः ॥ ४८ ॥
 मारुणं वपां लंथा ॥ ४९ ॥ निगः नखायान्चिगः ॥ ५० ॥ कलिकानकदुरु ॥ ५१ ॥ चन्द्रादिकृतमलकः ॥ ५२ ॥ नखायान्चिगः ॥ ५३ ॥
 ता ॥ ५४ ॥ अकुरु धनः ॥ ५५ ॥ कलिकापकसंयगा ॥ ५६ ॥ पचराण ॥ ५७ ॥ निगः नखायान्चिगः ॥ ५८ ॥ नखायान्चिगः ॥ ५९ ॥
 मालि वडिगः ॥ ६० ॥ नागमूर्तिः ॥ ६१ ॥ ॥ सफराण ॥ ६२ ॥ सिगः सोम्या ॥ ६३ ॥ दिव्यजान्मर्षी ॥ ६४ ॥ नखायान्चिगः ॥ ६५ ॥
 ७४

गा ॥ सिगः सोम्या ॥ ६६ ॥ वनदाक्षानननन ॥ ६७ ॥ मर्षी ॥ ६८ ॥ मर्षी ॥ ६९ ॥ मर्षी ॥ ७० ॥ मर्षी ॥ ७१ ॥ मर्षी ॥ ७२ ॥ मर्षी ॥ ७३ ॥
 नखायान्चिगः ॥ ७४ ॥ नखायान्चिगः ॥ ७५ ॥ नखायान्चिगः ॥ ७६ ॥ नखायान्चिगः ॥ ७७ ॥ नखायान्चिगः ॥ ७८ ॥ नखायान्चिगः ॥ ७९ ॥
 कलिकानकदुरु ॥ ८० ॥ चन्द्रादिकृतमलकः ॥ ८१ ॥ नखायान्चिगः ॥ ८२ ॥ नखायान्चिगः ॥ ८३ ॥ नखायान्चिगः ॥ ८४ ॥
 नाच सात्मे मयूनं ॥ ८५ ॥ नखायान्चिगः ॥ ८६ ॥ नखायान्चिगः ॥ ८७ ॥ नखायान्चिगः ॥ ८८ ॥ नखायान्चिगः ॥ ८९ ॥
 मर्षी ॥ ९० ॥ नखायान्चिगः ॥ ९१ ॥ नखायान्चिगः ॥ ९२ ॥ नखायान्चिगः ॥ ९३ ॥ नखायान्चिगः ॥ ९४ ॥
 नखायान्चिगः ॥ ९५ ॥ नखायान्चिगः ॥ ९६ ॥ नखायान्चिगः ॥ ९७ ॥ नखायान्चिगः ॥ ९८ ॥ नखायान्चिगः ॥ ९९ ॥
 १००

[illegible]

॥ वन ॥ ॥ यो नाग्नेनाथवाग्धमर्षं चित्तं धृत्वा लोकां कालं च वासां च गृहं च धर्मं च सो धृत्वा ॥ वायु ॥
॥ भवति नाद्यं सोमं यथा यथा वा नागदीधनं भवनं दद्यात् ॥ नाना रत्नं धाम श्रितं ॥ वेद्यं वेद्यं ॥ शक्रं सितां उ
टी शूली वृषश्च ॥ विरुषितं ॥ श्रीमान्नाहीन्द्रो वैराग्यं लाकपालादिवारुव ॥ लाकपालमूल्यं ॥ द्विजुज्यीनदह
रुजटा धनी कजासेन ॥ विश्वकर्मा सदाग्नेनाज्ञानमूढाकुसूरुत् ॥ विश्वकर्मा ॥ विधुना नृपवक्त्रं उद्वयं
दं मूर्ध्नि ॥ अलीढकनधमसंकां महाकायं सृणीषण ॥ दीर्घदंष्ट्रानखैर्यकं पिङ्गाक्षं हृषणं विनापीतं धृजध्रं वामं न
ज्जीवातैर्दृढं गतं ॥ असाविगं दुर्गं कथादिद्रुल्लं रुदकिं ॥ समीपनाकसान्ध्यां मंत्रं नृपदं नृत्तं ॥ रुन्मान् ॥
॥ उजायकायिकां कायादीधमरुल्लं च किन्नरं ॥ सुधयकाचिना निर्यं कर्तव्यायां विदन्ति ना ॥ किन्नरा ॥

यकाचिनाकविकृता ४ खनरुका ४ नृपिग ४ माला रुताधवा ४ ४ खकाविशधना ४ सदा ॥ विशाधना ४ ॥ दी ॥
 धाखभधना ४ कृष्ण ४ पिगवा ४ वेला ४ कका ४ पिगवर्चनकर्णध ४ धनाला विकृता नना ४ ॥ धनवताली ॥ ॥ व ॥
 कणभगदक्षिणा ४ वृष्वर्ण ४ रुयक ४ ना ४ कपालमालिन ४ गूलधनि ४ ४ गुयालका ४ ४ गुयाला ४ ॥ ॥ ग ॥
 धाजगृधवका ४ ध ४ निवा ४ हूयीमखा ४ धा ४ रुभमहाना ४ धना ४ खलु ४ ला ४ धलामग ४ ४ किन्ननाया ४ ॥ ॥ य ॥
 निन्यक्षकवक्ष ४ लंशादी ४ भनचकवत ४ सा ४ व ४ धना ४ सदा ४ य ४ ध ४ क ४ व ४ य ४ म ४ ल ॥ ४ ४ खा ४ म ४ क ४ ध ४ वि ४ ना ॥
 कसीकप ४ ध ४ रुया ४ यी ४ भा ४ की ४ चा ४ रुया ४ क ४ यो ४ ४ लाली ४ लालया ४ तथा ॥ लालालका ४ ध ४ ल ४ ४ कणी ४ लालसा ४ विमला ४ य ४ न ॥
 ४ ४ ना ४ सा ४ च ४ वि ४ भ ४ ला ४ की ४ रू ४ क ४ ना ४ व ४ ध ४ म ४ खी ॥ ४ ४ हा ४ ना ४ व ४ म ४ हा ४ क ४ ना ४ का ४ ध ४ ना ४ रु ४ य ४ ना ४ न ४ ना ॥ सर्व ४ आ ४ ग ४ न ४ ला ४ ना ॥

३३

ना ४ ४ ग ४ दा ४ रु ४ य ४ ना ४ ना ॥ सा ४ बा ४ खा ४ न ४ स ४ र्ध ४ ही ४ स ४ व ४ ला ४ ना ४ ल ४ र्ज ४ धि ४ का ॥ न ४ का ४ की ४ स ४ य ४ सि ४ द्वा ४ रु ॥ वि ४ श ४ ऊ ४ द्वा ४ क ४ न ४ कि ॥
 ४ ॥ म ४ य ४ ना ४ दा ४ य ४ च ४ ४ अ ४ ग ४ क ४ ल ४ क ४ नी ४ व ४ न ४ य ४ दा ॥ च ४ द्वा ४ च ४ द्वा ४ व ४ ती ४ वे ४ व ४ य ४ य ४ अ ४ य ४ ल ४ र्ज ४ नि ४ का ४ ४ पि ४ च ४ व ४ क ४ पि ४ ग ४
 वी ४ च ४ पि ४ मि ४ ता ४ ग ४ च ४ ल ४ ल ४ या ॥ न ४ म ४ नी ४ ग ४ य ४ नी ४ वे ४ व ४ वा ४ म ४ नी ४ वि ४ क ४ ना ४ न ४ ना ॥ वा ४ य ४ ब ४ ग ४ म ४ रु ४ ल ४ क ४ की ॥ वि ४ क ४ ना ४ वि ४ श्व ॥
 नृ ४ पि ४ का ॥ य ४ म ४ डि ४ का ४ ऊ ४ य ४ नी ४ च ४ इ ४ रु ४ या ४ च ४ य ४ मा ४ नि ४ का ॥ वि ४ ण ४ ली ४ न ४ व ४ ती ४ वे ४ व ४ य ४ न ४ ना ४ वि ४ रु ४ या ४ नि ४ का ॥ च ४ रु ४ ष ४ धि ४ नि ॥
 य ४ द ४ वा ४ मू ४ र्ति ४ रु ४ द ४ नि ४ ग ४ य ४ न ॥ ॥ व ४ रु ४ स ४ रु ४ य ४ रु ४ धा ४ म ४ क ४ ख ४ ट ४ रु ४ ल ४ रु ४ रु ४ ना ४ रु ४ मा ४ रु ४ रु ४ ष ४ म ४ द्वा ४ सा ॥ द ४ का ४ खा ॥
 क ४ नि ४ र्म ४ कि ४ ता ४ ॥ १ ॥ म ४ रु ४ क ४ धु ४ मि ४ ण ४ ना ४ च ४ क ४ म्ब ४ वा ४ म ४ रु ४ या ४ व ४ हा ॥ ध ४ न ४ ४ क ४ पा ४ ल ४ रु ४ सा ४ म ४ म ४ रु ४ क ४ ना ४ रु ४ नी ४ य ४ ना ॥
 २ ॥ क ४ ना ४ खा ४ म ४ रु ४ क ४ सा ४ द ४ य ४ न ४ रु ४ रु ४ रु ४ या ४ द ४ या ४ ४ य ४ न ४ रु ४ ना ४ रु ४ सी ४ ण ४ म ४ र्मी ४ का ४ द ४ क ४ रु ४ नि ४ का ४ नि ४ ता ॥ ३ ॥ रु ४ य ४ म ४ च ॥

म्यकाताचदकि (६) मूकनाङ्गुली कपालीचदलीशोभा धरुवकु नृसंकिता ॥ ५ ॥ कयाकुर्मकितालोनी लवकुसु
 उद्यटाचिता वामकपालपिङ्गीरु लवलीकोलमणिता ॥ ६ ॥ पिभेकीचिङ्गकणीया दकुवकुहियकिता
 कोणययागलुश्याम्य वामचाङ्गुल्यदिनी ॥ ७ ॥ रुकानूठालवकुचवान्गुल्यारवत् कभनो गनिरु
 दाम सोम्यायागमङ्गुल्यदिता ॥ ८ ॥ गवस्तानुयनीयीता गकीरु कधनुषना याम्यउमनगूलय मल्लकु
 यामगा ॥ ९ ॥ पूर्विका ॥ ॥ गकिधनाङ्गुली वामखटकपालिनी नकावहिङ्गिताली ला वीउनीदेहने
 सरु ॥ १० ॥ लीलावनीचदकुका लीलानकजठान्विता विशाखापट्टिसपाङ्गी वाममल्लममकु ॥ ११ ॥ मूषा
 नूठालयानका याम्यदकुसिधविनी कर्कनीकाङ्गुल्यदाम तङ्गुल्यारवत्कुका ॥ १२ ॥ कर्कनीमङ्गुलीसूर्य

रुक्मि

७१

६३

सोम्यचिङ्गनृकीकना गूलिननयनीद्वार्या धरुलीलाससानसे ॥ १२ ॥ वामललापमकुञ्ज तल्यग्न्यासुगकक
 लल्लभनकिता लकावर्षकीपिलिनीद्वार्या ॥ १३ ॥ गिरुभसकखटालो मादकासिचदकि (७) गभदाल (६) व
 वीकु ॥ १४ ॥ उर्वीचिलोचविनी ॥ १५ ॥ दकि (८) वनदचक वामकम्यककना विशाखाकागभनका लीलामुल्ल
 लसामगा ॥ १६ ॥ द्विपिङ्गविमलानका शुकालीकानरुपिता कर्कनीकमुरुश्याम्य सोम्यायागकपालिनी ॥ १७ ॥
 ॥ अग्नेयाङ्गुली ॥ ॥ कष्माङ्गुलीगनाजुल्ल कालिनीदकि (९) मूवा वामचारयदकुसा दिकुनानुद्यटान्वि
 ता ॥ १८ ॥ गूकनायाविभलाकी यापिल्लभकितासिता कर्कनीरयदकुश्याम्य वामद्यक्षकपालिनी ॥ १९ ॥ मी
 नास्यामीनसिङ्गचदकुका नासाङ्गुलीमालिका मसलीविनीयाम्य सोम्यचदकुल्यल्लो ॥ २० ॥ ययकावदकुवास्या

दक्षाया विरुती निगू। समथकादिरुद्राम मत्स्यमन्युवासिना ॥ २० ॥ तर्जुनययु सौम्य याम्यदु कया
 लिनी। हाहानवा सिताकुना नासरास्या खना सना ॥ २१ ॥ ललायास्या ललायका मरुकुना सिता रुवता वाम
 मसीघटीपाशं लखनीदधुरु रुत ॥ २२ ॥ मांसिखलुकत्रयामा खादनीको धना सिता वाम समदिर्नया
 विरुती जम्बुककिता ॥ २३ ॥ कष्ठा रयानना गृध्रदक्षिण ॥ २४ ॥ विरुषिना याम्या ॥ २५ ॥ विरुषिनी गूलं खर्पनील
 लिहान्यत ॥ २६ ॥ याम्याष्टका ॥ २७ ॥ कगूलयल्लरुद्राम मण्डुमन्युवासी। विरुषिना जिर्नवास्यां सर्वज्ञा
 पुनमसिना ॥ २८ ॥ जम्बुकि को कपो न्या उद्यती तनलायत। गूलं दमनरुद्राच गमधमनला ॥ २९ ॥
 तानागवर्ध ताताना कष्ठा लुककिता नृकं। गवर्ध विरुती सौम्य गूलं मन्मथमन्यत ॥ ३० ॥ मधुदादु किता

३६

अ३

कष्ठा ज्ञानमर्धाव विरुती। दक्षिण जयमाला ॥ ३१ ॥ वामयल्लुक मण्डुल ॥ ३२ ॥ कवचकासनापीडा लुनगम्या रुयानना।
 सूर्यमण्डुकनायाभ्या ॥ ३३ ॥ दक्षिण लालिका कुरुत ॥ ३४ ॥ चिन्नरुद्रा वक्रा सावाकुलजटा धना। खदा मन्मथकं सौम्य
 गूलं विरुती तन ॥ ३५ ॥ गवर्धनसर्पहिमन्युकी जटिला सिता। गूलं लान्धकक कान रुद्रया धर्मवासिनी ॥ ३६ ॥
 ॥ गवर्धनद्विजं पृथक् कनिष्ठारनो वेसिता ॥ वामकनाय धनार्सं द्यौष्टुल्य धना ॥ ३७ ॥ नैमत्याष्टका ॥ ३८ ॥
 ॥ गार्धका गालज्याया सकाना लुटिकयता। गंखखटक रुद्राग वाम सुलिक खरु रुत ॥ ३९ ॥ गण्ड
 नृदा धनकाक्षी नकयाना गणियता। गदाध्वज धर्मयाम्य वाम पाणकपाल रुत ॥ ४० ॥ विरुद्रिका सिता कुना
 सद्यो सीलकपालिनी। चक्रा चक्रवर्तनी धनिधीदक्षिण कन ॥ ४१ ॥ गवर्धनमन्मथरुद्रा यगमसियता ॥ ४२ ॥

कुरुयाध एवता कुंठियुगकनक्षिणी ॥ ३५ ॥ चन्द्रागमयनादास्या त्वम् खट्वधनिधी जले वृनायनानूद्य गति
नमस्तु लमष्टिता ॥ ३६ ॥ नक्षत्रास्त्यव उग्रयाम्या स्यात्कर्तुनीरुली कपायपुमनय ॥ ३७ ॥ टिकस्त्रिभ ॥ ३८
॥ उक्रामवासना नोडा विउत्तयुक्ता कुरुत्तुर्क कालकली उगत्याता कुरुत्तुर्काल विरु चिध ॥ ३९ ॥ वृषदोहिना धना वन
दानिपूनासिनी ॥ कुरुत्तुर्कयुग शशि मूलयाधनान्यत ॥ ४० ॥ वान्धवका ॥ ४१ ॥ चन्द्रादिसक्तिता गेनी वदास्यन्दक्या
४२ ॥ कमलाग ॥ कमलुर्गयग्र चक्रुत्तुर्गवान्विता ॥ ४३ ॥ याश्वर्या कमाला रु कुरुत्तुर्कधनिधी ॥ चन्द्रावली रुमारा रुवृता
नमस्तु गमसेना ॥ ४४ ॥ रुलुगगन्वितायाश्व कुरुत्तुर्कधना ॥ नयत ॥ गजयाना पर्यवस्था गेनी विध्वपर्यविका ॥ ४५ ॥ कपिस्त
सादुर्गवात् रुवाम्बना पलयानिका ॥ खादत्या मरुली निर्य कप्यास्या गेनी वरुणिनी ॥ ४६ ॥ पिचवर्क मग्याल पिगलाया

मासोमया ॥ हिन्दिया लक खंटा त्यां यासा सिर्था वसयता ॥ ४५ ॥ काकास्या नगमनेनी पिमची वकुमुलिता वैरुलक रुनी
खमं विउनी सोम्यामाया ॥ ४६ ॥ रुलरुल धनावाभयाम्भगुसिधनिपी। खनवकुववभूम्या लिमिवाभगिद्वेला ॥ ४७ ॥
॥ नृत्यनी लालयायीगा नथरुयामा सोम्या ॥ धनंठमलक रुथो पागं पिचुं च विउनी ॥ ४८ ॥ वाययावका ॥ ॥ गदा
यदिगल सोम्या गूलनामनिपीतन ॥ नमणीयवक रुथो मोनीयक गनचिता ॥ ४९ ॥ सप्यासप्या गनुनी मोथ्यमनयनी
वना ॥ खरुधायनरा गव न्यरुहका रुवदिय ॥ ५० ॥ पीनामहाय नागास्य वामनी विउनी कन ॥ क ० नलकुर्क वाम कमा
लायनमकन ॥ ५१ ॥ गूलहिन्नल लायस्य सिंहाक रुथानी विग ॥ डिहारा रुद डिपीयीगा चउ इद्विकतानना ॥ ५२ ॥ गंखपू
ननिकाद्या त्यां नृका रुथक वादया ॥ दिहसवड थरुया रालावाय वगिका ॥ ५३ ॥ रासस्य रुद रुद ॥ सोम्याम

कयालरुतामहाकायात्राणेयैर्क करुनीरुतुकादनी॥३४॥ इत्युक्त्वा विकताग्रेनी रयद्विद्वता नना॥ रुतुम
न्यायैश्चाष्टागधखदाभसंमलकै॥३५॥ खटगोखाडुरुदाम गदाचकासिरुतुगवीनुक्त्वा विध्वन्युपस्था इमाराव
नमालिनी॥३६॥ उरुनायका॥ ॥ मसलैममनीयाभ्य यनपुंवन्मनकग ॥ विरुगीयमडि द्वाखा केवाला महिष
हिता॥३७॥ नयनीवेष गभवा यम्युमनरुनरुता सदेयैमपुम जयनी वामरुतया॥३८॥ खमकनय
तामोडा धनपुडादुज्यामनाना रुता वता ॥ धता दर्नकननसं हिता॥३९॥ गूलवाधधनायाम धनगकि
कनातगशागकि कटुक्ता निधानाया कानवधुयिमानिका॥४०॥ माऊनिका विठलीच विठला कीरुवसिता वाम
रुलीचखदाभं गूलकैटव विरुगी॥४१॥ कनपिगचवकाय यगक्ता नवतीमतो कगूलयदिरुयाभो रिदि

३०

यातगदासिरुता॥३२॥ कनारायतनायका विकतास्या गवहिता करुनी गूलरुतुय वाममणुकयालरुता॥३३
॥ धनवधुवेषक्ताच विजया विजयपदा गूलमनयोम्य ॥ स्या कद्वखदाभधकग ॥३४॥ निगनयका॥
॥ दिव्यामनधना ॥ सदासुविरुनगरुषिता ॥ करुया ॥ निस्थिरिनिह्यी यानिन्वा ॥ गधसिद्धिदा ॥३५॥ रनव धाक
रुतुया चरुनायाउटनरुता खदाकगकभनय विध्वन्युदकग ॥ चाय गिगूलखदाभ त्यागकादिकेना ॥ न
तगउचमधनाद्याया केहिवासा ॥ दिरुषित ॥ शुकदयुकनासाग ॥ पचअद्वहासवान ॥ पलयामदवधुता म
लुकलमालिग ॥ कर्मधनामयेगाड ॥ यगददासनस्किग ॥ चअथामारुमा ॥ धरु सीकिग ॥ पीगवृद्धरुता ॥ खविलामानिच
यर्क देद्या ॥ केकरुदग ॥ नयगभा निजायके ॥ खानिनीचकमायजग ॥ मदिवागिवला नूट खवधुनगरुचिनी ना

दविन्दुसंयुक्तं मातुलं धातुदोषिणं ॥ संकृपाद्वनसंस्कृतं कथितवर्तनीमया । पुञ्जदवान्ननूपानां स्वस्वभावाच्च विनिश्च-
यः ॥ उद्धृष्टीनाथयानका सफावेवान्निकृष्णायैव क्षयति माखाता मानन ॥ सकृद्वान्त ॥ न कस्मिन्नवदहस्य यथा भू-
नियुधकपुथकान् तथैव नास्मन् ॥ सर्वं कायं कान्तारुदतः ॥ ॥ तिलकसंयुक्तं यन्त्रादिव कलिकवर्त-
नविधिः ॥ ॥ चक्राचक्रपवद्भूमिदगुरुद्विचक्रिणं । यथास्यादियथासिर्गं तवन्मयकपंचकं ॥ पंचास्यं
चतुर्नास्यं च । त्रिदशकास्यं च त्रिदशमात् । यंचवक्रमनिष्टं चतुर्वर्कं सुखावहं ॥ त्रिचक्रं भक्तिर्दं नित्यं द्विचक्रं चानिवाचिकं
। एकचक्रं नागद्युस्यानाधिकार्यं चलाचलं ॥ नवद्विचक्रिणं वापि सासादयुर्वचक्रं । चतुर्मूर्खं चतुर्वाधं न पंचास्यं वा चतुर्मूर्खं
॥ सिताक्षनीतिर्नृच मोतिर्गुल्लग्निरिति । तिलकमूर्द्धिचक्रिणं वक्रं मेघाननीतीं गवीरुर्कं ॥ एकचक्रं सगुल्लं चतुर्वर्कं मोति

खि ३

मलिनः। सिंहास्यं गङ्गा कङ्कणं मेन्दनस्य नृपाधनं ॥ कषुवकुमधालाख्यं पिम्बकूर्चं गुणगुणं। दंष्ट्राकजालवृत्ताङ्कं कलत्कं
गदित्प्रिर्न ॥ वामवर्कं रुवलीर्न सोमधनददिक्किर्न। कान्कालकालेकं गङ्गा गिलकालकमलिनः ॥ वान्धस्यमिर्नमय
धनुमोतिजटाधनीं शङ्करीयोनयवाकान् सपसनीसु गङ्गा नने ॥ विनगङ्गा नीचवर्कं विमूर्खत्वजवर्जितं। मयः पर्यादिव
कस्या यन्धलो कवर्कं ॥ तुल्यविकरुतं सिद्धं पूजारा गङ्गा विरुतं। तत्वेति गङ्गा देवकी कल्पाभागे विदितुव ॥ मधुसू
तुमा लिङ्गं तालयश्च कवर्जितं। दिशि गङ्गा ननरुर्कं रुतवदाननमदा ॥ सङ्गातवदनदवी विगङ्गा लर्कं विषदियत।
तद्वद्वासादिमागख्यं भकाधुगुठिका कुलान् ॥ नृस्यमयाद गङ्गा निम्नं स्यादविगङ्गा नरुत्वाका। वषट्पत्नी विदितुव
दानवविर्न ॥ धृत्यं गङ्गा विवर्कस्याः मधुलिङ्गमथेवर्कं। नवर्कं गुलकं वृत्ता दकास्यं पूर्ववर्कं ॥ पूजागेनवधारुकसि

ममूद्ध शिरागन ॥ गदध ४४ धिरागन निववका विवर्तयौ ॥ तद्वर्तक न्ययार्मूलं रागेकनगलनथा विवकोशोचरा
 गन ननासासताठमरुका कमगायरागन चानमोलिकदूर्ध्व ॥ लिङ्गयाध्वदिरागन रागंलक्ष्म तद्वर्तन ॥ रूढादी
 ध्रुपयवन पुष्पाकियतिमायथाप्यवस्थाद कवकान् मयमेवविधिष्यन ॥ वरुकाकारनगन ॥ गार्ध निन चूर्णदिककमात्
 यचाननादिकयार्क स्रवकमधुनाञ्चन ॥ मखलिङ्गमनि ॥ ॥ पायकयश्चवकु नि सध्वन्येयगानिचद्विवाहून्य
 र्ददरानि विष्णुनवनननिच ॥ कुर्यच्चिद्विगीम न साकमालाशिगुतिन ॥ पूर्वकायमसन्तु मातुलु माकगुलिनी
 ॥ यामाध्यानमनोकी न द्यष्टागूलधनं सदा कुर्याकानमरुनगुर्ध्व दय्येधधनसैयनी ॥ यधिमजातकनूर्यवनदीरयपा
 निका स्रवकयचधध्व मस्थिक विधिसैयनी ॥ यचद्वि शियमेकन संपूर्णक दानकमारा नवनिर्धयलिङ्गमनि पिष्टि

३२

कांवरुयरुत ॥ ॥ निलकवासमूत्रयवकायक लिङ्गनांदगमावरुनीविधिषसकम ॥ ॥ पिलिकांसा
 स्यतवक्त्र लिङ्गच विविधंशुर्ग मरुत्यायतिमायाध्वि लिङ्गदधसाधन ॥ पिलिकास्यादमादवी लिङ्गचयनमध्व
 न ॥ नावकाकानयरुसा लदाचिद्रुयोनपि लिङ्गनारुयविकी लु उक्तयविष्णुसमिग ॥ पिलिकासुसमाध्यानु न ही
 नानाधिकाशुका ॥ सगान धधहागन वाहूननसमन्विता ॥ ॥ मखलान लिङ्गगन खातंनश्रीहाहीनकी समायद
 हीनम्वा विविधतद्दाहनी ॥ मध्वरुसमालिखा वरुथखातमादनाता गावयावक्त्रनेष्टु मखलाखातमाध्व
 यात ॥ अर्द्धादियु शिरागन मखलावरुनीवदि ॥ पधालीपी ० मध्वरु देय्यमूलं शिरागकी ॥ मखनदध्व विलान् न
 उरालेन निनम ॥ ॥ लोत्वा पिषलस्य ऊसरुदलसंकिनी ॥ कम्भदूर्ध्वसदाध्व मयथादाधदायकी ॥ उक्तवक्त्र

किंनोनिरी लक्ष्मलं चालन सवर्ष ॥ षष्ठी गवनात्क ७४ चला नीपं च भनवा । नवदासाय कं सर्व पीठसु समा न्यथ
 ॥ अथ कं मिश्रकं स्वांग वद विष्णुस्व नृपग ४ पीठिका विनर्द्धी ॥ खार्ति तन्म धातु वत ॥ लिङ्ग स्त्री लयमानेन समास
 दिविदिक्किर्त । चतुर्जुम धातुमं वद विष्णु विराग त ४ ॥ समका ४ ४ लिङ्गस्य ये वे ४ षष्ठी विवर्द्धित ४ ॥ अर्द्धादि न्य
 नम न्याया कन्यसदियव मदा ॥ लिङ्ग व निर्मला शुद्धा कर्तुया पिलिका वेष ४ ॥ अथ मं धातु लिंगस्य दृग्धर्प चय
 वाधिक ॥ गणानां विवर्द्धितेना मर्द्धादि कसय यव ॥ यव ४ ४ षष्ठी ध ४ ४ पीठिका वद रागस्य रत ल ॥ कामना वस
 तस्य रुदान्म ४ ४ समास त ४ ॥ विरक्त लक्ष्म वा ४ ॥ लिङ्ग ४ ४ राग नववा ॥ चतुर्द्धा मं मला वा यवस्य न धर्प च
 ॥ वद राग यव ४ ४ स्त्री लया पीठिका लय यत् ॥ ॥ पीठिकायां समकार्य विकारानां न राजयत् ॥ न कं

३३

धातु विवर्द्धितेना ऊर्ध्वा उर्ध्वा ग क र वत ॥ उदात्ता गत धातु ४ ४ कृ पट्टी उदात्त ४ ४ नाम राग न क ४ ४ चतुर्द्धा मं मला वा यवस्य न धर्प च
 कृता गजला धातु लकां गणाय पट्टिका यव ४ ४ निगमि विवर्द्धित राग लो क न क ४ ४ ॥ वाचमनान्सा न व क न्यसी कं यथा
 धना ॥ समासाश्च न वान्या पूरु कृ म्हा रु न पिया ॥ द्वां धां निवर्द्धाय द्धमो लिङ्ग गे प द य ट्टिका द्वा ल्यां घटा थ पट्टि सा द्वा सा ल्या
 तु लिङ्ग मिना ॥ यदा य पट्टिका क ४ ४ गलय द्वा य पट्टिका ॥ न के कना धि रि ४ ४ कृ म्हा घटा द्वा द्वा व म व ३ ॥ भवला पट्टिका रि
 किं रागे क न त द्वा र ४ ४ मं धा कं पूरु कृ म्हा ल्या द्वा लिङ्ग द्वा ग नि मिता ॥ ॥ उक्ता यो द्वा यी धा ४ ४ ल्या द्वा द्वा ग दि धा
 कं ॥ उर्ध्वा गे ४ ४ ख न य द्वा द्वा द्वा य पट्टिका ॥ लिङ्ग नर्द्धा दिय द्वा द्वा द्वा द्वा ल्यां ग थ ४ ४ सा द्वा गि ग ल नि मिर्ग
 म ४ ४ ल्क भव गला द्वा मं कां ग ना द्वा य ट्टिका ॥ क ४ ४ य न स य का षष्ठी ४ ४ य द्वा विर पिता ॥ य द्वा क ला रि धा न य म

पदसंज्ञा य पट्टिका । द्वा ल्यां द्वा ल्यां

रुमानासदेवउ॥ ॥सम्वत्खाउलान विष्णुगभनमृदिनायुधकिनालयागादियकावृत्तापुकीरिना॥लिङ्गनाह
 रिवधन वृत्तायकस्यपिडिका।यकस्यउरुवद्वपीगनाहसमेदीधना॥गदीयलोद्धविलाना रुद्धविलकाकुयो।यसल
 मानवचूर्णपनिपीशांगमभन॥उक्तयदगभरुक यद्वर्मगधगली।वर्तुल्लग लयागे।द्वीगदीगनकल्ययन॥
 ॥यनर्जघाचकल्लुचक गृधेवायकशिका।वर्तुल्लगदिका।धेवउलाधननधेवच॥नकय।भेकयकेक यभेकय
 गलांगकेशमभनानांरुवलि।ल्लुत्तरकाद्यादगभंगकेश।घाउगभंगकेश।यानामासनी सदा।यकनृयभचन्द्रानि
 गनद्यक द्विसामकेश।चनर्गपट्टिकाकमृष्टयट्टिकागलयट्टिका।वर्तुल्लगदिकाधनं।मखलांट्टिकारुवत॥अष्टदिगविरुष्टे
 वृहीनमधुलमाहिरि॥पिडिकास्थानमहाजनां द्विखभमृष्टनववा॥यवगभद्रमवाहृत्याकुउधलादिपूर्ववत॥अरु

षष्ठापवाहीना।यनिमेकाद्विसंकिता॥तद्वीगभरी०विलान सत्यादानसमृद्धयशयधुक्कथोकलाकी।भे।द्वकनृत्तक
 चन्द्रगभारुक्कागलावृत्ता।वदासापट्टिकाकमान।यवगवृत्तगवाया।ल्लुद्धकाद्विसंकिता॥अनृत्तचवमवत्तय
 लात्तुद्वी०क॥ ॥मखलिङ्ग।धिकाकाया।चनुनयाद्विखलिका।सहाकृष्टिस्सन्धिधनृपधनवधनादिवत॥ताम
 नृयधमृष्टीयादगभलेनिर्वंधिता।सहसाकृगता।चवदासा।चकखलिका॥कषांविदुमनयक।लिङ्गगुच्छमरु
 क॥ ॥लिङ्गहीनरुवत्तुय।नधिकवाधयारुण॥गस्यानिभनृगीयी०कल्लुक्कल्लुजीवन॥लिङ्गनयीकाकाका
 यी०वालिभना।धिका।यदिसा।नृगभगेधरुनि।द्वीगुनरुध॥गस्यानृनाधिकैकाथी।रुनिवक्रांगकावृत्ता।उक्त
 यानलिनिभना।ननृनानाधिकाहृन॥सायामल्लिङ्गनृत्ता।साह्वी।ल्लुकेकासनं।मनिसाह्वी।धिका०गुं।कथादि

धवसाह निः॥ सपादाष्टांशकेष्टकं च विधेमकलांशकायादानाष्टांशकावक्त्रा कार्यवानाष्टकं च वि॥ ॥
 यहाँ नानेक प्रकार विष्णुमूर्त्यांशकेष्टका। अर्धसनाष्टिगोलि। वक्त्रासर्पांशकेष्टका। यमिद्धमाकनधमन्य ज्ञावर्ष
 समागिता। योमादिवर्षवर्षनां यो अशानविवर्षुजाशांसां यो धी किं नीलि कं। जेलधन्वादिजं उरु। न लज्जा वा।
 धनोद्वी। विगषात्कीर्तिरधना मोकि कस्तुटिकता। यो यना। गुरुतामजा॥ वेदयाष्टकमनिलं ह मजा।
 पिष्टिकावना। यंच भवादिषा बोधि न लज्ज विरुज्यन ॥ रागद्वयमधेकीवा। विनयसंतिष्टिकावना। यंच भवा
 तिष्ठतापि न लज्ज विरुज्यन ॥ रागद्वयमधिमाना। वरुलं धुमिषात। सवधवा नयसत्तु ल्पे कंच धनसं
 यशापी ० दाया लूयानाया ० का नाक रूचसर्वदा। वरुवायी ० वदासा अयका दो र वरुमा गो। उकि मूकुरय

३५

योफो मृगं का मृगस्य हतवर्ग॥ ॥ धनारुदाचयकीच वरु। अमकमधुला। यद्राध नृगभार्याच। कामदाधुत
 मरुक॥ वदासांमकायाच। धनास्याद्धनवीपदा। द्विभरवलाचवदासा। रुदायांमदिदायिनी॥ यकी रिभयलावका म
 हि। योमपदायिनी। यउमायंयदावकी। भरवला रिशाचिना॥ ययादिमैलायका। गुरुंकाचदायिका। मधुलापूषु
 चडा। लवधदायचमखला॥ ॥ कनाडुकलिकाक ४ कलिकाडुजला प्रये॥ चन्दा मृनृपवामेका शिदी गेकि धि
 राउतिग॥ कलिकाडुयवसौदे साउ मध्व कका। वरुयायद्रयकाका। कलिकारुयचिना॥ पणाय ४ यदायद्रा लवध
 दारुचभकिदा। यवका। यधलाखा गमकिदाया द्विमला॥ सिंग देयपि विस्तारं। विष्टयावत्समचनता। यवका मख
 लागरु नासकादिसमचिना॥ सिंगधनीनाषसंखानी सुस्यपो ० ययामता॥ विरुया कयनालादि सर्वपूत्रादि नं

कमार ॥ ॥ दश दिगीग लिभानां त्वायामयगसुके ॥ ससम्भवावलयिथी कुरुकर्मपमाधिकां ॥ नन्दीवेधननीः
 यामां नैमतीवान्नीनथामानगीधनदीनोदीं वेषूवीवक्रजसिदा ॥ नन्दीसूर्यपवादत्वा पावथांत्वायगमकीसूरम
 (अ) इत्तुगदा मत्वा को (ध) सवर्गशाचरु ॥ सूर्यपनदेत्वा साधयन्नरुनसिकां ॥ वदार्पिपिठिकां कुरु कुरुनामपिसवदा ॥ रु
 यो (ग) कुरुसूरुद्ध गृहीत्वा उभययन्नगमश्चान्नधनगरीसूरु कादीसम्भवावापनी ॥ कुरुकुरुत्वागनां गनु कुरुत्वावाकुरुनगां
 गकीगसूरुदयसंयाग साधयदापिपठिकां ॥ कुरुचक्रुद्धाकुरुत्वा चो (भ) वी (भ) चपाध्वतशसंयाममधनं सूरु साधयद
 र्चचक्रिकां ॥ विरुध्यश्चक्रुद्धा कुरुत्वा गे कुरुकुरुदयवाचद्वानिसाम्यकाद्यास गतिसूरुठिका धिकां ॥ सफरागीकुरुक
 रुत्वा गे कुरुयनिगान्यसगसूरुमश्च र्चसंवृत्ता दडं स्यात्पूववादिता ॥ नवधराजिनकुरु तथसंवाचनशक्तिप

३३

कु १

गामश्चसूरुद्धतागन काधनिकामयदध ॥ जिनाभावदिनकीर्णं कुरुत्वा कुरुद्धसाधुलो ॥ का (ग) ॥ सूरुयनि
 द्विती ॥ कुरुयमश्चक्रिकां सदा ॥ अर्थाभावदिनकीर्णं न्यत्वा काधनसूरुके ॥ सविद्वाग्नीधसीक्षिय कुरुत्वा उदगमांभि
 की काधनकोधोचकुरुत्वा (ग) ॥ सूरुसम्यायकाधनशापूर्ववत्सादधर्मांभेष्ट कुरुद्धागिधदसिकां ॥ ॥ चरुनगारवन्दे
 न्दी साधेन्यसूरुमेमता ॥ आग्नीवाधिपगारा चिरुनार्गनिदाकुरुत्वा ॥ अर्द्धचन्द्रावतिर्याम्या गुरुधर्मकुरुयका नि
 काठिकाधनकुरुसानाकुरु द (ग) चक्रुद्धा के देवीसदा ॥ वान्नीमधुनाकाना साकायायनकाविनी ॥ वायवाचवषु
 धाका ॥ गुरुत्वा ननकाविका ॥ पद्माकाना ॥ यमाशौ म्या धनपृष्टिपदासदा ॥ नोदीत्वाष्टिका कुरुया मरुदिदासाविना
 णिनी ॥ वेषूवीधाउभयशु नियमदेनकाविका ॥ द्वारिगदधिकावाग्नी स्वर्गखि कुरुलदायिनी ॥ न कुरुकुरुवाकुरु

वी १५१

स्वायम्भुवकवलगायाः शब्दचन्द्रापमानालं (गायकादद्युवद्वंता। स्वायम्भुवकवलगायाः शब्दचन्द्रापमानालं ॥
 क्लिगाः शिपिगीमामसुकादीनां कनाथवविधंरुलं ॥ रगमध्वनिर्लीर्गलीगं रगसंक्लिशि रगलिर्गक्लि
 सर्वे कोलाकीसचनाचनं ॥ गायकाः क्षत्रगकिश्च उमास्यात्पी ० नृपिणी। निवर्लिर्गपिर्नंरुलं तथाथागमन्महा
 रुलं ॥ विष्णुतागमसुविस्तरासीधु। तदद्वदलनिश्चितादलाधिगलिकावृमं वदायालिम्वरुनी ॥ वद्विक्लि
 यवदाया लुक्लिधविस्तरकई। चतुर्नर्मनंरुलिया द्वागं। नृपकलिर्नं ॥ क्वचिन्निमद्विक्लिना। तदद्विक्लि
 यगमसिका। तत्यादं ध्वनिकासाडाग्रगलानिला रुवतं ॥ कृत्वासांदलाङ्गाई मध्वपेक्षुखावकं। कायविक्लि
 गिलायाथी वृत्ताश्चउसाधनं ॥ दवपी ० तम्यगमनां वेषावक्लिगिलापिच। चकई चक केकुम्मा शुरुमंत द

नाः शुरु ॥ सनिष्पन्नयर्लिगव्मानलरुगावत्सच। समुलीसमध्यायो वनिडादगिकारुम ॥ स्वपुजान्यव
 द्वाथं। यागमन्त्रायुलकयंतायश्चद्विजादियावत्सु। सुतामूल्ययकागयत् ॥ वीनकमागृहीतं स द्वापय्यपि
 तयिदा। तदाद्वेनाध्वनंरुल। लिमंकायसवासनं ॥ ॥ गिलकदासमेवथपी ० वृत्तिनाविधिनयम ॥
 दिक्लिनीनादीनां गूलायकाविचवत्। वदासुगुरुतकांसात्मधूलनुनचंरुगामद्विद्विभुयकाया मत्यलीम
 कृलाकतिशयकासाद्विद्विक्लिनी। चद्विदीधोरुमानमो ॥ गृगद्वगूलपाध्वच त्वगमक्लिकलिकायम। तद्विदीध
 द्वादीधोच कर्लुवोचसुगमरुलो। मध्वगूद्वद्विधोच त्वध्वद्वद्वमलिता। वशध्वक्लिधद्विधोचकायक्लि
 वेषा। चतुर्नर्मनंरुलिविस्तर ॥ लूपाचघासिर्गगूलं नकदल्लुकागणयी। सिनत्रखारुवद्वल्लुकागमवः

[illegible]

लोपुक्तो ग्रीष्मदीर्घोक्तानन्दवत्। मर्दिसमन्तं यदवपीनं वासिगन्तुपर्कं ॥ तन्मूर्ख्याश्चयाश्चर्या हागमद्विषवि
रुतीमस्य बुयाञ्च उद्धागा दीर्घखे। मोऽवलिश। धूमागच्छासिनाधना। लंगमद्विषमर्जली ॥ रुंगमर्जुगरीयागमस्व
भनेमृतनोकस ॥ खड्ग ॥ ॥ पट्टिगंखड्गसंकां। चरुद्धनिसमन्तिन। पसंगमद्विषमर्जुगमं मर्कस्यया गिनीपि
र्य ॥ पट्टिग ॥ ॥ जिनरागीकननाहं यथुत्तं किरागन। मखयच्छाद्विमायनं दि। द। लोम्यहामधत ॥ मध्व
खादिरागमक वरुवदामदकया ॥ धास्यदोषो विरागमत्यां मध्वकोद्वय वंभ ॥ कावसुगुर्वं मध्वप्रखां यनोप
यत। गकिनूपमधममक तथातत्तनिलापयत ॥ अ। मध्वगं कवर्क वद्ववक लसन्ति ॥ तदध्वगं नवर्कस्यात्वा
साक्षिनसनाचिनी ॥ तदध्वगं नवर्कस्यात्वा। तदध्वगं नवर्कस्यात्वा। कध्वसुगुद्वया ॥ सम ॥ रुद ॥ माध्व

नमः गगनद्वरगणेशाय ललाटे नमः ॥ नमः कालकं साहिका ॥ जलानायाय कथं दा लकदाह्निककथा ॥ यत्र त्वा
 नास्तुथाकाया वरुमनाकमूषका ॥ षडूनाभरुमनाकाया त्वकमयावकसदा ॥ ॥ नित्यकदासमयवाहना
 यथवेनाविधिः नूवमः ॥ ॥ ५० ॥ अत उद्धृपवश्यामि काललगादिनिधय ॥ द्विरुटियां लवथाका निमिषा
 द्विसवात्मकशादगायत्रनिमेषेण काष्ठाका कालवदिरिषा ॥ लिङ्गाका कलाविद्या कर्णलिङ्गाकलंबधः ॥ कलेडा
 दगारिः ॥ मूढकलवदिरिषा नाया नायथनाजीया ॥ कीमत्याधित्वांगकेशा यदीयतस्तुतिस्तुतिस्तुतिस्तुति
 विकीर्तितशतेन यस्तुतिनहाना ॥ पकृष्टेर्दणयत्र रिषा ॥ तासां माससु मासाया मृदुलेत्रयनरिषा ॥ तासां वैराज्य
 कलेः ॥ गतेयत्रायषशा नकृष्टयत्र गतापि सर्वकालद्विपकथा ॥ ममूका ॥ कूनीगर्भ यतस्वामाधिनाकवे ॥

११

पा १

सं २

न्या ३

यावद्विष्णुयनीसिद्धौ रुवकुनदिशा गद ॥ रुमक कानदलिगं निनिप्रसवेह तिदी ॥ लक्ष्मीपदवसकत्र गीष्वाकजयगा
 निदी ॥ यतीनीसर्वकालेषु लिङ्गाया नायनमेत ॥ ॥ उरुजांभ ॥ नत ॥ लो लिङ्गायायनमरुमी ॥ दुक्तिधमयनपू
 जा ॥ शिववर्द्धिभूयावदी ॥ आदिगहं विष्णु यदवर्द्धं धजादिदी ॥ कयायवर्द्धयसाच्च याम्यसोम्य ॥ यत्रवो ॥ करु
 नृपप्रजा नादु ॥ कानानीमेवनस्यत्र ॥ षड्भासा रुनाया दानयमता कर्तुं कमात ॥ संगरुत्तानं नष्टं तथा वेद
 क्रिष्णयन ॥ अतिचानारुवरु ॥ स्थापितदकिष्णयन ॥ संगरुत्तानं निग ॥ आधिरिषा यतयजा ॥ कमाना ॥
 संप्रसीधक ॥ कन्यानामप्रजायत ॥ समहं कुरुकायध ॥ तदा नाकूपजायत ॥ कर्तुं कय ॥ सदा ॥ गमका ॥ गुरु
 वतिदान ॥ ॥ तस्मान्नस्त्वपयदवी ॥ संगरुत्तानं निग ॥ अतिचानारुवरु ॥ दद्यामस्तुदिग्भक्तुग ॥ ॥ याधि

कल्पयत् ॥ विश्वयनामहा रुनि चिकागममहावल ॥ पुत्रादिना नमश्च कृष्णानां श्रीपकी र्हिता ॥ ॥ जगदी
 जसनावेश वदमाने ॥ ससर्वयै ॥ वदिन वमलरु ॥ गगनमरु कनयन ॥ अष्टौ दटकपाठा ॥ दानस्य पञ्चवाचिता ॥ सः
 नक्षत्राणि गङ्गाय समुत्पन्नि नवाविम ॥ चन्दने च विरिगा ॥ कृष्णाः क ॥ वक्रै विरुचिता ॥ दीपा कृत रुलेयका ॥ द्वाषाः
 लायक मन्दिता ॥ गमनं निजि नयकुं ॥ विष्णुकायाय कामना ॥ नडावी न ॥ ति ॥ कृष्ण ॥ अष्टौ कल दवता ॥ कर्मदक
 मदाख्य ॥ पृथुवी का धवामन ॥ यचम ॥ १० ॥ रुक ॥ सुखा ॥ सर्वने रुलथय ॥ न ॥ समखाक्य सिद्ध ॥ तथ ॥ अष्टौ सति विर
 ॥ नुके कुरु रकारि ॥ नावका ॥ रुदवता ॥ नन्दी ॥ मरुका ॥ दक्षा ॥ रंगी ॥ चरु ॥ मखि ॥ दान ॥ सिता ॥ सित ॥ धृति ॥ विष्णु
 या दानयात्रका ॥ म ॥ युयवदि ॥ धृत ॥ मानाय निवृत्त मती ॥ नम्रा ॥ कसमायुक् ॥ कुरुया लायकानि ॥ ॥ रुक ॥ लिप ॥ नयः

११

अष्टौ सति विरिगा ॥ कृष्णाः क ॥ वक्रै विरुचिता ॥ दीपा कृत रुलेयका ॥ द्वाषाः
 लायक मन्दिता ॥ गमनं निजि नयकुं ॥ विष्णुकायाय कामना ॥ नडावी न ॥ ति ॥ कृष्ण ॥ अष्टौ कल दवता ॥ कर्मदक
 मदाख्य ॥ पृथुवी का धवामन ॥ यचम ॥ १० ॥ रुक ॥ सुखा ॥ सर्वने रुलथय ॥ न ॥ समखाक्य सिद्ध ॥ तथ ॥ अष्टौ सति विर
 ॥ नुके कुरु रकारि ॥ नावका ॥ रुदवता ॥ नन्दी ॥ मरुका ॥ दक्षा ॥ रंगी ॥ चरु ॥ मखि ॥ दान ॥ सिता ॥ सित ॥ धृति ॥ विष्णु
 या दानयात्रका ॥ म ॥ युयवदि ॥ धृत ॥ मानाय निवृत्त मती ॥ नम्रा ॥ कसमायुक् ॥ कुरुया लायकानि ॥ ॥ रुक ॥ लिप ॥ नयः

१२

यं द्विगुणं विस्तृतं दृष्टं विस्तृतं द्विगुणं दैर्घ्यं कन्यासानी सदेवतु ॥ चतुर्न गुलवृद्धिः ॥ दन्यं घां रुक्मा लुमा ॥ पी०
 मानमिति पाकी कृटी मानमगावृ ॥ मधुपा द्वापनराग सागमथायलनायवा यनाद्विक्रदाकाया कृटिकायनि
 प्रकिता ॥ ॥ ॥ तिलकं समचय मधुपादि विधिप्रकाशः ॥ ॥ मृष्टिमानं गता द्वाच गतवानतिमात्र
 की सरुपत्तथहा गवा कयात्तु लुंकनात्की ॥ द्विरुलमयनं तत्र लुका मचरुकेनी अरुल्लात्मकं कृत्वा काटिहा
 मयनाधिकं ॥ पी० वद्वल्यत्तु लुं स्वयमात्मकं गलं की सोरुसमखलं गत्र यथायानिविह विने ॥ कृता कृतिगत
 त्याय स्यात्तद्वद लुतागत ॥ मखलायुधना कया वलुका नाभुमखला ॥ कृत्वा गप विस्ताना यानि नू कया तसुथ
 ॥ कृत्वा द्विजुदीयात्तु लुका वाधि पणवत् ॥ मधुपादि कन यथर्क कृत्वा नीयानि मखला पाकचाधनेना न्यथा व

१८

द्विगुलिका कृमा ॥ सर्वेषां उषकरुया मखलेका तुलायवाग मथति मखलाकार्या यगमनलय नाहुता ॥ उपययि निविस्त
 ना शकुलां नगा ॥ षष्ठां मधुपादि विधिरुदु विस्तानादी गुलेष्टमाते ॥ दिनामादी वृष्टि वाहत्या ल्यव मखला ॥ रुक्मां विधिः
 (गप) द्वा लुला लुलवर्द्धना ॥ मधुपात्तु लुला मय वलं द्वा लुलक विधा पना वदां लुलीगु यकृत्वा द्वययन ॥ उषा मधु
 लता नारु कृत्वा मधुपमेव विना मयक स्यायन कृत्वा वलं सर्वसि दिक्च ॥ उकी मकी तथयुष्टी जी लुद्वानत थिवचा
 सदाहामे तथामको जर्वेवन वदिनरी ॥ यकृत्वा यय (वलेन्दु दिक्वा मय गमकी जर्वे लुकी दीकार्या रुकि मयुथसाध
 न ॥ यकायक यति कार्या वलं वदा म कृत्वा दिनिदिक् यया कथ रागमा कृत्वा लफय ॥ मधुपादक नकृत्वा मागय
 वाधि पणवत् ॥ मको द्वा क विद्यायां यलु वडा यमीमरी ॥ कयायना कर्मशरी यलु ववाय वगती यद्वा रीय वि द्या रुक

[illegible]

प्रका. श्री गुरुसम २

धाक ४ सर्वकामार्थसाधक ४ अश्विवासनदीकाया मरिचक न खेवच ॥ ॥ त्वादि नं चूर्वक्या न्कूलक्षु लमा
 नन ४ गायक सद्गर्वा न्दहदध्व वं दृट ॥ अथ ४ शुक्लं वलं कर्षयिष्युर्धुयुक् नं । तत्त्वा नं चूर्वमेदियवविरु नं ॥
 ॥ चन्दनद्वयका ग्मीनी दा नूदन्धनवा धिजा ४ असीवेकं कनी वेजी । कृष्णसा म्भथानेनयी ॥ घडिं गदकुलादीघा न
 द ॥ अविं गदकुल ४ घडकुल ४ घनी ४ धा ४ दह ४ धावति विरु ना ४ तम ॥ अर्धगुलेखा नं वल वदा समववा । भरवता
 हायपराय सपि ४ वसमिनी ॥ वड नकुल कं यध ॥ लंकाय द्धुलं ह नत् । वडयका वयाक ४ ल्धुलेकं न त ल
 या ४ ॥ वदिका तुल्यकं मूल दैद्यात्मिका कुलाननं । द्धुला गमाने ४ गजा व सद्गर्वा व नत् ॥ वयासम धर्गं न खं यक् न
 स्य न यत्समी कनिष्ठा कुतिवत्कूलं सपिनि गमिनायच ॥ यग्न मुताद्यटकाया दधुमूलसू ४ न ४ अहलेकु वडु कि

ध. द. अ. य. वा. य. व. द. का. ॥ द्रव्यमवसृज्य निवर्त्तयन् पृथक् स्यात्प्राप्नुयात्ततः ॥ तौ सन्नायकौ ॥ ४॥ मूलमध्यायतश्चमातु
 ॥ रुदयनसमस्तु ॥ गन्धपुष्पादिरिक्ततः ॥ समन्तरतनूदशो ॥ तूष्ण्यानिगिरिगद्यः ॥ ५॥ न के कतलहामा क. का. य. पु.
 अवसानक. तस्मिन्कालयदान ॥ पुनवदयमादनात् ॥ ॥ ॥ तिस्रस्तु समन्तरयक. पु. मु. क. क. व. व. रु. ना. विधि
 द्वादश ॥ ॥ यजमानादुनेलक्षि सक्ता प्रसक्तनरुत. पृथक् कृत्वादिमा मल्य. निमित्तं पुर्व्वोदित ॥ वन्दिता
 मयना विद्या ॥ १॥ खौदिगवादका ॥ ममसार्थयिष्योक्त्याः ॥ १॥ तार्थवतथाक्रिय ॥ विरुद्धसतिनेवाख्या वाक्य
 कृयकीर्तिता ॥ नवार्थनियमा मरु वाक्कलनायनियत ॥ नवदात्रा नमा ॥ किंचिदप्यसाधन ॥ उत्सवमम
 सार्थं ॥ समाप्तदस्त्रनं ॥ १॥ श्रुतिस्मृतिपञ्चनं ॥ सुतिष्ठाया निवागम ॥ सर्वत्रिभूतसूक्तं नवदस्रुका नवी

८१

॥ गृहावायथ वावेष्म वाक्कलनायनियत ॥ श्रुतिस्मृतिपञ्चनं ॥ सुतिष्ठाया निवागम ॥ सर्वत्रिभूतसूक्तं नवदस्रुका नवी
 नार्थतल्लक्षे ॥ देवस्मृजायनयनं ॥ नजाति ॥ पुत्रगच्छ ॥ नेव स्मृतयथागुन ॥ स्मृतसमुत्पन्न निर्यं नजातिस्तुकाज
 ली ॥ तृणाकुलकलपयनं ॥ श्रुतिस्मृतिविष्मनर्द ॥ निपूनीसपती तं च ॥ पृथयानकदगकी ॥ हिताहितापदगमक
 विरुद्धितल्लिय ॥ मन्त्रगन्धपुष्पाद्यै ॥ देवस्मृसंयुजयत् ॥ ततः ॥ संपुडिमा विद्या ॥ देवस्मृसमन्तरयन ॥ द्यटिका ॥
 कृयागनपुतिष्ठा लनमादि ॥ गता निवस्माना ल्यनं स्मृती ॥ नेरु नं नरविद्यति ॥ सर्वप्रायान्तिनय ॥ धर्मकामार्थमा
 रुदी ॥ यत्र धर्मनिवस्मानं नतददधसिद्यति ॥ यन्नसाधुवदय ॥ तत्सार्थनिवागम ॥ यन्नदृष्टनिवस्मानं नतद
 दधदधन ॥ साकायवा नमा ॥ दत्तव विरुद्धसति ॥ नवतत्कानवीवद ॥ पुतिष्ठाया ॥ निवागम ॥ ॥ स्मृतिनिर्नाय

सा २

वाक्यार्थमस्तुलायत्र। दद्यामनात्समाकृत्य लक्षणसिखिर्गमया ॥ ॥ मुद्राद्यैर्गमयानाथ तस्मान्नाकासु
रिश्चकमाता। गन्धयित्वा ततो लिप्तां न। धत्वा नाययत्ततः॥ सकृदभा नालयन्मयं नयत्ति भंशने ४४ ने ४५ अकषयच्च नाग
द्वे म्महिषे च विषे च यथा॥ अनिष्टे च रूपादो रूपाद्यो न गतं गुरुं। अवतार्या गतं लिपं स्य च न ह्ययत्ततः॥ ४६ अथ क्वचि न स्मि
तदवैर्गन्धवादि र्निस्त्रने ४७ अथ क्वचि सैव न चार्थं दत्वा लिप्तां पवणायत ॥ न काश्चित्ति लदहं व दक्ष कृतययाय वेशह
मया रादिगेन ते न दद्यादथ क्वचि ४८ कलादद्यात्तत्सुदं मावायादित्य न वरु। पादलो च न नं कत्वा पादकत्वा
ययत्य न ४९ दद्यात्सवयु नयी रं तत्सुदं भित्तवत्तु न। क्वचि मायु न कर्षुने लिप्यत समचन्दने ५० सप्तमसु धूप ५१
वानू वसुद्वयसिनी मूकटक उल्लंघेव हार्जकयूनकं ५२ ॥ सैवाम्बिकां दद्यात्तत्सुदं कठिसूतकी सैवाम्बिकां दद्यात्तत्सुदं

ल३ नरकानां विच्छेदस्य विरुताश्च न कान्यथा ॥ १

दद्यात्तत्र धनं च विरुतं ॥ यतीनाम धनं देहं च गदाम्नावा विरुतं यतीनां पिमूर्ति धनान्यश्च यज्जिज्ञासुः ॥ १ ॥
यध्वानां निस्त्रिंशद्विंशत्यध्वानां यतीनां ॥ सकर्षुर्न च नाम्बूलं दद्याद्विष्णुपथं ॥ २ ॥
नरकं ॥ धर्मवृद्धिर्वा नाकं आचन्दकं वसेध्वनं ॥ पादं न वदत्कला कनूकमस्त्वदा मया ॥ ३ ॥
ननवा विष्णुः पञ्चाक्षर्यालिपदं च विष्णुवदम्वीकृती ॥ संवत्सरां गुणमूलन विष्णुमश्नात्तमस्व ॥ ४ ॥
वै मास्यमवमयस्युत्तम ॥ अक्षय्यतयदनिना द्यावपि अदमनं ॥ ५ ॥
नियुक्ताश्चानिर्दिष्टा दयार्थं न लनवै ॥ सचा विष्णुनिषयश्च द्यावपि अदमनं ॥ ६ ॥
यज्जिज्ञासुः ॥ यामलर्यपि विष्णुः ॥ ७ ॥

या न्मूलादिसकलीकृते ॥ न्यासान् ४ कन ॥ अत्र यथाकारं लिखन् न । द्वादशभङ्गुलमूलिकं । सिताष्टौषविधमनकः ॥ रवेना
 रिक्तं लिख्य सितास्य विधूलितः ॥ रुक्मयः सदाचार्यः ॥ शीकः ७ नृपक्षानकः ॥ निवमन्तात्मकावापी । निवध्मरुस्वर्यपुरुः ॥ अथ
 वनिर्विकल्पन । अगसाचिकयत्सदा ॥ निवध्मसंयनश्चर्व । रुक्मयः रुक्मवात्मकः । यश्च दूपा रुक्मवत् । रुक्मदूपा रुक्मदजिकः ॥
 आत्मसंयुजयदीर्घं । यश्च दद्युषमनु विनागनायवा निवध्मपादु । सर्वयुष रुक्मादिकः ॥ अत्र विविक्तादीनां शुक्लादि
 विध्वंसनम् । वर्मसंयुक्तं रुक्मस्य । अमनेवाथ पिच्छकः ॥ निवध्ममृत्तनायस्य । निवध्ममृत्तनायस्य । निवध्ममृत्तनायस्य । निवध्ममृत्तनायस्य ।
 द्युभाषधीवसुसंयुतः ॥ चूतयगुक्तास्य च । गन्धमात्यादिघृदिनी । निवध्ममृत्तनायस्य । निवध्ममृत्तनायस्य । निवध्ममृत्तनायस्य । निवध्ममृत्तनायस्य ।
 यादविनिवृत्ता मीमांसादीनां वदना । विन्यस्य कलशं कुरु । तांश्च दक्षिणतः ३ च ॥ सर्वं नृपयता आत्मे । मृन्मये वा नृ

यकमात्रा निवादि कलशकार्या द्वात्रिंशत्सन्तमरुथा ॥ तानि च सत्कनीचानि पूर्वका निच संसृता विनानयिमांशान सायुकेर्द्ध
जगत्प्रधान ॥ नवकलागुप्तं न कुत्तिमं कलिलता वरुणं ॥ ततः पूर्वक्रियत्यर्थं स्वर्गं तत्त्वसंस्मृतं ॥ अथुं विविदि नक्षत्राणां
त्रयं यश्चिमानने ॥ ॐ नक्षत्राणां गदकाश्च जीनियादकं तां पुत्री ॥ सद्यः जगत्तममकुं दद्यात्तदसंस्तुतिर्का ॥ अथ दत्ताष्टकं ॥
धूपश्च मधुगणन ॥ दद्यात्तथा यद्वत् ॥ गुह्यं नक्षत्रयश्चिर्व ॥ अथ कादी निति मानि यानि न्दी ॥ सिर्वां सिच ॥ कमणः ॥ मयय
रुनि रूतिकाया नृदा गुनः ॥ मनु च्या सनु गत्तया त्सा मान्यं सर्वतनुर्गं ॥ ॐ नमो रगवत नृदाय दिनश्च नगाय
महात्मने निवाय निव नृपाय हां हो नमश्चि मनुयत ॥ दिनश्च नगाय मनु रितय लिं गनां ॥ सरुसा कृष्णा ग ॥ क
च नरदा उक्ती नय रूतः ॥ मति नरदा क्रमा यस्य तस्य तान्मां दाम्यहं ॥ न काधिक नवत्यं ॥ मूर्द्धनियं स्वर्गं ॥ केशव

[illegible]

不

[illegible]

नीयतागन धातिनासीपकस्ययता नार्द्धना धनतिर्यग्भ नन्यूनाधिक विरुमा ॥ नविंद सकलानृका दृष्टिः ॥ क
 रुदायिनी ॥ सोम्यादाद वादृष्ट्यर्थ विन्धे प्रखासदृष्ट्यः ॥ वरुका नाके सायाध रग्याकुनादिदृष्ट्यः ॥ लक (पाद) ने (वा
 दया) ऊर्ध्वं च पुन वसदा ॥ आत्मेवं विधिना सम्यक् ततश्चाना धिवासनी वसत न धिपूवस्य तावद्य पुन चैक ग
 ॥ अधिवासनं श्रवणं यथागः सिद्धिभति च ॥ पुनर्दि स हिता वासा नो निरयमपूवकः ॥ एकस्यार्थे निपाता
 ना मनकाथ तयामनः ॥ अस्तु न स्य कर्ण दत्ता रुतीयना रिमनुयता ॥ नयनार्थं पदयाच पाद्यं च जात केन तु ॥
 वासासिं गय पुन अज्ञानेन विलेपनं ॥ पंचमन सज्ज दया दूर्यवे दक्षिण नरु ॥ पुनर्द द दत्ता हे ध सज्ज च
 न न वाने नैः ॥ धीवास सला र्या अ स्वपु धूय धूपयत् ॥ रुदादेयं पवित्रं लु पदीयं म ध मन तु ॥ नैव यो दिरु

न १

८१

नायने उ ॥ कदादय दुरुय गमन पुन मनुवा दलिकः ॥ मूर्द्धनि दाद्यट ॥ कथा नूदजफ ॥ सपुजित शक पिला वध
 यत्यं च अनामः ॥ सपयस्तिनी ॥ चतुर्दश न व चमन तल्ली वध वनं ययता च नैपाय लप कुरु विहित दम धा
 वन ॥ पुन मूर्द्धि धने ॥ कला सहितः ॥ कन सुसंने ॥ सुखप्रतिदिन न्मरु रुद्रया न्मधोगं गुनः ॥ द्वितीय क्रि कन
 स्नानः ॥ कलये सान्विता वती ॥ पुनः ॥ समूर्द्धि यः ॥ स्नाता वमरु रुद्रया रुद्रितः ॥ कन ममल निघा धि द वस्ताना
 दि कश्च नत ॥ ॥ निलकण समुद्रयं यति का न तुल कला दानुया द न मा विधिः ॥ (शार्क) ॥
 निवः ॥ सर्वगेतः ॥ सूक्ष्मः ॥ स्वय मल्ल पत खिलं ॥ सूट माचार्य नृपं धर्मं रुद्रा का च नाचनं ॥ सुवैद्या मयि वधु
 धमवती धु कलं धनात् ॥ अनूय हायला कानां पुन लं स्या चि व द्या ॥ अयं दिज वेद रु समधी न्त

मारुवता॥ तदयते मुयराकसेता वरिप्रसाधर॥ दनरिमुसदुसेते नावायनिवगाननागसादाना
 चनेरुकोरुलसादासुकमता॥ सकलीकजर्भकतादददुघादिकप्रयतागतअसुदुर्गलिमभय
 यथादिधुयनः॥ तलनायमयलिमदूवाकागुगतनेवा॥ उधनसुयमावायः॥ यथाकुरुकिलेसादात
 कालममलेगीनगायन्याविधवाउरा॥ दयालुगुरुत्वाययटलवर्धकचित्तातस्तुविधवाअश्वी
 सवलरुनसंयता॥ सयायसयसुरुनसस्युभयः॥ कृणनवा॥ सययनियनसाधुनिमस्यनियनः॥
 यनः॥ विधिनेसयनंयथादाचनदमिकः॥ स्वयं॥ ॥ मृत्तामिमयगमसुः॥ रुसाद॥ यथाधुमः॥ येः॥
 गथनदधवा मधुनायंयवकलेः॥ मृदुसफाकना गद्वनमिसफविकात्रकः॥ नखोमियवतिः॥ स्नानम

८७

लाद्वेनकदसुकानानारुलेनथावृतिः॥ यथाधुमः॥ गगनव॥ स्नाययतुयसमकुन नूदेवाद्दयनवा॥ यव
 गमधूमजः॥ यत्नेविलेवलेसुधायत्रः॥ उदयस्नाययत्यमृतस्वकुन नूदेवाग्निमा॥ सवीधियलनायिन
 तगायनगकिः॥ तथकाचनगायनगमृगमलिलनवा॥ धान्यादकनचकातसुतागं॥ अदकनवा॥ सित
 वरुनदवर्गंयत्रिमृदुसगभिना॥ यतलिम नयद्वीस स्नानस्याहाकनमनः॥ स्वेः॥ स्वेमलेदनादीनामि
 यममयिसर्वदा॥ ॥ रुलनयवगयनयश्चरिमधुनसुधा॥ मृदु प्रीयाधधीरिधुधुआगीधधनीऊले
 ॥ सागनादकनलाधुगभयंयथादलादकः॥ महास्नाननदिकस्नाने॥ स्नायीवाउसरिः॥ कमाता॥ अस्मा
 दिहूलिसंगुदी॥ यथमस्नाययद्विवा॥ कीर्णगमसुवधुआग्नीनरागयवकः॥ उक्तायादधियवमस

अहोर्गननननन। कयिलायाद्युतंमधुअध्यानमभिरागक। गममूर्त्तीलवभुयायुअनदयरागक
 । रुम्रायागममयंरवकमऊनासंसदायुवि॥ मध्यायमयका मृदिकसुतासा दियाउरा। निवेनेकः
 त्वमाताअयंचरिवोधकायिला। कृमामृनाद्धरागअसदाखनारिमलिता। चरिमुयंचरियके॥ स्ना
 नमञ्जीविभधने॥ यथादयिद्युतकोदखले॥ स्यात्यअमाधुन॥ ॐभनाध्यानवकाकउआआतास्वम
 उके॥ वसीकगिजिगेमादितीजजरुनदादृता। वषमृगसमस्तातायावकाययसरुवा। नयदानचउ
 म्मभिम्भुतारिअविशुद्धि। अऊनकालनातृथीकमतमुकलावता। वकलादम्वना। गमकवटवाधः
 त्वचांजले॥ कवाअरुहतीयनस्नानंरुकरतायदी। अदिठकीसहासिंदीकन्याकिनावदूयका। निदि

८५

आ।

चिकावलाभूले॥ स्नानंयुअनदावदृता। त्वकाभूमनागाकतायय० दिरिस्तद॥ धाशास्नानात्मदीयकसया
 जातनपुद्धति। सर्गविभालिधिरुनभयशामदितनच। समुद्रयमहादवकी। थीले॥ स्नाययऊले॥ अऊ
 गभिययागअककात्रेनवकथा। यकनंनेमिषानुअनीथअकनलरुथा॥ चरही। थीम्वम्वस्नानाननजल
 त्वविशुद्धि। जाकवीयमनाकानीसुनयूभनेनममदा॥ कावरी। गुलुकीसिन्धुसिताताप्रगुरागिका॥ स
 फणदवरीश्याता॥ यभनद्यामहाऊले॥ स्नानासुननिचावर्निमिषुगे। गुअमलुतेश। कावः॥ कीवादधिसह
 कूनसादसुनादका॥ लादुगरादिकयुति। कृयात्त्वक्षेत्रसागना॥ चतुष्टामम्वरिस्नायस्यगीउद्धेनननन।
 यथरागअवेदूयवदंवेवसमाकिरं॥ कृटिकयअनागअनाजावरुसविदूम। नीनमनकत। अवेकके

गनं सृष्टिदिरुं। नत दत्ता दकेऽस्नानं महा रूतिक्रम्यं। अथात्र मनुयूते सु लिभ नृय विष्णुधर्क॥ कर्पूना गुन
 कसूत्री कांभीनयदनादिकेऽजाती लवङ्ग ककुले यादुजात सुगन्धिकेऽस्नाययन् श्रुताय न अजाते नारि
 मन्त्रितेऽगन्धदाघविनाशाय यथावद्विषुद्धया यदुनी काकुमा लुने नीलवृका लोके का मालतीत गत्रा
 णमक दमयम्य कमलिका॥ सुदका गालमात्रं यन्नागवकुलानि वा केहि को नो दके हानं कथं कस्य दयधि
 काशया टलाडाग नमाली कृष्ण किं शु कसिंहिका॥ कदम्बं वाति मकुञ्ज कटज नागयुष्मकं। मूव कृत्वा ऊयणी
 च वृष विवक यष्मकी चरित्र शेष विरेच स्नानं गद्य विषुद्धि कृता। विल्लाकुमा च नानम रुनसं लकनकी।
 ककुला मलक डाका जाती हलपवृष की दाडिमा इम्वनं जाम्बूवेकन मल विम्वर्कः। पात्री नाम लकशील

२०

कथितुं च कलकथा। वदत्री वीजयूनश्च कत्रमर्द सतिदं की। यूगपदिकं यथा लारु मी गनाघात्र मन्त्रित॥ रु
 लस्नानमिदं यूगं कर्तुं विष्ठा रु लयदां ता यक्ष मन्त्रे वा यिबी आयेऽपश्च हिसुद॥ तिल गंधूम मन्त्रादिः
 यवधाना यि यदुरि॥ यूवा किं मृत्तिका गंधं कसुमा यधि संयतं। यश्च वस्त्रा रु वे मने मी हा स्नानं रु रुयदं॥
 कदम्ब पञ्चवासी न कुरु ने कुत्र वा निती। सगल सलन वा ग्रयं द नमनेऽस्नान मरुमं। जाम्बूयण वठाया मी स्ना
 नं वाघात्र मन्त्रित॥ सांभकं नकुज काज निराम मन्त्रितं वनं। आया म्वा धि दला स्ये न स्नानं अजात मन्त्रितं॥
 यूगा स्ये नं वायय स्नानं वर्म समन्वितं। सोमं वट कदा स्ये न स्नानं चामा रि मन्त्रितं। सरुस्म विल्ल यरा स्य
 स्नानं मे गं निना निती। नागयण नन स्नान मान क नरु मन्त्रितं। वस्त्र पण्डिता वा मी सकृन् न समन्वितं

रुनीगंखनवेसुर्थः काहलाधनिरिः कलेः यत्रही मझलाभागेः स्या ययद्वयरुधजं गगानिर्मस्य
 वासुगददात्तच मयद्विवां अर्घ्यदत्ता उवकुलवसुभा कर्षयेऊलं यथा निवेतयवाकं विष्णुदोचम
 माचनं तास्रानादिसेः स्वके मने प्रउम्भुस्त्राहिदाधिकाः कृगमूलाहवका उयद्य (मध्वमृदहिमाः
 स्त्रानेपूर्वोक्तमुक्ता प्रगम्भादादगविष्णुरिः द्वालिं गभाउभाधारिः कृम्भुः स्या यीवगादिरिः चलोच्चासि २१
 ययत्ननस्त्रावगद्विगुणं कमात् नैवयते लयार्थचस्त्रानवसुसलाकिका गत्वाहुनिहिनामञ्चमरिमञ्च
 गगात्रयेता जवयकमुदादीनां लिम्भानादिययचक विष्णुदिलययस्त्रानादयो वस्त्रानमिष्यते ॥
 नितकक्षेसमस्त्रयविधा लिम्भस्त्रानवसुसलाविधिः ॥ (सक ४०१०॥ ॥ लाहादिधातुलिंभनि यथ

गगानकानिउ ॥ गदागस्य भवेनूयाच्चनसार्गे भाञ्चवेकमात् ॥ स्ववीऊहावनाघातेनकादिकमयं चकेः ॥ विष्णुध
 स्वादिरुगानियमनूहिनुकाजयत नयसद्वभुसका नूदानेयकादिउनूयक यश्चवद्वतगामानिकलासवा
 शनिवस्यच ॥ गगावद्वचगेधिययषधूयक्षदीयक नैवगं पूर्ववद्वयाचवनीमूध्वमलिता ॥ अजननेरुमनु गद
 यक्षिणूध्वगडा कुरुमीभानदवधेनामत्रनत्रमनुग ॥ जवमिष्णुमहादवमभुधं सम्यविश्रवा वालूकाविकि
 जली १० रुधकभादिवर्जिता ॥ अननूयजयसी १० रुदाचध्वनिपूर्वक यागयंभु भूयादरुनिजाना रुनाय
 कान ॥ गद्वद्वविन्यसगखदाठमत्रविरुचिताधमोदिवनभा ॥ गेम्भासुधधमोदिगभुकान ॥ गच्छादनवद्व
 ल्यके चिंयवामादिकसेन ॥ विदग्धवदलं कुरु मधुयययकलुकी ॥ उजायाऊ लसंस्त्रायाम्भुयं नथनयत

दागलुजयतसदा॥ नूदंयूयसूकं॥ अकाधायंयुकि॥ वाक्काभिरुमेरुअधुयु॥ पूर्वतापैजेताअथ
 वलिनसखेवसूकं॥ खनिकं नीलगूदं॥ गरुयनिषदादिकान॥ कालीकनालिकनूदं॥ याम्यवाथ
 वल्लायजं॥ लिभाहवंगदअनियविर्गं॥ गय्या० क॥ काणमकुविदअनं॥ त्य० यूदक्रि० सदा॥ ॥ ततअ
 र्थुदत्तावेआरु० गु० ४॥ गिर्वं॥ यदाखुवन्न॥ वाधिचिलेव॥ स्वकलानि० ४॥ नत्वाधायरुतामकु० श्रीवरु
 गन्नवात्मकं॥ कलदगिसमाकात्रचिद्वं॥ तं॥ समक० ४॥ पर्यष्टकसमायूकं॥ सदेवमकुनायकं॥ सर्वशुद्धाति० तं॥
 वज्रगल्लवज्रजम॥ ॥ अ० ४॥ कि० न० का० ४॥ कालानि० त० का० ४॥ अ० वी० वी० न० व० स० व० म० ह० नो० व० व० न० व०
 ॥ सा० ग० ल० श० या० ता० लं० म० ह० ग० लं० ग० रु० कि०॥ नि० त० ला० कं० व० न० कं० व० आ० रा० सा० खं० व० स० फ० मं॥ रु० ला० क० व० रु० व० ४॥ स्व०

ला० कि० रु० न० रु० य० ४॥ स० ह० मू० क० मा० द० त० व० र्म० वि० भू० रु० था० रु० न० ४॥ द्वि० स० फ० रु० व० ना० न० रु० दि० गू० द० ग० त० सं० यू० तं॥ व० का० लु०
 स० उ० नू० प० स्या० च० रु० ना० थि० दि० व० त० ४॥ ग० त० का० य० रु० य० मा० ना० रु० त्म० म० या० ज० ने० ४० य० ध० ॥ उ० वी० ग० त्वं० स० मा० ख्या० त० ४० ला० दि० दि०
 रु० र्म० क० मा० त॥ अ० म० न० अ० स० नू० त० खा० नि० ग० न० थ० व० त० नू० य० क॥ स० र्ग० ४० ग० द० थ० य० जे० व० त० मा० ग० लि० य० थ० क० मं॥ ना० सा० जि०
 का० दि० व० म० लि० अ० र्म० व० दि० दि० या० नि० वा० रु० द० गु० रु० क० ना० धी० व० स० वा० क० म० दि० या० नि० ४॥ म० ना० व० दि० न० रु० का० न० ४० स० त्वा० दि० व० रु०
 ग० रु० यी॥ य० मा० ना० ग० थ० वि० द्या० न० नि० य० ति० थ० क० ला० न० क० ४॥ मा० या० र्ज० व० त० थ० वि० द्या० १॥ थ० थ० वा० थ० स० दा० नि० व० ४॥ ग० कि० अ० रु०
 ४० य० न० रु० च० नि० वा० थ० ४० य० न० मा० थ० य० ४॥ ग० कि० वि० वि० व० थ० थ० मे० उ० ४० रु० व० ४० नि० व० रु० ४॥ य० च० रु० त० च० त० मा० र्ज० व० दि०
 क० म० दि० या० नि० वा० म० ना० व० दि० न० रु० का० न० ४० य० रु० ति० रु० स० य० ता॥ च० रु० वि० ग० ति० त० त्वा० नि० य० रु० ति० वा० वा० म० क० रु० य० ॥

त्वस्यैव यन्मया यथा नागमस्यैव यथा लक। मां स विद्या समाख्यातानियति द्दयं ह्मिता ॥ कलाकोटिः स कला
 लोमायायाः (सर्ववह्मिता ॥ विद्या योष गतानिहमीश्वरादीन् दूस्सं ह्मिता ॥ नादसुदानिवा रुयः ग किस्म ॥ न्मिका दय
 ॥ यच्च जित्तत्त्वानि चिद्रिकायां ह्मिता निशु। विद्या राजन पुं ह्मिता तदूर्ध्व निष्कल ॥ निव ॥ मनु ह्मिता निव नः
 विन्यास सिद्धि मूक्य ॥ ॥ ह्मिता तत्त्वमात्म तत्त्वा शब्ददाया यं मूलादिक। न्मिता उरावयद्यापि निव नूयं च यत्यनं ॥
 पन्नादि यन्मया यथा विद्या नूक नागमदिके। ॥ न्मितादि निवान् ह्मिता तत्त्वामयत्कचित् ॥ ह्मिता न स रुयवा व
 म्मा मं स वयं नू ॥ निव नू म्मा म्मा तदूर्ध्व दूर्ध्व च नू म्मा ॥ तदूर्ध्व उदूर्ध्व सिद्धाद र्ध ॥ ह्मिता म्मा ॥ यच्च
 म्मा म्मादि गतयैवके ॥ अगम निदग मां गन ह्मिता मयत्कलं किमात् ॥ वत्तु नूदादि विद्य म्मा न् लाक म्मा न्

[illegible]

लिम्बस्य निधिना पूजा तथा यादव वंशना ॥ शिरा गस्य य वंशना मोद कि सर्व द हिन श पंच रा ग य वंशना क ह स्म
 य क सि लि ना ॥ पूजा वा द्य य वंशना व द्ध न य वंशना द ॥ सम स वंशना ग स य वंशना क य का द य ॥ क ह वि वं
 ध र ॥ सा द्ध पा र्श्व व नि म ह त् स र्व ॥ त थ नि वंशना लि मं स नि वि शं य थ र वं ॥ वा लि त उ म ह द्ध र्व स्म टि त द
 य स र्व य ॥ व क च दी य त पूजा ज न क उ क ल ह नूजा ॥ स न द्ध न क र म ॥ स्या स्य न त या धि स म्भ व ॥ वि नी ल उ स
 धे ना न ॥ स्या क्मि त न क र वि र म ॥ अ यं उ स म्भ वं क्ता ता दा या धं मू हिये स्म ह वि द्वा य न क स न य स्म लि
 लं द नि का रु म ॥ ग त म श र न द्ध ता ए के क स उ स म्भ वं ॥ अ यं वंश नि व न क य वंश न त न ॥ उ र ॥ क य
 म ॥ लि मं क्ति तं वा म श र ॥ उ र ॥ द्वा स मं स्या लि सा दान म्वा व न लि म्भ म्भ र्थ ॥ श्र द्धा दी नां च वंश नां

२८

क
 ॥ क्ता त्वे व मा द्य स क्ता उ क्ता म्भ र्था त्पू र्ण नि मि ता ॥ त स क्ता नि मि ता या द्य त द्ध वि द्या य लो
 नि ला ॥ व द्ध नि ला य मा द्य न र्वा त क य वंश ना धि र्ता ॥ वंश ना ज नि ला र्क र ग कि म नु ग वि न्य स त् ॥ अ न क्ता स्या य ना
 कि वि द्वा य म न धा लिं गी ॥ नि वा क्ता त्व या द वि क्ता त्व मि द स र्व द ॥ या कि ध्वा ना य थ र त्वा स म त्वे स र्व ग म य न
 ॥ सा व र्ण रं हि ना धा नं लि मं स क्ति र्वा वि न्य स त् ॥ उं या धि नि न मा न नं ग म्भ र स क्ति र्वा व ॥ अ य लं स क ला न द
 लां जी ति व वा म्भ र ॥ व द्ध नि ला ना य न म नु ॥ ॥ उ द द्ध र्वा म्भ म नु व या क य क्ति व वा नि ना ॥ स र्वा य क्ता द न व र्ण
 द्ध ता व र्ण वि न्म ध य त् ॥ द र्ज न्नि र्वा स य क्ति नि व न नि व वा नि ना ॥ वि लि य च द न ना दो धू य यि ता नि ला त ल
 ॥ स हि न श्व न र्क न य स्य न त्वा य थ र या ॥ स दि गी न म नु ग क्ता वा य न व न वा ॥ यं व व क्ता न वा न्य स्य वि

22

माकि २

[illegible]

[illegible][illegible]

साहस्रयादसिनागरी॥निलासुखश्चकित्तिडनिषधायनिवनवावासा॥यतिक्कताहृत्वाघी०॥वृत्तिनूययत्॥की
 प्रदोत्रुर्गलिमंघी०॥वृत्तिनूययत्॥नि॥सन्धिसुदृढकञ्चविदधीतययत्तत॥यथादद्यश्चयश्चदयाः
 लि॥असुरावित॥तत॥सूयत्तिर्गद॥वेध्रीयाद्यालतुना॥हृत्वामंमलनिधायितीत्तादृक्काययत्तिर्व॥वद्विद्व
 द्भवेत्तु॥अरुने॥वृत्तिर्गद॥यजमानवर्जलुत्तु॥सर्व॥सर्वकैर्जने॥मूर्तिर्ये॥नित्यि॥साद्वमनूलने
 ॥निवतदा॥तदयतागुर्गङ्गासुगृहीताद्यराजन॥द्यात्रद॥भगति॥अथर्धदत्तायव॥गयत्॥द्यात्रवर्धवि
 नाद्यात्रादस्यु॥गुरुस्यव॥गयत्॥द्यात्रवर्धनान्नितधमिनरुसेवतद्वत्त॥यत्तात्यावभायद्वरुयथादृश्येनसंसृग
 ॥दिग्गामस्यर्गनात्कृयाहृदिभूकाश्चद्विभं॥रुमतालेलायीवखद्वीमकांसुवत्तुकी॥गंश्व॥धनं॥गुपीदयाद्वद्व

[illegible]

(येवसंयुक्ता आत्मतत्त्वव्यवस्थिताः शरीरकयश्च स्मृतास्ति सर्वेष्वक्षरसमन्विताः॥ विद्यातत्त्वहिताश्च तसाधिका न वि
 दूष्यन्ते॥ गतिद्वयं निवा मक्षरं निव तत्त्व समाप्तिताः॥ ३॥ तत्त्वयापि नाख्याता सुखानः षष्ठिधा हि सा गतिः ककादि
 विस्तारं याजनेनैक समाकुर्य॥ यथाऽपि धिक् तत्त्व ऊलादिदिनुर्गमात्॥ गच्छादि गति यथैकं यं वदेवाधिदेवतं
 । ३॥ गत्येवाधिकं कर्तव्यं प्रमाणं यी ० मीध्वनं॥ आत्मा हि गायत्रं गमु म्यश्च वक्तुं शिवा च नी । उज्जु मुद गतिर्युक्तं जटा
 मुकुटध्वनिः । चन्द्राद्वक्त्रं मूर्धनं नागयक्रा यवीतनं॥ गले दवे सुधसिद्धेः सुयमाने समायुतं । ततश्च
 नमस्तस्मात्तमी गानमिन्दु नूयिष्य॥ सञ्जातं न संविद्य वामदवन विन्यसत । दहीदहयथयागं यथा मनी
 वसुधतः । बाधं क्रिया निविशु कुर्यन्नासुतं संप्रतः॥ नादमश्च हिता विन्दु विन्दु मश्च हिता धनिः धनिम

१०२

दि ३

अगता गता गता नाम अगतः १॥ गतिमश्च गता सुखा सुखामश्च गता न विहा न विमश्च गता गता नाम अश्च हिता
 १॥ निव ॥ सूर्येन्द्र विम्वयाय ददकी हता मृती कला । अणायि च तथस्मृत्वा दृक् क्रिया सन्निवर्धयत्॥ पण्डित क्रियमा
 उक्ता कंचल नयदि । तदादि च वता हामः काया गति धदा षट् ॥ यस्यादि निवर्त्तलि मं गस्या गति चकानि न
 यत । अथर्षा उरुवत धोर्गं कर्तुं वा सु विनूयकं॥ तस्मा रुद्रादुर्न दया दिव्यादीनां यथा हिता । गजं कर्णं लला
 यं च दासी मत्स्या मृगे विर्कं॥ वृषं पशुं च तस्मा कृत्स्नं मत्स्या धनं कय । यद्द सुखं कता दया दृक् कथं लम्बसु
 र्कं॥ पन्न नवा लेय विर्गं यदी च कुं कुर्यात्माने ॥ चालितं गति तं शकं पणत सुस्ति रं कमात् । यमदुःखं
 कञ्चेव वागदोर्गं वृद्धि कर्तुं॥ अथ सन्धिः संपूर्य की वला रुमलेः ३॥ उरुः । सिकारि त्काले मुर्गं खमूल सम

[illegible]

चिदा मसंयुता क्रिया क्रीयी ० मध्यस्थं ज्ञानाख्या क दधः यन्नात्मानं च विधदवानां सन्निधस्य उकात्रगां सर्वम
 कुदिसंयुक्ता लोकान्तरुका मया ॥ अहं लिङ्ग महादव रुवसन्निधि मानुदा । सूर्याचन्द्र मसौ यावयावक्रिष्ट
 तिमदिनी । गावहृयाण्डवर्गस्तु गव्यं च कृया यरु ॥ नवमूर्त्ता निवाश्रुं उ मनुमूर्त्तमदं वन । यामदया नि
 संहान द्रुम्यन्वला कर्क ॥ नूदन्द् विन्दुना दार्द्र्य जीवहृत्त निवेन्यसत् । लिङ्गमूर्ध्नि कर्तव्यत्वा निवमष्टग
 त अयत् ॥ तनसन्निधमायाति वक्राङ्गम नियन्त्रयसत् । दिङ्वाद्यादि वक्राणि गकीयी ० उ विन्यसत् ॥ अघा
 नद्वयं आत्मा विन्यसद्दयक त ॥ यन्मनुजिनसुस्यमित्रः स्नानविचिन्तयत् ॥ निखाब्धं नदयं त निः
 स्वारुतं विचिन्तयत् । कवचं वामदव उ आयत्तु आदिसर्वतः ॥ सयाजातं न्यसदं रुक्ममूलादिकं यन्

॥ धेता धेता सुयमन्ता वाक्यं कृता निना धयता मूढा गक नृनीया रुया नृधयैक मागता ॥ नां पद अस्मिन् रावन
पयाग नृगुनोक्तिः ॥ तास्यां स्याच्चिन्ता मन्ता ओच्यते निवाक्यया ॥ धेता निना धनं कृया नृधयैक यन वर्मनो ॥ अ
धेता रघो नमन्ता स्व रुदय नवा रुवन् ॥ अज्ञा ताया सुयाम् मूढा यधनं कर्म ॥ धिना ॥ ता रिन वस्युः ॥ लिङ्गं पि
ष्टिका सहितं गुनू ॥ अज्ञाना सुयमा गं कृता निना धनिष्ठता गथा ॥ यसा मायं यमी मूढा ॥ स्यां भयं व मूखी कमा
नू ॥ पिष्टिका रुजगन्मा ता लिङ्गं ता श्रुते ना वन ॥ संयाग ॥ निवर्णं यार्थ ॥ यतिष्ठाय पगी यत ॥ धर्मार्थ काम
मा क्कार्थं यून्यार्थं वरुण्य ॥ क्का यनं क ऊय ध्याने ॥ निवर्णं लरुत सदा ॥ या क्क रुखि ध्वना नृधयैक लिङ्ग नृधयैक
ना निवा ॥ दूर्गम्यामी ध्वना रावा व दिश्यामा धवा रुयो ॥ यतिष्ठितं यदा लिङ्ग नृदी गसा धिना गुनू ॥ ऊय स्या गु

निर्य सर्वसंयुक्तकारकागुनाप्रकाशसालानं कुरु निवद्यदाम्ना ॥ हृषभादीन्गुणोदत्ता कलशायनकन
 तं नवंपतिष्ठितं लिंगं वसुधायधनावहं ॥ नाशुभं रिक्तमात्राभं कुर्याच्चोत्रात्रिनाभनीनाजाविजयमात्रा
 तिसृसतीसृ यजावला ॥ क्लृपकस्यसदावृद्धिर्ध्वतशायथा निनः ॥ उं षष्ठाध्वनवावृक्षासुयकामहि
 षावृषा ॥ नित्यिनः कर्मकर्तृवत्सर्वयाकिनिवालयं ॥ निवमन्तात्मकलिङ्गं क्लृपितं निवदनिके ॥ रुक्मि
 क्षिपदं रुक्मयमन्यथा रुक्मिण्यय ॥ दद्याद्वरुणसुतं रुक्मिण्यय दीयको ॥ दवालेयय नं रुक्मिण्यय रुक्मि
 नं वसुकन ॥ रुक्मिणि निवयानित्या द्विजादित्ययत्नतः ॥ ततः स्वर्गं वन्दे क्लृपयय द्विधिना सुतः ॥
 पापघ्नमध्वनालया नरुणा यिरुत्रा गनूत ॥ नावनया किना गघ्नः रुक्मिण्यय वसिष्ठकन ॥ तिलानां ययि

रुषीयेत्रियघ्नश्चकनानागायस्यसुरिकारसफरुवर्लंकमाता। अर्थस्नानं तथा पूजा अस्मदनिगक
 न। वन्दना गुणकपूर्वकृद्मायेचलयनं॥ वदन्त्यनमकुलवसुंधूर्यंयविकर्क। अजननावनाजेवदप्यर्ण
 पून्यमहु। श्रीमाननरुप्यादिमूकठंकुलनका॥ कठकंकटिसूर्यंयवद्वर्चयद्रवत्। कुरुधजविः
 तानानिवांमत्रंयथादामर्क। कविहनेवगुञ्जोसर्वस्वतानिदाययत्॥ अर्वसूपूजितंहेत्वादवदवन्
 दध्वर्ज। यद्यद्यदुवहूमो ननेनकुसुमदकिर्ण॥ पूनगःपूनरागायविक्रयारुगर्वनूदनः। सूकनंदसूकन
 वापिष्कानातृकानतःकृतं॥ तत्सर्वमात्मनासार्द्धमया। उर्यनिवदिती। तस्मिन्कालपदागयादकिर्ण
 निवयानिन॥ आचार्यायारुमादयासाधकार्यादिवर्जिता। पूनकायाद्वितादयासमयित्ययोश्चेदिका।

१०५

२१

एतन्नवतिर्यत्रयादिकवदिदकिर्ण॥ यथानकिर्णजितियादयादानंयथाविधि। पकृतिःकात्रका। येवदीः
 वाचकयथादिकान॥ कीर्थिकान्गभयकांनूहंनन्नायनउर्ययत्। नाजोमहासुर्वक्याकैखरुयादिनिस्त्रने॥
 एकनालुंरिनाउमासफनरुमथापिवा। दग्धरुषकृवीगमेदानंयपनिक्कदं॥ गसनाययतीमात्यान्दः
 याद्विहानूयतः। सर्वसमंसहसाद्विधातत्वाधयकिर्णं॥ प्रमादिषादिवागुद्धिचिदादिगच्छतावर्त। सरु
 याद्विगताद्वलिं। गतिनाधकपूना॥ वरुसंस्कायनंकुयात्यतिष्ठोपूर्ववत्सिनां। दग्धनां। कतकुरुतन्म। धर्म
 उरुष्यं॥ यगरागमंअउदिहलुस्त्रेकेकुकागतः। अर्वसुहसकाष्टानिकुयादिकाधिकातिव॥ स्मयानितयूनि
 मानितसंस्कारिविधानतः। पूर्ववरुषयागः। स्यात्सिंघवृत्तिविधात्मसु॥ हीनानाहुविधिअयंअकानांदि

तिपूर्वकं॥सकृत्सर्वं कृत्वा तत्रादिकं न सक्तं॥तजानयमहालिङ्गं यन्मुखागनवृद्धिमान्॥अष्टासमं धनं॥
 दद्यात्तत्रवर्तुलीम॥ध्वजाश्चक्रकायकी दृष्टकाश्चनयन्ति॥संस्तुयामस्मलीषामोक्तमुक्तेन च यादया॥
 लिंगादीनि दृष्टव्यां च मूर्तिर्दृष्टतु रि॥यथा रुक्मयस्त्रीयमात्रका वदरिजे नै॥स्वतन्मत्तमाख्यातं यन्मु
 क्तयनाय च॥सर्वरुक्मलकाष्टान्ममस्त्रीदि विर्यं तु वा॥मस्त्यन्नातयन्काष्ठवधविनिधा जय ग॥
 काष्ठयट्टं तु याजयत्तारुक्मकं॥स्यात्तदृ सकटं त्वं वृद्धिमादिकं॥धर्मास्तान् च याधर्म नै॥
 नयदुर्वा॥धवमास्तु वत्वाद्यै न चो वददो न रि॥निविकाशवत्॥काष्ठयद्वयं दृष्टयत्तदृ॥विष्णुस्तु न
 तं लिंगं कीलके स्तुतिर्दृष्ट॥तयन्मुखा स मूक्तया जिलाया॥अथ विनयसत्॥त्रलाक्षं वा दत्तं नान्यत्सोकाष्ठ

१०५

यदृष्टं समं॥तद्विषममयलिङ्गं न त॥अथ क्रियन्तु नैशासेयश्चक्रमिरिमर्द्ये दिग्दिग्माजिते स्तुतं॥वसेना वः
 विरंभं त्रिष्ट कावश्चिर्न विदि॥वालुकायु निर्गृत्वा ऊलाक्षं नय सक्तं॥तस्मिन्कंठे कर्कशत्वा स्त्रायामं
 जान नय सक्तं॥पूजाहं मयं जायं च क्रिया द्रव्या दिपूर्ववत्॥चललिङ्गं द्विधा कार्यं पृथक्कीलेकयी० की० वा
 न्द्विरिन्नयी० तु सोयी० रिन्नयी० की॥स्वस्वकृत्तमदी वा चो मन्त्र न्या सक्तु लिङ्गया॥न सवकोषधी रिन्न
 पृथक्की० तु याजयत्॥आत्माश्चान क्रिया ग किं लिंगयी० यथा कर्म॥तुं स्ति नवलं लिङ्गं संस्तुयं या ग पृ
 र्वकं॥यका कृत्वा यन वक्ष्ये च रुद्र मत्तान्॥उद्धासी ना व सफा वया न स्तु चान्त्रिक्तं॥आत्मानं च वि
 या पूर्वज्ञाना धिवा सनं त॥हमं च नथ याग दि स्तु मन्त्रे० यी० पूर्वकं॥सकृत्मी कृत्वा ग रं वक्ष्ये स्तु नै०

ममृगशा नरुष्टुमनूषाक्षं ममृगं सं ८ क मालि रिशा मनूषसूत्रयामेक्ष त्वर्द्धी स्थाययत्सदा नरुं सं
स्थापनं नरुं धनायुधं नानागनात् ॥ कश्चलमनकरुणा स्वस्तु नस्तु उरुतिदा कश्चन सदसंयुक्ता यजमानं
विना गयत् ॥ ॥ ततो वक्ष निर्लान्यसीत् ० यष्टा द्वि विस्तृता ॥ तद्वदे मूक्यतया नवगतं कुसंयुता ॥ पूर्वव
यत्नविद्यासादिमालि लोकतद्गु ॥ उद्धा द्वि तज्जसायाया आसीन वनं ननु ॥ सपिगायायि विभवे यानस्तु
चान्त्रिकृष्ण वायनास्तु ययत्या मृतं नृपे न नित्रा धनं ॥ यत्रिवा नाचिगादवा धनायायाय संस्तिगा ॥ अ
दिपूमाव (धवस्तु) कादिमायातकं येन ॥ विद्याका न्नादिकं नृपा (धवस्तु) चलादि विन्दु ॥ सदाख्य ४ खादि नादा
कु ४ ॥ कीसादि यत्रा वधि ॥ ॥ अयसूत्राय नरुं सं विद्या धृददिकि न्ना ४ ॥ रतवतो लसाकि न्ना ४ ॥ नरुं

१००

नानय ॥ समुद्रां कुरुया नयत्तु विवक्षुदिग्मदयं उर्वी गत्व स्तिगा (धवस्तु) जलोयुजा हि दण्डा ॥ कालीकालः
सदाकुरुया वात्रि संकषे (धवस्तु) म ४ ययन्ना वक्रि गत्व कस्तु निरुद्रसमी न ४ ॥ वक्षायामसमाख्याता मना ना
नाय ४ ॥ स्मृ ४ ॥ धाविष्णु ४ क ग ली गवा वासुदवयमान ४ ॥ तत्त्व ॥ ॥ मत्स्यं कुरुमा वना रुचन नरुं सं दायः
वामन ४ ॥ नामा नामाथ नाम अ वक्ष ४ क ली धनात्रि ४ ॥ ॥ कविद्रु क ग व ४ या का ना नाय (धवस्तु) जला वि घ ४
मा धवा वक्रि गत्व उ (धवस्तु) वि द्वा म नृतात्मक ४ ॥ विष्णु विद्यं समाख्याता मना वें म धूद न ४ ॥ वृद्धि सि वि क मा
कुर्या गवच वामन स्मृदा ॥ अयक ली धन ४ खाता द्वावी क ४ ॥ यमान ४ ॥ ययना रुं सदा ग कि दामा द नः
सदय ४ ॥ ॥ अय वक्रि म नृता निमना वृद्धि नरुं सं ४ ॥ अयक ४ धन ४ ॥ कि ४ यत्र ४ ॥ कादा द न क

[illegible]

नां गणनिलकृतं ॥ मूहिनामचमनं च वायवात्र प्रलम्बघनी तत्त्वं संयाजनं चैव ह्ययमं वायवनेकमात्रं ॥ रात्रि
वाह्यधिका मोचयेत् प्रयत्नमीकिया ॥ देह्यानीनामथान्यथा दग्धं गमनिनाय ॥ सदा गमाथ तत्त्वज्ञो सदा स
चायदगकः सर्वलक्षणहीनायि क्लानवाक्कात्रकागुत्रं ॥ सीसात्रसागत्रयात्रयतिष्ठावत्तमो वयो ॥ तात्रयित्वा
नयत्कुरु निश्चयवस्य मत्पुत्रं ॥ अध्वानया न जानाति नासी जानाति दीक्षितु ॥ पतिष्ठा न्वंदवाना नुस्मात्तु स्या
दध्वदिक्षु नृवीत्ररुयमर्तदृष्टु ॥ लिखितं हितकामया ॥ द्विगकिगरुगमनी उक्तायनाया स्थितं गुत्रा ॥ मूहि
रुद्राक्रियाभुद्रुलाना मुद्रुद्रुयन ॥ द्वेता द्वेता नृधामिग मद्रुना च विपर्यय ॥ ॥ यकाय कयतिष्ठा
यादृगुमीलनपूर्विका ॥ कार्या सा पूर्ववत्कृत्वा सयकयययं विधिः ॥ वद्रुवत्कुरुकी वा अद्रुद्विजी सरा

[illegible]

नानागन्धदिकनकामन्त्रे ॥ ततः निवर्तनं तत्त्वापर्यन्तं कृत्वा यत्तु गुणसर्वं लिख्यते ॥ यत्तु न्यासतः
 ॥ पागद्वयवत्त्वाजलदानेक ॥ परिर्तः ॥ सिताकाशदलाय तस्मात् कलिकया चिर्तः ॥ द्विरुक्तं कन्यासलिंगं कस्तु-
 दघ्नामृतागिकं ॥ कलिकां कस्तुना चिदलाय तस्मात् कमात् ॥ घीतनं कलिकाकाया हविर्तयैव यत्करी ॥ सिता-
 लाहितयौतानिकस्तानिकमाजितं ॥ ध्वतयणानि त्रयाच त्रकृष्टान् नानाविध ॥ सिताभुमखलाद्यान् अन्यथा क-
 नवद्विर्तः ॥ ॥ ततः निम्नाल्यमाकृष्टा बहुर्थं क्रिस्तिर्तयता ॥ नानागन्धदिवत्त्वाय नैवार्थं च विसृज्यते ॥ यच्च
 स्वादुरिवास्त्राय गन्धार्थं योजयिष्यते ॥ तावन्ताः विधवा दीर्घमदं लेख्यं निश्चने ॥ यययन्त्रं लेख्यं सूत्रं
 विने सप्तमादिरि ॥ ॥ ततः विष्णुययदीर्घं ॥ ॥ यययन्त्रं लेख्यं सूत्रं ॥ ततः यययन्त्रं लेख्यं सूत्रं ॥ यययन्त्रं लेख्यं सूत्रं

यां हनदायकं ॥ दिशिर्गंगादिना संवत्सरायामेहिकार्थकता सा समस्त कृति सप्त चतुर्णां वृत्ति न स्रियि ॥ विष्णुश्च उच्यते
 कास्त्राने पूजा चैव वृत्ति ॥ विष्णुश्च नय ऊद ऊह मर्नादि पूर्ववत् ॥ यट यूक्त कवकीर्ता नागयकृत्य यागिनी ॥ गण
 वग्ने मिका नां व न निर्मात्य निवयथा ॥ विष्णुश्च नय ऊद ऊह मर्नादि पूर्ववत् ॥ यट यूक्त कवकीर्ता नागयकृत्य यागिनी ॥ गण
 वताय हा ॥ अथ गदेत धर्मस्तु न निर्मात्य गुरुपदा ॥ दीक्षा स्थापनया ॥ न निर्मात्य नैव दायकृत्य ॥ स्वयं रूपा
 लिंगं व मरु हि ॥ यत्नं च यत्न ॥ देता देता निता न्यु सामान्या निव सिद्धय ॥ कुरुया लक्ष लिंगं च देता रुय च रुव
 ॥ मारुत ॥ अथ धर्म निर्मात्य च वृत्ति ॥ स्वयं लिंगं गतं पूतं पूषादि सिद्धि दं हितं ॥ स्वयं न दर्शयत्ता क
 देता विधिक कृति ॥ अथ गदेता सु उ विष्णुया वामदक्षिण मरुजा ॥ दिशो नाया दि कर्तव्या स्त्राने र्द्यै र्य ॥ गहिनी ॥ तस्मै स्व
 ययद रु च न व न सं गय ॥ नैव सं गय पूषा मरु निनी नां वदा ययत् ॥ पा सिन न च न न स्या त्या यना ॥ नि मादिका ॥

१११

सिद्धी लरुतना चिह्नं लिंगं सन्निहितं यदा ॥ अननसि विधिना सिद्धा वस्त्राय उदय ॥ सूत्रा ॥ ऊय द धा दयाया च ॥ ह
 रुगवान निव ॥ ॥ तिल रुग समुच्चय वृत्ति स्थापन सफ दण मा विधि ॥ ॥ ॥ स्थापयत्तां समस्त ॥ स्वे न
 उजा हि मी ऊ यजान् ॥ नय ना मी लना यथा पूर्ववत् सुकल सुवत् ॥ अथ ऊय पूजिर्ता मरुता तर्त्त ला ह व ॥ ल ॥
 दान् मृऊ क मात्मा सी य च म वा रु वर्जनात् ॥ लया विष्णु ग मा नां व धा न धा रि वि ॥ धनी स्त्राना दि मा न सी कार्या
 तथा न त्त निना दिक् ॥ नरा मी लन मिथ्या दि पूर्ववत् सना दिक् ॥ नि न मृ क स मे ॥ पूजा यर्थ वि र्जन न अति ॥
 ता न न नू य का की जि स्त्राने पूजा कृति व लि ॥ रु च द्वा वा नु प अथो न त्ता दी नि नि व अ व ॥ दिग्मा रु ग मा त्म अ रु
 न र्ग य विष्णु य व ॥ व स्र अ सु मृ या न्य स्या दि न गं ह दू द म्ब व ॥ ले ला दी ना म धा न्य र्था सु म्हा दी ना म र्य वि सि
 ॥ गूल य व ऊ य र्थ ग य क द ॥ उ व दी य नी ॥ ॥ अथ य क सि न य ध क र्ति का क स ना क र्त्ता च क दि शी क र्त्ता

पूर्युः शनिववरुंगवानुगुः ॥ मूर्तिवर्कंगसंयुक्तं तं शनिवर्गं तं जयतु ॥ अद्यानम्यश्चिमास्यं वा हातयं जयसंख्या
 या ॥ सोम्याभायां न्यसंस्मृको पूर्वतो रुकिरुतव ॥ वरिष्ठेन वसुधु (मनथोगयी ०) दृष्टम्वत्रं ॥ तजानन्म (धक्कादो
 तता न्यक्का) गुनस्त्वर्क ॥ तमन्तुगनुमावाश्च अनन्यं गुनं यजत ॥ अद्यावद्यीश्वराननन्यमसी ॥ सगुश्च कथां सा नि
 श्वं त्वघागवदयश्चान्ननन ॥ ॐ नाननसमस्तवृद्धिस्त्रिंशं मूयान्वितं ॥ यटावृत्तकवक्षिष्ठं किववत्स्वगुनं
 स्वयं ॥ नानालेकाववसुधोः कर्तुं यजयन्तु ॥ मूर्कटोः कर्तुं लेहान्नेः कयूत्रेः कर्तुं कलेसुधा ॥ मरवलोवमस्त
 र्गुश्च नूत्रं श्वं गुलीयके ॥ नानायकाववासारि त्रिंशदद्याच्च दक्षिणां ॥ राजानां मगुलं पृथग्निघयमगुलाः
 धियः ॥ विषयाधियतिथिर्मैकं रुयमाधियस्तथा ॥ मरुं रुयगलनस्ते ससुवर्गुविद्विती ॥ अक्षीहया न्महाव
 गान् नूत्रं रुवममलितान् ॥ ॐ सरुसंययायकं ॥ रुमतां नसु ॥ ॐ रुनी ॥ दासादासीः सरुकां च नयनं वाम्

नमो नमः ॥ कुरुवा मत्ररुग्मने वंजनीयादकं तथा ॥ गृहायत्कनं सर्वमृक्कि पूव्वनिवदयगा नृयादीना मिदं दानं
नदद्वैकमन्त्र ॥ विद्वान्नाधना न्यमामन्त्र ॥ यगुत्रम्यति ॥ गृहयुगकलने अवन्त्र ह्यजने सारु
निवदयैरुधात्मान नृता विद्वाययजु नं ॥ रुग्मवन्त्रवैधर्मं रुग्मवैधर्मयनायना अशमसहलं ऊना यः
लीसा नमहा उवात् ॥ उद्गता हन्त्रयानाध केनितस्त्रिंशमस्वम ॥ उत्र मुष्ठा यका रुग्म यजमानेन पूजितः ॥
प्रीतिष्ठायाः रुग्मं कुरु ददा तिसकेलकतः ॥ दीक्षायाः यनयोगमन्त्र यवन्त्रया गतं तथा ॥ मन्त्रलारुवसिद्धे
वगुविद्यया लुग्मं कुरु ॥ सुसिद्धयुग्मं माहान् मूर्ध्नि यानधजायिनः ॥ नैवेतह लमात्रातिष्ठ यकस्यः
दिनहवत् ॥ सर्वस्यैकलं कार्यं महायुग्म जिगीषया ॥ अन्यधन रुवन्त्र्यं दापयवकुजायत ॥ निदयैरु

निकरुत्रिमनुदीनउदनिर्क। दानहीनउतद्वर्मगडा ॥ धनहीनतथेवायुः सजीवेयूषहीन
 क॥ श्रीहिहीनतथसस्यरामहीनउवर्षी। यूरुथागेवनिर्वर्षयमदासूयहीनक॥ गभहीनरुवडागसूजक
 दीयहीनक॥ निःपताकयजाहकिवलिहीनतथाकूलं। दानिशांरुमहीनस्यारुस्मात्पुत्रुविधेरुलं॥ यतिष्ठार्थ
 यकत्वादीउयंयकृविश्वगतं। तर्कगर्भनिर्विरुधपथकृत्वाहनिगसमनी॥ शुंननस्वायनंनरुवकुर्धसंपन
 विधा॥ स्वयकायकुर्गर्कदानार्थद्वितीयक॥ रुनीयमूऊनायर्थकराधर्मायकत्ययत्॥ अन्यायाचेवलेबा
 यि संयतायाधिकात्रयम्। यागकालेषुदत्वाय अर्थनायनियादयत्॥ सूर्याश्विनवर्कतिष्ठकरास्वयगत
 की॥ यागस्यायस्कनः पूनाउनामसंमनुयः। त्रानास्यः। नित्यिनसुद्वेदूपस्कनसमन्तिन॥ यत्निगंदयराग्यं

११३

११२

लिंग

वधामगद्वैरुनिवर्तितं॥ तत्रलुगयदातयमर्थकोसंश्रयालयतागुन्यागविधिः॥ पाकः॥ सिद्धलिङ्गविधिः
 सिद्धः॥ ~~॥ नित्यलुगसमवेयनात्रनसमूहगुनूयुजाऊनायुजाविहतादिस्तुयत्तः॥ दससंसाविधिः॥~~
 ७१॥ ॥ यगूयालिगूयद। स्मितासुसर्वसिद्धिदा॥ लाकानूरुदुल्लेखार्थस्वयमावातस्वयंउव॥ स्वयमुनिमव
 दागलिङ्गउहीवमकय। सद्रुमैरुमन्यस्मादद्यात्स्वायनयूऊनात्॥ नीलेलंकालिकागुरुनिगडीकन्यका
 यम॥ कन्यागीधेवनयालेमरुदनामप्रवृत्ते। स्मितानिवागलिङ्गनिनिवतत्वरुतानिवा॥ सत्रित्यवाहसं
 स्तानम्वागलिङ्गसमाकृतिः॥ यदयदयिवाहयैसर्वसखावर्द॥ यागवह्यधरागीनिमनुवनिष्कननि
 व। गानिमनुवलात्तमीस्वयमवायउऊन॥ तथान्यः॥ स्थापितायगुचिदवेः॥ सूत्रानगे॥ सिद्धिदा नि

स्वतन्त्रानि रागा मद्यानि स्थूत्रा वा सूटि कादा निवका निन दूषा न्यर्थ सिद्धया । यद्गुणं वा ललि मस्य स्तु य नं वा च त धूना
स्त्रा नै नू या षि नै रुक्ते ॥ निवया ग क्त न रु नै ॥ विस्त्राय य रु ना द व म मा नू य रु रु त वा स्वे च्छु या ग च्छु वा (गं) य रु स्तु नै
मय षि नै ॥ त ग नी या धि वा स च क र्या त्स्त्रा ना दि पूर्व व न् । रु रु या द्द कि न म्भू क्ता द्द ति म्वा नि व त्थ उ ॥ स्वे च्छु या श्च वि
रु रु र्थ (गं) श्च ना वा वि मू क्ता मू लि ले रु रु रु ना नै य वा या रु म ग दि क ॥ वि धि ना क रु थ य रु सा नि र्ध न् नि र्ध म
व हि । नि र्था द यी नि लिं ग नि र्धु द्वा उ द्वा द या नि च ॥ आ स न सै स्ति र्ना वा ग कि र्त्त मू लि सै स्ति र्ना । व लं स्ति न वि रु
रु र्थ स्तु यां वि र्त्त वि धा न न ॥ व रु र्थी रु म च (गं) वि (गं) श्च ना नि वि र्त्त । म रु सा ध न या (गं) मू सा ध क र्त्त स्य ति
वि र्त्त ॥ वि धि १ स्था त्पूर्व का य द्द रु द्द न्य रु वा रु व न् । पा र्श्व स्तु न थ वा वा (गं) य न व व वि धि १ स्तु क ॥ म रु न्य रु थ वा

[illegible]

नृधाम्नाकाल मृत्पुत्राधिर्नायसर्गकृत्यंजनं ॥ राजावविजयीत रुयं संमयदृष्टा कृतिग ॥ वृषा धर्मसुदवस्य
 ॥ क्षान क्रियात्मक ॥ धरुचसन्निदेयस्माद्धर्मसुनायनवर्धे ॥ ॥ कृताधिवासनेवमुखावृत्तीमात्राहृषिनी
 सैमद्रुर्मंगलस्त्रायाद्विगुहलमभूत ॥ नृगर्किसंयुतं पाद्या समादिष्टा गता रुवेत ॥ तादृशिवंस्वमनुष्यः
 वाहनान्यपराभूयि ॥ दवानां वाहनमस्त्यन ॥ ॥ यजमानकूलक्रिसंरात्रविदिनखिल ॥ यजतुं वादिकी
 कलास्तुल्यं वनमभू ॥ नयादिदि क्रियास्तानं पूजाहमभू पूर्ववत् ॥ रागस्य नैव भूद्विचविदधीताखिः
 लंकमात् ॥ दानदभारुगभध ॥ द्वावापुनर्वसुधी ॥ न तादियुर्वत्तत्ता नूददृत्ताच ॥ नय ॥ स्रवमावधि
 नैवा नैवा सुदिग्येष्टेष्टे ॥ तन्मध्मम भूमूयकिंविदु नतान्यसत् ॥ यवजका घृचिकाका हलिनी ग

११३

दग्निका ॥ तिलाकाकां चनागद्ये नाचनांच सदा नृधाम्ना ॥ लभर्गुं रुद्रा तखात मृत्पुत्रा पूर्वोदधीनिवा वगवकाद
 नैव ध्मा नृधामर्थमदुम्बन ॥ दहत्यां भवयावा मिआत्मविद्यानिर्वये सत् ॥ सफसका रुती सुग नत्वतत्वउ
 हामयत् ॥ स्त्रिचैवायमयं च वाधार्थनित्यसैरुर्क ॥ बाधिनीवा विना गीत रुकाकं रुद्रयात्तमात् ॥ नयादिय
 तिहा नोच अन्त्यां अरु विनिमित्तान् ॥ स्वनाम रिः य तिष्ठा य पूरुन्दत्तादिभं वलि ॥ पुनर्मृहिरुत ॥ कावू नृ
 जयचस्वग कृतिग ॥ कुरुकुडा विवकस्या दिष्टामचरुवर्क ॥ दानस्त्यन ॥ ॥ अथ द्वावोजयदुर्दृत्ताचा
 क्षरुवंगी ॥ पुवादी दकिमन्दत्ता न्नादी नां वलिनृधाम्ना ॥ धरुनलोषधीवीजं नादेसर्व ॥ यनादिने ॥ वरु
 वद्वेयं नृधाम्ना सुदिनं नत्वसंस्तिग ॥ दधिसर्पिषाय ॥ कोद पायसे ॥ यत्रियूयवा ॥ धमन रुद्रकाद्यानं नय

इत्यमवर्णं। यत्तवाधनं गुरु मूलिस्तदघटं न्यसतु॥ सोऽर्चुना जतन्वायि गार्गवा रुपाय कया॥ गन्धार्क
नष्टं त्रयमाला लंघनकटुकी। कृताऽभकवटा श्वेतु दलरुषिगवकुकी॥ कृतत्रकं विधाय भुक्तं त्वमाहृत्य
आजयत। यद्विधनमूयादानयकिस्तुघेनेनायनं॥ सर्वोत्तना मरिचं गत्तु भयार्थं विदं सकात॥ एकीयात्
यादं गच्छेत्तु निवाहं संप्रदाधयत॥ संहृत्य कुरुकं कृत्वा स्तिता किंचिदविनकं॥ उक्तीत्यहं रुडावर्कं सुतः
रुनातनूयमं॥ द्वादशभाक्तात्समादाय जचकनघटं न्यसतु॥ तत्राहिवाहिकन्दं न्यसतु रुडावधकी॥ कला
विधनदीपार्कं संप्रदं स्वयदा गुरुशिशां कलायेन मस्तुत्यगं येवचकला रुता। विधनया कृत्वा धाधययाग
स्तुत्वदनिना॥ दशनाडी दशयाधनं कनक्षानितदीधनान्॥ न्यसतु विधाय तस्तुर्वा नामानि तान्यतः कमातु॥

रुजाचयि मलाचेव सूषन्नाचतथ रुवन्ता गंधात्री रुसि जिह्वा च यूया चेव यन्मगथा॥ अर्जवसा कृतयेव गंधि
नीदशमी सुता॥ दशयाधेव दशाना उययविकीर्तिता॥ पाधयान समाने च उदाना याने च वच॥ नागः
कूर्मः रुकाख्यं च दवदला धनेजयः। वाक्पाणि याद गिन्ना निसया यूनि क्रिया गंधः॥ एतत्तु कुरुषी जिह्वाना
साचिरुं वधीवजा॥ अग्नीदायन्तु युयास्य विजाना॥ यतयः कमातु॥ स्वदिग्मयर्कं वाचीन्द्राग्नि निनिग्म कवा
स्तुथ॥ यतयाधीन्द्रिया गंधु याश्च यूजा विधाय तः। विकानः यूजकत्वेन माया कालनियामिकं॥ स्वसाधः
साकेधे त्वन यजकत्वेन मनुदा॥ याश्च सदान् रिदवा यायकत्वेन धीमता॥ तदंशानि ततः सर्वे निवृत्ताः
धमूयया। रुत्वा सांनिधमनं विधि विधि निवर्तयत॥ ततश्च वेदिका वद्धः कः अमालसोजकः॥ व

१११

लं संख्यावयस्मिन्मा॥ माया तज्ज्ञात्मनेकत्वं विद्यायासादगमयत्वा निवर्तयेन्न विद्मानविविकाविद्यसम्भवः॥ अ
धिष्ठानाधिदेवस्य समाप्तेऽसदनिवः॥ सामर्थ्यधनैर्धनकिं॥ वेदिनश्चात्मकधनिः॥ यायकत्वाच्चिवाध्वर्य
कः॥ यासादव्यूयकः॥ यिलुकाजगतीत्यातायासादालिप्तमिष्यता॥ तथा॥ कायायतिष्ठति॥ मनुना राधिनं कवि
त्॥ जीन्दवांश्चकमान्यस्य वक्ष्य विष्णुर्महेश्वरान्॥ ऊघास्त्वाम् नमून् विदेहश्च तदूर्ध्वतः॥ हिमार्गं रुवसं
रुं वदन् वरुणं यात्यनः॥ ॥ ॐ तिथीवेनाचनीयलक्षणसमूहयथागलिमादियानद्याजदत्त संस्कारः
नकानविंशतिमाविधिः॥ अ॥ २॥ ॥ ॐ भर्तृगुरुलम्बा कलाम्बाधमूर्धनि। कृपयद्विधिना सम्य
क् कथञ्च क्व किमनायुवः॥ नाना प्रकारमीशानममृतममृतवतयथा॥ ब्रह्मांशं धर्जं चारु लक्षणं नवदरुथ। च

[illegible][illegible]

दु कर्तुर्मृत्पुत्रवत्सुर्वं ॥ आनोदामकृतसोस्वदक्षिणस्थानमान्यथा ॥ यासादपृष्ठद (अ) वउवृक् विवृजान ॥
 यं ॥ अनामनेवापदेवमानुगवान्यथायन ॥ निखनस्यसंयौ (अ) नचकु (अ) नेरु (अ) नवा ॥ उरुमादिधजाधमं
 सुकाक्षेनवाक्चित् ॥ पूर्ववत्सुधयादित्यात्स्नानाध्वजयक्षिषू ॥ हामादिनत्नविन्यासआसनेपाकम
 धातु ॥ मूर्तिरुत्तमसद्वर्णसकलीकननन ॥ ध्वजनेतुनिकलेनद्वलुं वांगनिषयुव ॥ आत्मविद्या
 न्यसद्वर्णनिवर्तनध्वजतथा ॥ सुवननान्यनसुविद्यनाभयसिद्धय ॥ अनवात्सोरुवान्गकान्स्वयं ॥
 धायतविग्रहान् ॥ सम्य (अ) लाहुतात्सर्वाननगत्स्वावाययद्वृ ॥ ॥ ध्वजमश्राकुमन्त्रेयजयित्वा न्यस
 क्तिवित् ॥ अद्यावमथा (अ) ववायद्यायाउपनमेहन् ॥ यस्यातमेध्वजसुविद्यसंघातनागनी ॥ गंधादिवज्रम

लुनदद्यादियाधियनवा ॥ पंनसूतननेवर्धवतिकमेहदेवकु ॥ आयनसूर्यसहजार्णपलयावदनिस्वन ॥
 यदीकदभानपाकपकागमूवकन्दरी ॥ अकंठतिन्नाजिह्वदीकगुम्भसूक्ष्म ॥ सूर्यायवीतनूलासिगकि
 मन्त्रवधाविर्ण ॥ वहुर्जुं वहुर्वर्णसुनञ्ज्याद्व (अ) यन ॥ दवदानववक्रोयदयितानाविमदने ॥ ध्वजस्याना
 हनेकस्यादियवात्रचकनिक ॥ मन्त्रे ॥ रुउक्तके ॥ सर्वेहदायाविदिहगग ॥ ध्वजायुगुगुलमन्त्रम
 नुजयसुधा ॥ यदक्षिणायकत्वाकरुनेसन्निधाजयन् ॥ यजमानसुगतल (अ) रायायसुक्तेसह ॥ य
 निवक्ष्यतिधाममयगमयपूजयन् ॥ यथादिध्वयनेवातध्वजयासादमसुक ॥ गंधककृत्यजत्वाय
 सकजमाङ्गिनीकगन् ॥ नायुगमनिर्जयीवाजासुखिन्य ॥ यजसुध ॥ सुसूतयसिधाधम ॥ सुसूत

कामायमववाहमलकसदानात्र पञ्चकाठि गुणध्वजागाजी (मुद्रा) वक्रतककु ध्वजान् मोलिकंरुली ॥
 निवेगावनीयलकलसमन्वयलीभनादिध्वजनिवर्धनेनाथामैविंमतिमाविधिः ॥ (भा १३०) ॥ अथ
 जीर्णध्वजं प्रलिङ्गदीप्तिं सूत्राजितान् ॥ आशयनी हस्तत्वा निरुतवतालनाकसा ॥ महारुयकना निरु
 सरुर्भूकूजत्रुधिः ॥ क्वेकिदाघसंधानं यत्तु नाख्यतुहिता ॥ महात्यातभ्रजानाभं चमूरुगम्यजारुव ॥ दहि
 केदात्रुर्धनागस्यजानाभं दग्निदगा ॥ उद्वगत्रविवादत्र विनाभश्च ध्वजार्थया ॥ घीता (ग) वाक्त्रुदीनां नाका
 दूःखकलीलगा ॥ यतायसत्त्वहानिप्रला रुमाहादियुक्ता ॥ गयुयसनयीताचविनाचमहतीरुवत् ॥ दूष
 लिमिहि नत्राख्यजानाका न (ग) रुन ॥ तस्माद्वनधुकार्यविधिना मनुपूर्वक ॥ विधिं विनाहृतीं लिङ्गमनु

१२१

हीनेस्त्वदधिकं ॥ नाख्यधिरुनयी शर्करुयमस्तादयध्वी ॥ तस्मादाजासनाख्यलिङ्गमश्वात्रयद्वर्त ॥ (ग)
 वाक्त्रुदीयजानाचस्त्रवाख्यचवृद्धय ॥ जी (मुद्रा) वक्रतककु मियध (ग) मरु घ्रासिनी ॥ मूनकठदिनया (ग)
 सदात्रकल (ग) रुन ॥ याम्यायामथवे (ग) न्या कयास्य गुकमधुरी ॥ यक्कनैसीस्त्रुनी नम्यं जलद्वानेकता नर्ध
 ॥ नम्राचन्दनमास्या र्थं विनानध्वजसंकली ॥ पूर्ववद्वदिकां नम्यां निवकृमात्रु नकितां ॥ गुजूमूहिध्वजान् स
 म्यगिष्वादीकनकास्त्रवे ॥ वालूकापूजितयी ॥ सुखिलयूजयद्वर्त ॥ ऊष्माख्यगर्तधार्तं रुमोक्तुनयूनः
 र्यजत ॥ निवलिङ्गध्वजान्यं वराजयतधृतयायसे ॥ अर्कोधेन्द्रादिकविद्यानक्षो सनययेदुर्ध ॥ दक्षिण
 विरुतादशार्तं दू य ॥ सीनाख्ययथा ॥ सरुसंरुक्रयातधार्तं महार्तं वाथदानीक ॥ निवद्विकमु यक्रादे पूर्वा

४८६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९१००१०१०२१०३१०४१०५१०६१०७१०८१०९११०१११११२११३११४११५११६११७११८११९१२०१२१२२१२३१२४१२५१२६१२७१२८१२९१३०१३१३२१३३१३४१३५१३६१३७१३८१३९१४०१४१४२१४३१४४१४५१४६१४७१४८१४९१५०१५१५२१५३१५४१५५१५६१५७१५८१५९१६०१६१६२१६३१६४१६५१६६१६७१६८१६९१७०१७१७२१७३१७४१७५१७६१७७१७८१७९१८०१८१८२१८३१८४१८५१८६१८७१८८१८९१९०१९१९२१९३१९४१९५१९६१९७१९८१९९२००२०१२०२२०३२०४२०५२०६२०७२०८२०९२१०२११२१२२२१३२१४२१५२१६२१७२१८२१९२२०२२१२२२२३२२४२२५२२६२२७२२८२२९२३०२३१२३२२३३२३४२३५२३६२३७२३८२३९२४०२४१२४२२४३२४४२४५२४६२४७२४८२४९२५०२५१२५२२५३२५४२५५२५६२५७२५८२५९२६०२६१२६२२६३२६४२६५२६६२६७२६८२६९२७०२७१२७२२७३२७४२७५२७६२७७२७८२७९२८०२८१२८२२८३२८४२८५२८६२८७२८८२८९२९०२९१२९२२९३२९४२९५२९६२९७२९८२९९३००३०१३०२३०३३०४३०५३०६३०७३०८३०९३१०३११३१२३१३३१४३१५३१६३१७३१८३१९३२०३२१३२२३२३३२४३२५३२६३२७३२८३२९३३०३३१३३२३३३३३४३३५३३६३३७३३८३३९३४०३४१३४२३४३३४४३४५३४६३४७३४८३४९३५०३५१३५२३५३३५४३५५३५६३५७३५८३५९३६०३६१३६२३६३३६४३६५३६६३६७३६८३६९३७०३७१३७२३७३३७४३७५३७६३७७३७८३७९३८०३८१३८२३८३३८४३८५३८६३८७३८८३८९३९०३९१३९२३९३३९४३९५३९६३९७३९८३९९४००४०१४०२४०३४०४४०५४०६४०७४०८४०९४१०४११४१२४१३४१४४१५४१६४१७४१८४१९४२०४२१४२२४२३४२४४२५४२६४२७४२८४२९४३०४३१४३२४३३४३४४३५४३६४३७४३८४३९४४०४४१४४२४४३४४४४४५४४६४४७४४८४४९४५०४५१४५२४५३४५४४५५४५६४५७४५८४५९४६०४६१४६२४६३४६४४६५४६६४६७४६८४६९४७०४७१४७२४७३४७४४७५४७६४७७४७८४७९४८०४८१४८२४८३४८४४८५४८६४८७४८८४८९४९०४९१४९२४९३४९४४९५४९६४९७४९८४९९५००५०१५०२५०३५०४५०५५०६५०७५०८५०९५१०५११५१२५१३५१४५१५५१६५१७५१८५१९५२०५२१५२२५२३५२४५२५५२६५२७५२८५२९५३०५३१५३२५३३५३४५३५५३६५३७५३८५३९५४०५४१५४२५४३५४४५४५५४६५४७५४८५४९५५०५५१५५२५५३५५४५५५५५६५५७५५८५५९५६०५६१५६२५६३५६४५६५५६६५६७५६८५६९५७०५७१५७२५७३५७४५७५५७६५७७५७८५७९५८०५८१५८२५८३५८४५८५५८६५८७५८८५८९५९०५९१५९२५९३५९४५९५५९६५९७५९८५९९६००६०१६०२६०३६०४६०५६०६६०७६०८६०९६१०६११६१२६१३६१४६१५६१६६१७६१८६१९६२०६२१६२२६२३६२४६२५६२६६२७६२८६२९६३०६३१६३२६३३६३४६३५६३६६३७६३८६३९६४०६४१६४२६४३६४४६४५६४६६४७६४८६४९६५०६५१६५२६५३६५४६५५६५६६५७६५८६५९६६०६६१६६२६६३६६४६६५६६६६६७६६८६६९६७०६७१६७२६७३६७४६७५६७६६७७६७८६७९६८०६८१६८२६८३६८४६८५६८६६८७६८८६८९६९०६९१६९२६९३६९४६९५६९६६९७६९८६९९७००७०१७०२७०३७०४७०५७०६७०७७०८७०९७१०७११७१२७१३७१४७१५७१६७१७७१८७१९७२०७२१७२२७२३७२४७२५७२६७२७७२८७२९७३०७३१७३२७३३७३४७३५७३६७३७७३८७३९७४०७४१७४२७४३७४४७४५७४६७४७७४८७४९७५०७५१७५२७५३७५४७५५७५६७५७७५८७५९७६०७६१७६२७६३७६४७६५७६६७६७७६८७६९७७०७७१७७२७७३७७४७७५७७६७७७७७८७७९७८०७८१७८२७८३७८४७८५७८६७८७७८८७८९७९०७९१७९२७९३७९४७९५७९६७९७७९८७९९८००८०१८०२८०३८०४८०५८०६८०७८०८८०९८१०८११८१२८१३८१४८१५८१६८१७८१८८१९८२०८२१८२२८२३८२४८२५८२६८२७८२८८२९८३०८३१८३२८३३८३४८३५८३६८३७८३८८३९८४०८४१८४२८४३८४४८४५८४६८४७८४८८४९८५०८५१८५२८५३८५४८५५८५६८५७८५८८५९८६०८६१८६२८६३८६४८६५८६६८६७८६८८६९८७०८७१८७२८७३८७४८७५८७६८७७८७८८७९८८०८८१८८२८८३८८४८८५८८६८८७८८८८८९८९०८९१८९२८९३८९४८९५८९६८९७८९८८९९९००९०१९०२९०३९०४९०५९०६९०७९०८९०९९१०९११९१२९१३९१४९१५९१६९१७९१८९१९९२०९२१९२२९२३९२४९२५९२६९२७९२८९२९९३०९३१९३२९३३९३४९३५९३६९३७९३८९३९९४०९४१९४२९४३९४४९४५९४६९४७९४८९४९९५०९५१९५२९५३९५४९५५९५६९५७९५८९५९९६०९६१९६२९६३९६४९६५९६६९६७९६८९६९९७०९७१९७२९७३९७४९७५९७६९७७९७८९७९९८०९८१९८२९८३९८४९८५९८६९८७९८८९८९९९०९९१९९२९९३९९४९९५९९६९९७९९८९९९१०००

122

स्वर्निकेऽयथा नदीर्गवज्रवद्वत् ॥ ऊर्जनेव लिङ्गं नृपं सूरिर्न वज्रदूषिर्न । महादायान्तिर्न दग्धमिदं कदाचन ॥
 संचयत् ॥ सुलभादुर्निविष्टं च यच्च पीजकं नृपुत्रि । स्वापिर्न विकलेष्टव्यं सुखेनानादिवर्जितं ॥ नृपं कुर्याच्चि
 किं सावित्र्या धितस्य वरुषजं ॥ नृपं नारायणं च रुद्रं च कृदवा द्वजं नृपं तथा ॥ कियमा धनदायाति मनुवर्जितं
 यत् ॥ लिङ्गयोऽसिलामञ्जरी मताञ्जलिर्दिव्यं ॥ यत्कमलं के लनत्वा तं क्रियञ्चासननित्यकं ॥ दानुद्रवम
 धानं ददुःखिवाग्निना घृतं ॥ लार्हं सर्वविनिष्ठाद्य यन्न सत्त्वं विन्यसत् ॥ दग्धं महिमयं कुरु नृपं सा भव
 दसृजत् ॥ लयी विष्टं घटं यत् सत्त्वं यत् मिवाक्रियत् ॥ यत्कितास्यादि नृपं सत्त्वं सत्त्वं हीनान्य मनुजं ॥ अद्
 र्धं विविना द्रुह्य सुययथा गपूर्वकं ॥ यथा नस्युर्गतिं द्वात्रं तथा लिङ्गं पवर्गयत् ॥ वज्रमिलादिकं सर्वं

बुलसावदेविकी॥ दवमद्वानिर्दिष्टी खातम्बुडालया कर्य॥ सचकु ॥ काव ॥ ४०॥ ४०॥ ४०॥ ४०॥
 मुनत्॥ पूर्वकर्यकर्यकर्यकर्य ॥ कायुथ ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 समद्वान्मुनप्रखवदिमोत॥ अथ ॥ अन्तवद्वान्दिनवना रुतद्वयत् ॥ द्वाविंशद्विककुरु म ॥ अर्द्ध
 उर्ध्वान्केश॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 ॥ यद्यमानमुवद्वान्मकनयतिवात्रिभ ॥ वेष्टवर्तनवया ॥ गयानिनीस्तयनतथा ॥ मधुलनवना
 र्ययशयुद्धनवृद्धिद ॥ मलिचन्दन ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 याथवा ॥ पीतना लनवागालिद्विदावृष्टिके रुवेत् ॥ समुज्ज्वलित ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥

१२४

पूर्वकाजनपीता र्यां द्वाविंशद्विककुरु म ॥ अर्द्ध ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 नतेसी ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 हागदा ॥ द्वाविंशद्विककुरु म ॥ अर्द्ध ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 गुणदन्तमा रुतुलिवाल्कामय ॥ अथतायसुवर्गमार्थपासादकन ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 कथयामिमहीतल ॥ नगद्विककुरु म ॥ अर्द्ध ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 त॥ दिमवद्वमकूटादी निष ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥
 जयस्तु ॥ यात्रियाशवद्विककुरु म ॥ अर्द्ध ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥

दहासाऊयंयधि॥चक्रिणेकामकंदवीकाटकुशाग्रधाम॥कस्मीत्रमत्रूयाटल्युमुनेलापूत्रसुधा॥वित्र
 जलत्रेनूत॥युष्टुययकशाग्रधाम॥रुद्रिकाऊयनीपृथायत्रहीत्रकसादिको॥मायापूर्यथलोकोखम
 नसीदाहसंक्रका॥नर्मदायमूनागंगागमदावत्रीयून॥यूनायचनयथसिंधुसत्रस्वथषूनिम्रगभा
 मावस्मीकीकटासाट॥कूत्रकशक्तिहानक॥अनवदीपतिष्ठानीयाक्रिकादगळ्ळ्यन॥दात्रवर्नम्भसान
 अयस्कननेमिषीतथा॥कलेवीनामहाकाल॥सोर्गधूपवनेवने॥वटेकलिंगादियादिस्काचिनानांचसं
 निधि॥वाच॥स्वयंरुलिंगनांयद्यद्युक्तजगया॥वदथायमतीथनिधूनीनांसीगमसुधा॥सिद्धदवा
 लयायमनसार्गवटकीपूरी॥यद्वेनंगतिकुद॥सामान्यनिनिनिम्रगभा॥युष्टुसुनमथान्यवसिद्धसुना

१२५

न्यमूनिव॥दहासाऊयंयधि॥चक्रिणेकामकंदवीकाटकुशाग्रधाम॥कस्मीत्रमत्रूयाटल्युमुनेलापूत्रसुधा॥वित्र
 जलत्रेनूत॥युष्टुययकशाग्रधाम॥रुद्रिकाऊयनीपृथायत्रहीत्रकसादिको॥मायापूर्यथलोकोखम
 नसीदाहसंक्रका॥नर्मदायमूनागंगागमदावत्रीयून॥यूनायचनयथसिंधुसत्रस्वथषूनिम्रगभा
 मावस्मीकीकटासाट॥कूत्रकशक्तिहानक॥अनवदीपतिष्ठानीयाक्रिकादगळ्ळ्यन॥दात्रवर्नम्भसान
 अयस्कननेमिषीतथा॥कलेवीनामहाकाल॥सोर्गधूपवनेवने॥वटेकलिंगादियादिस्काचिनानांचसं
 निधि॥वाच॥स्वयंरुलिंगनांयद्यद्युक्तजगया॥वदथायमतीथनिधूनीनांसीगमसुधा॥सिद्धदवा
 लयायमनसार्गवटकीपूरी॥यद्वेनंगतिकुद॥सामान्यनिनिनिम्रगभा॥युष्टुसुनमथान्यवसिद्धसुना

लं ह्या दिव्य कारुण्य राशु रा ॥ कमादग्निनिघा ॥ हीति ॥ कलित्ररु क सी कय ॥ श्री चला श्री कया वृद्धि ॥ भनि ॥ या ग
दिनूयत ॥ नदीपवकिता स ॥ पूर्वदि युधि म पिवा ॥ या म्भ वा ना रु न स्मा च न वे का ठ क सी य ॥ ॥ दक्षिण स्का व
ना दी च य म्भ म वा व नै गुरी ॥ भ म वा ॥ श्री सो म वा च न न न्या ॥ स न वा व न ॥ व ठ ॥ या चो य मा ॥ भ यां य क्का ग म वा
धि न द्वि नि ॥ प्र क ॥ अ रु न ॥ ॥ ॥ सां सम स्का य रु का जू मी ॥ ज यी ती दा डि मी त्या मा घ न्ना ग म नि ष या द या ॥ ॥ य रु
न रु गुरा ग ॥ ग गृ रु रु य य न रु रा ॥ व रु द रु व ती वि या क रु या च स न कू ल ॥ लि ग्ध दू व नि ता वे ॥ सु दा सा
नी न का नि का ॥ रु ले पू य व ती लि ग्ध लि ग्ध गु ल्मा ष धी दू मा ॥ ग वा ध मा नू षां ॥ वा न म न य रु नि रु स ॥ ॥ थ
क व रु धि ना रु त्या य मा म् दि नि वा न ना ॥ वि ली ॥ सु सा द टा ग स्का रु रु ग म्भ स ग भि का ॥ च न्द ना रु नू का मी

१२०

न च रु डा ऊ त्प ल च म्भ का ॥ या ट ल ना ग जा रु य म लि का म दि ना स वा ॥ ग म ली रु म द द थ ॥ अ दू म्भ न त ल ग म्भ
नी ॥ य ष स्वा मि ग ग म्भ रु अ रु वे रु रु मि का ॥ श्री म्भ का ल च या सी ता ड म्भ म्भ नि नि न ॥ नि ता ॥ या वृ थ रु य सी
स्य म्भ सा दि जा दि सु ख वा द ॥ मृ द ग्म व नू वी म्भ द द न्द रु या दि स रु ख ना ॥ वि रु नि का वि णी का कं णी वा रु वे रु
स्य स व द ॥ स्व ता ग जा म्भ गं म्भ च न का ना रु मि षा द द ॥ पी ता वे म्भ ग ॥ थ का ना म्भ डी रु म्भ म ली द द ॥ रु उ
रु या म्भ नि म्भ नां स्वा दा दि या दि जा म ही ॥ भ नि रु य म्भ न वा यू ॥ क मा द या रु उ नि न ॥ अ म्भ टा रु नि का ॥
का त म्भ ग त रि म्भ च रु ॥ व नू म्भ नी ल वा ना च क मा रु द व ता ॥ सु ना ॥ स्व जा ति व द्म णी वा पि य थ लारु
व गृ म्भ ॥ व रु नी या व सा न ले य दि गं म्भ व या दि ति ॥ न म्भ म्भ न नि ता म्भ का रु मि की ट व ती व या ॥ नि म्भ

नाजू॥ सोकचसुखनार्णवसर्वलाकरुयंकमा॥ यचावाधिघरागृह्णवास्तुनिहा॥ यवपि
 यीलिकामध्वादुन्दीयटहादनी॥ मीनरुदात्रयुष्ठांराकनिकाषसमाचया॥ नानाकाषकनाश्रता॥ सर्व
 षांवेववर्जिता॥ ॥ धन्यात्वन्याकुमात्रीवयूवेलकृदलकिता॥ साविधाननसागमयदिनायदुतारु
 वत॥ स्वयंवात्यजनीवेवाकयाहि॥ य॥ पुयकिहि॥ यासवितासदापृथीकायासुगुददुषिता॥ रुस्म
 यकाहियायादसकनायांमुसंयुता॥ अयिअसगुधयासागृह्णवास्तु॥ सुसाधिता॥ गतधवाहयित्वा
 थरुमसुलेहलमदी॥ सुंदर्यथायथरुमासान्यवचगमरुल॥ गत॥ यवायथदीहीन्यादिकींमु
 तिलादकी॥ यचसुखसुसुखयघटयदामवमनि॥ चर्वविताधिनांरुमिंसमीकथायलयथत॥ त

१२८

ग॥ यरायकाकागृहादीनांतदुचरु॥ तिष्यवधुनरुयात्रीचिरुस्वास्तुत्रयवा॥ मीनयागनकोव
 नीधुवयागनवानयत॥ विष्वानिर्मलाकागतहूमोमलुलकृत॥ न्यसेरुनमधुन॥ गकखादिजडा
 दसाकुर्य॥ घटगुलमयीधरात्यजिनानूदमखित॥ नकायाया॥ यवसनयचिमांदिनमदयत॥
 याचींचनिर्गमगस्यासुखसुखवविन्यसत॥ मीनयागमकथाम्यासोम्याभंयसाधयत॥ वरुका
 धानिदिगमध्वाकुरुस्येवाहसुखत॥ वदायंयवउ॥ सुखयागतकुरुसिद्धति॥ यागमस्यादमधनां
 श्रीरुत्तानामानिचकुव॥ सान्नायसावतीकाकाविमोलायाधवाहिनी॥ मतीवसुमतीनद्यासुख
 यमनात्रमा॥ उरुवास्यादगम्याचचकागीर्त्यदिकात्रिका॥ रुविनीसुखयरालकीविरुतिविमला॥

लिया॥ जया काला विमोका वसुन रासुपात न॥ ॥ लीन शशक निद्रु यजदीर्ग चय ऊर्य ॥ न क
 मक नथ सत्य सुनंथो मचयूव न॥ दय वाद वयूषा धमि नथ सीमा मवय॥ कृतान मथ गन्धर्व हंग
 मृषां च दक्षिण॥ पितृ जं दान गालं च सूरी वमृष्य देन क॥ वनू दं देह सौ च यश्चा धम्य विम सदा॥
 वनं हि मूर्य रुद्रा र्त्ता मं नि न्यदि नि नि नि॥ ने वानु शय द (ग) वश्चा यूजा न्य दि वदं दिका॥ विष्णु सा रु
 नका ष्ट सु मा या र्थं दु य द दय॥ तथा धन य व स्या र्थः कश्चा रु न उ व दद॥ मनी चिका निम (ध) रु स
 विना दि य द स्ति न॥ सा विगी न द (ध) र्थं दे वि व स्या न्य द द त्व ध॥ यि रु वश्चा रु न दि य मि न्द्र मि र्त्त
 धा ऊर्य॥ वनू द वश्चा (ध) म्मि मि न्द्र र्थं व द य ऊरु॥ व ग वश्चा रु न नि र्थं दि र्थं च नू द द ग क॥ न द

122

मा र्थं दि गं य अं व द सु सो म्य ध ग ध र्त्त॥ व न की रु द व द र्थो क न्द्र र्थो यू न ना र्थ॥ ऊ र्म या ध यि यी धि दाय
 द दी ग्म दि वा ऊरु॥ न कानी ति य द म्भ म्म म धु य च न नां धि क॥ यू र्वे व द व ना यू र्मा वश्चा न ४ वा ऊ र्म स
 क॥ मनी ची च वि व र्त्तां च मि न्द्र यि नी ध न रु धा॥ द न का ष्ट कि ना दि रु त्व न्य च न्म दि का ध ग्म॥ दे ह माः
 ना रु र्वा ग्री मृ षा र्थो यि त गो र्थ॥ या य र्त्तं नि लो द वा ४ सा द्ध ४ सा द्धो दि र्त्त कि ना॥ य र्थ क व लि म
 ना च म म्म व धा दि व च न॥ द व वा रु वि (ध) र्त्त व द्ध र्त्तं ला द्धु र्त्तं क मा न॥ न ग ना दाल रु म्म दि वा र्त्त
 म म या ४ स्ति न॥ रु म्म यू र्त्ता दि वा रु क मि र्त्त क वि च न्द्र य व न॥ ॥ य र्था ध कं य व द्धा मि र्त्तं य ध य थ
 क र्म॥ स दि मि न्द्र न्द्र र्त्तं द र्था न्द्र का वि र्त्तं वि रु न॥ नि वा य म ४ नि वा र्थ स च रु दी न स दारु या ४॥

नृद्विगुणितनाहानुदा आतिविनानिहिश्यादुहद्विगुणदीर्घलिथयथेवविस्तारान॥सावित्र्यस्यालय
 ४कथाथेष्टांयुष्टिर्गणन॥कथयुष्टयजुषाश्चाकथंनमिगुणकथय॥कथसूक्तसमावीथीवीथीरुदादन
 कथा॥नदन्त्येयवीथीरुवीनन्वीथीविनागन॥वीकनम्युक्तनादीनाजुदाययान्वयाविना॥गरुपुष्टस
 मावीथीनदन्तद्विनवाकविन॥वीथद्विनायवीथ्याशमकद्विजिपूजाचिग॥अनीनागुरुभनद्विस्थानंम
 वनेरुदग॥सामान्यगुरुवन्नि सर्वेषां सर्वकामद॥नकद्विजिपुः॥मलसमुत्तलयथकर्म॥नकयाम्य
 वसोम्यास्यद्वयथअथनामूरु॥नकुः॥मलसुसामुखारुथानिह्यन्यकथा॥सिद्धार्थमेवयाभ्यवनेन्द्राथ
 सन॥यक॥याकुसोम्यकविदुर्गुर्गुस्याग्याभवातसंकु॥आथकीगुरुवृत्ताथकावाक्याम्यसोम्य

130

याथसिद्धार्थधनसंयाफिमृत्॥स्याशमसूर्यक॥दुर्गुर्गुनादुवाताथकहलेसदा॥गुरुवृत्तायंयः
 नस्यनुकात्रकतिरिजद्वय॥विनासोम्यदिवध्याथविभालेनद्विष्टगं॥युक्तेमलाविहीनेस्यात्सकुरु
 वृद्धिदायक॥याम्यहीनरुवचूनीविभालेवृहद्वयनी॥यकध्रुजलहीनाक॥सुगधुम्बकनीरुद्वय॥
 द्वादिकमसावमिसजायसीगुरुव्यकं॥याकवासिमुंसावासमग्नेरुसमहानसी॥याम्यनसकिया
 ग्यावचैससुनिनकसि॥धनरुकुन्यवन्मायागम्यगन्धोवमात्रुं॥सोम्यधनयगुन्क्यादीनदीका
 सूत्रालय॥सामिहसुमिर्गवन्मविस्तारमंर्योपिगुर्क॥द्विगुर्गुहसुसंयुक्तकृत्वाष्टद्वेनकथा॥याकाव
 मिसगवासमग्नेरुसमहानसी॥याम्यनसकियाग्यावचैः॥नसुनिनकसि॥धनरुकुन्यवन्मायास

स्वर्गलोचनमात्रं। तच्छ्रुवायः। तस्मिन् वायसान्ध्यादिर्क॥ नृपयकाग्निरवदधूतसाश्च नृपनारुवता। सर्व
 नागकर्मवन्धम। (अत्रान्नवसंस्काराः)। तस्माच्च नवमरा। गुरुकनिलया मरुतः॥ तन्म। (अथ मधुपः)। तस्मै सुमा
 वादिगुणान्मरुतः॥ प्रागप्ययद्यथाश्च वाहृपवगृहावली। एकेकरुवनास्थानि दिक्कषाश्च संख्यायाः॥ ७१
 भौदितिका कानिहलान्ध्यायधकर्म॥ ॥ रुयन्नात्रीवलत्तं वज्रयावृद्धिः यतायकः। धर्मः कलिश्चनेयः
 ॥ प्राग्वाचश्च सुधुवा॥ दाहं सुखं सुहृत्ता। नो धनना। नो मृतिर्द्वनी। नित्यं च ननयः। स्याच्च याम्यदाले
 रुलाष्टकं॥ आयुः। यथा वाक् सुस्थानि धनं। यथैव संख्याः। सार्वभौगं वयायं वज्रलदा लोहलानिवा॥ न
 ममकारि मुख्यं वाधयुक्तं भाग ११ मतिः॥ मानयदानतः। याक उरुवस्थां दिनिकमात्। दार्विष्ट

131

दा०

क०

कान्धमृदुमाजालालकविरुषिनी। याच्चीरिक्तमृमालारिः कयाटः। सागलेयं तः। कृत्वेवं तावत्संस्तु न म्नामु
 दवायैयुजयत्॥ दामनं तयथ सुद्वान्मृयैयनं नागुन्म॥ ततश्चाधो म्ना सयं सदा नारुक्तं नृगुदं। वः
 न्मसंस्तुयेन कालं गुन्मं सन्नायुरुकिनी॥ गृहायस्तु नर्गं सर्वं दत्त्वा गया सनादिकं॥ यतिं संस्तुयथ निदं
 कधर्मं वाद्वकनं ग॥ स्वष्टं वनालयं कथां रुद्धं म। (अथ यत्)॥ ॥ ~~नित्यं कलासमन्वयेन मधुपैव स्याः~~
 दिगृहस्तु यनं दारिद्र्यं तिमाविधिः॥ (अथ क ३३२)॥ ॥ यायायाया रुमा वास्या कृत्वा या रुवयदि॥ रु
 यन्दाहं नृजं मृह्यं नेस्वां कथां किमा रुथं द॥ दृक्कायं द्विगुणं सूर्यं ह्यक्ता कथां च सोम्यतः॥ जगत्थे कं पृथं वा
 यिकं चित्वा रु॥ सूत्रालयं॥ यवमाना सुधानो दोषा युक्तं विविधं कर्म॥ नर्गाम। (अथ रुवदकं कर्तुं निः

कावसनताप्रवृत्तिरिति विज्ञानं ॥ या कृतांशुष्टके मन्त्र ॥ यच्च हस्तयवाकार्यः ॥ यच्चानुनकुलः ॥ स्मृतः ॥ यवा
 (धृ) दिवा सुनिःसमहर्षे ॥ यमाययत् ॥ विषमेषु नमायानि मायदाया मदानुयत् ॥ अकुलं सा दमद्विमा
 यादीनं स विरुगिक ॥ आयदाथ विरुगार्थदाययत् ॥ सानवन्निर्वर्णसंस्तुमृष्टं वाकुलवकु
 ली ॥ शुंगुलं यत्रिभद्वनं जिनसंख्यां गुलायत् ॥ मूलं जस्वायथायत् ॥ मयजस्वाद्ययानिर्न ॥ हस्तका नृसमाः
 सनयाया गवाक्षुसाधनं ॥ चतुर्हस्तयमा (ध) का धनूर्द (ध) यसाधनं ॥ स हस्तं धनूर्वाकां गयत् ॥ द्वि
 गुर्धस्मृती ॥ गयत् ॥ द्विगुर्धं कुर्यात् ॥ यज्जनं यत्रि संख्याया ॥ चकदगं नर्कुर्यं स हस्तमयत् ॥ यत्नः ॥ नियत् ॥ य
 त् ॥ विज्ञादवर्दनिर्वदन्तथा ॥ वृन्दस्ववन्निर्ववर्चनं स्वमेयदसिद्धक ॥ समष्टो मधमकोर्यम्यजस्वम्यन

मन्त्रथा ॥ यना दमवमाख्यातन्दनवृद्धा नारुज ॥ नवमगानि याका नि संख्यामानानि सृत्रि विज्ञा यत्रस्य सर्वताः
 दिक् सवार्धं नवयत् ॥ ॥ द्वात्रिंशत्त्रयचतुर्दिक् नियं वेयवर्णकथा ॥ कुर्याद हि मूखा वंशो ममस्य नगत्र
 स्यय ॥ याकात्रयत्रिखावाश्च कायायासादकल्यना ॥ धनूर्गन्तथासाध्वं गथधनूर्गी गदय ॥ सचेज्जालि
 मूखास्सक्तानयनस्तः ॥ यनाद्वखा ॥ याश्चतीया गता मे (ध) वंसा दक्षिणसा मन्त्र ॥ उरुयां याध्वं ॥ काया
 यासादावन्नवर्जिता ॥ यश्चि मया द्वाखा ॥ गस्तु न्युं यश्चि मसन्मूखा ॥ उदग्दक्षिणसा अन्यपाद्वखा ॥
 यश्चिमानना ॥ नारुना सिमूखा ॥ गस्तु ॥ कदाविद्वक्षिणमूखा ॥ किं उरुय सरामूखा सा द्ययक विनायका
 न् ॥ दृष्ट्यादद्या मन्त्रं कदा कुर्यात् ॥ यनि लखितं ॥ ॥ पाठकस्तु नर्क दिशं यत्रयस्य सृत्रसिद्धिः ॥ तदा दोकी

ह्यनस्मिहोः कीर्तिः कर्तुः सूर्यकृया ॥ विष्णुचरानवलेख्य आग्र्या साग्निरासुको ॥ हनुमन्तं हनुवता लमा
 ह कालाशुदक्षिण ॥ चित्त्रा रुद्रकाली च देव्यश्चासिवाकृष्ण ॥ समुद्रावतः क्षनयो विष्णुमिशो यत्राजल ॥ वा
 यं कात्यायनी नाग सनीरासुश्च मानव ॥ सोम्यस्तु विष्णुवायुश्च यायकाय हासुथा ॥ नान्नरेव वा नृजाम ॥
 उक्ता चतुर्मुखः ॥ धनाद्यानि मुखादवाः ॥ सूर्यः स्वस्मन संस्तिता ॥ यनाद्यश्च विनास्तना नदीदवायथलवा ॥
 कर्तुं दत्तं लिखेत्साम्यं नक्तुं यत्र समुखं ॥ यथायत्र नथायमयं नृनंगं नृसदा ॥ स्थाया धाम मज्जगत्याकुपा
 सादांगवदवता ॥ सम्यग्भाक कमात्तना ॥ उराः ॥ सूर्यश्चतुर्भुजः ॥ कटुकवृत्तिगासिका ॥ विष्णुवायुदिया
 ॥ ॥ अक्षि विष्णुधियवा ॥ नान्मुद्राश्चरुं हा ॥ यासादस्य समीपस्तु सर्वदा वदहानृणी ॥ नृका रूते ॥

१३३

समाकाशं दृश्यं क्रिसमाप्तिगा ॥ असे कृत्तुं दनं तर्था प्रायथं क्रि विष्णुचर ॥ नागकं नृयन्नागजमीना नि
 र्देहा डिमा ॥ नागकं ना नि कलोचय न सच सच म्यका ॥ अयं की कर्तकी कृत्तु वीजकामा नृत्तु मक ॥ सजला
 नदिका वरुं साला गस्तु निमूकका ॥ कमूक ॥ कर्तवी नृयया नावता दिजा नय ॥ चरित्रं नृनिगा ॥ कृत्तारु
 कदा ॥ सूर्यः सूर्ययदा ॥ द्विकस्तु न नियम ॥ याक ॥ सूत्रार्थं स विष्णुचर ॥ निवस्य नियमाना सिपा सादः
 कर्तव्यमिति ॥ अनादिः सर्वेण ॥ यथादि कृत्तु सर्वा सूरुकि न ॥ मूमूकाय नृनृसी दया मूकिं उरुं लया ॥ दि
 रुद्राकामिना मिष्टमै नृदि रुल मूयत ॥ या नालं खंचनी सिद्धि ॥ नृदुदा हृत्तु नृनय ॥ नियुक्ता दधिनाम
 त्वं का ॥ यश्चि यदं कमा ॥ नमादी सूरु वद्विस्तु यश्चि मास्या ॥ सूत्रा ॥ उरा ॥ दक्षिण मूरु ना ॥ संस्तिता ॥

यादृखादिमा॥ ॥ अधिकचासमहीनं पूर्वामादिवाधकः। यासादादिनकरुचं कुर्याच्चमृत्युमाप्नुयात्। उरुय
 द्विगुणोक्त्या लुप्यति कुर्यात्। पृथगुक्त्या नानाह नत्वादायं यथाश्रया॥ हिन नालो विधिश्चर्यं तदा
 या हिनमारुक। काधदिधाम्नादायाय नायकस्याभिरुतः॥ चवम्बाधमता स्त्रीत्वाह निस्सुनादिनाययत्। स
 यरु सोलति माकां नृदवाधनवायन॥ स्वयंरुतं सुरुसेक म्महहिः॥ गतयं वकी कुरु गतेक हस्तं स्यात्सिं
 नजयति स्तिन॥ स्वावनेरुमिह्यवंजगल्यनयनं कुवो। नरात्यनं हि निम्मात्यं स्मृतं जको विमाचनं॥ ॥
 यजमानानुक्तं किं सुनिमिरुसमाहितः॥ पवित्र्य रूषिता धीमानुदासी गनगमचन॥ यटावुरु सुगुफु
 यनीकथञ्चयत्नः॥ धान्यकम्बुलेयकं चन्दनं न स चर्चितं॥ वसुकं वृद्धं गस्तं जलोषधम्वयुजितं। न स

138

वध

लुग्यटं दिशं न्यामम लनिस्वनेशा अद्यादि विधिना तस्मिन्निष्क कम्माद्यमश्नयत्। घनं मुष्टि लां सूरु कील कां
 धनं दुरुन॥ स्वाययित्वा तु संज्ञाय पूजयञ्च यथा कमी। यन्नाम गस्तु वृकात् ॥ कीलका नवजात यथा सुदृढा
 यकि काङ्गा वृहा वा चतुर्भुजा ॥ अस्माकु लयवश्च न ग क वः क वदी धका ॥ वदासं साधय रुतु सुरु धाः
 ननपूर्वैः। गकुं निर्वृणय रुस्मि नाजगत्याः कम गतु॥ मधूसयिद्विधिकी त्रे लिङ्ग मूला स्रव चन्दना ॥ स्रव
 सुवक्षिताः स्रव सुधूषने वधूयिता ॥ सालकं क रिसूरा य निनेः यथे प्रयुजिता ॥ अधमूला च गमधाम्ना
 रु नृपा यथो रुना ॥ अनला दिष्का ण्य ता उथ ला रु म्म नेश कीलका गुरुयित्वा वे ग क दग्निदिग्गयति॥
 उक्ता मन्त्रधनाधीमाना वा यथा ॥ यादृखः स्तिनः दकि णे न समुक्ता या वा मरुतु न मूषिना ॥ गृहीत्वा कीलक

न२

मूमाववर्कं धात्रयदृङ्गागाउयंनैयजयन्मर्षुषामिमिरानिलकथना॥उंविमर्षुनैलनामलाकयालाअका
 मदा॥अस्मिन्गुरुगुतिष्ठुआयुर्वेलकयासदा॥उंमूर्धुं डीकूँस्वाहा॥वाधमर्तकीलकात्रायधमर्तु॥
 घाताष्टकस्वयन्दयाद्वनिका मर्तुविगद॥त॥प॥धनकात्रुकसाउयत्रविषयथा॥देनेनैर्विषरुअरुः
 दानिष्यरुिजिष्यत॥यविषत्रदुर्गसर्वकडुसुजाउरुतदा॥रुिन्नदंत्यासजमार्थाकडुर्जागअरुंगत॥
 ॥मने॥मनेज॥धगकुत्कार्यसिद्धिविनिर्दिष्टत॥अद्यादिषधनर्गकोधनदाहादनिदना॥रुयमधकुनी
 गग॥सूरवमानकमाहवत॥कीलक॥कूँविनामूर्ध्विषहात्रयहवयदि॥आयू॥पूणार्थवृद्धि॥स्यायूतंरुसा
 यमदत॥कागमावात्वर्जमोअं॥नम्रावस्तुर्लेपुर्गसूरुनिवर्गयर्कूँकोयथगतनविमूर्धति॥मूकः

१३५

अशियमपुत्रश्चिन्नकराविनस्येति॥तस्मात्सूर्यकिर्तकत्वादकि॥जनउवस्यत॥अहुमशीकतंरुवलि॥की
 लयूदाययत॥आ॥मयांकनूस्वाहत्वा मर्तुमूत्रात्रयदिमी॥उंमूर्ध्विषाथसर्वेसायवाचतसमासिता॥व
 लिकस्य॥ययकामिपू॥मोदनमूरुमी॥॥नेमृताधियति॥अव॥नेमृताययत्राकसा॥वलिकस्य॥ययक
 मिसर्वगुरुकुमलित॥॥॥॥उंनमावायूवाऊसायवाचतसमासिता॥वलिकस्य॥ययकामिगुरुकु
 पृथमोदनी॥॥॥॥उंनूदस्यअसर्वेसायवाचतसमासिता॥वलिकस्य॥ययकामिगुरुकुसूमनास
 का॥॥॥॥सर्वगुरुकुवेदस्य॥स्वाहाकात्राकयाजिता॥धुवादिदीयितामन्त्रा॥कूम्रयित्वा निवदयत
 ॥अवमायादयादवा॥कमधमननयुजिता॥गर्थितामुष्टमनसा रुवन्तिकमसिद्धिदा॥दद्यामगाको

लकमनुषा ॥ त्रायूक्तवर्मजम्बापिसूरु कटमथाशुला कटुक वृकिसाखीटकलिवाकपसेकवशातनञ्जन
नत्रवास्तुसमावर्जयऊरुग ॥ नाधिकसुखदकुरुदोषाचनसदाधिक ॥ वेत्रमात्रीविनागप्रमृष्टुगाम
र्थनागनी ॥ पवाससुकुनाहीति ॥ अगमधिकसूरुग ॥ चर्वकात्वाउसूरासिहम्नात्रलेनवालिख ॥ नोय
धवानिबध्नामाषवृद्धेद्विजातिम ॥ नाम्नायास्त्रिजदाभात्रगृहदात्रिष्टकाभ्रिह ॥ हलोवालिखिते
वस्त्रिदोषाचनरुवकिच ॥ मृष्टुचवञ्जनंत्वदीदाह ॥ कयार्थनागनी ॥ नोनाइयमथाक्कादब्धदानिग
द ॥ कमातु ॥ पादनाच्चाटनंलखादयस्माननेखनच ॥ अजिननरुवद्याधिसुस्माद्वन्नालिखत्सदा ॥ गरुम
नोवास्तुमिष्टाधमनुसूरुय ॥ तत्कालनकयकृत्यविनायनदृश्यते ॥ ॥ इति लकमसमूहः

१२५

वि०
नचनचमगलकननिर्दुयसुयाविंसेतिमाविधिभासाक ॥ ० ॥ नलोदानम्यवश्चामिसाम्य
नमसन्मना ॥ लिफसुसंस्तुनस्तनंनयमानत्रसूरुक ॥ नमश्चकसमीधवासन्धनंदर्शनयदि। काः
हवाधनिवास्यायदिवास्तुलंघनं ॥ गदोवेस्तुस्तुलंघविद्यायुगृहोक्तिग ॥ महाममास्त्रिगत्यन
रुयंकुरुमहकुरुव ॥ अस्त्रिस्तुलंघनंनयमानत्रसूरुक ॥ नमश्चकसमीधवासन्धनंदर्शनयदि। काः
ग ॥ माऊनिसूरुलंघादिनदक्षिनासरुस्यवा ॥ स्वयंस्वयंनकासांमूवाटस्यान्यतरुय ॥ स्वाहि
नत्यांशुनानिह्यमृद्वगस्तुनजायते ॥ अथजाविद्यांगवास्त्रिष्टाकयावास्त्रिस्तुनिक्षिर्ग ॥ गवास्तुवा
तिदानिष्टांभयीजाक्कागलाक्तिग ॥ अविजाइमिनाग ॥ स्यादम्बुजम्कैजंगवा ॥ वाजिजात्रग

मां नासाधर्माः योरु कजा न्मदशास्त्रनमादिष्वविद्या कुरुमाक्षु इव नथा तज्जामधनप्रमस्ति जिह्मि ४
 नीलतारुयं ॥ अम्बुकास्ति तूलायनमृगकाश्यादेते मर्जी ॥ जिह्मि ४ यत्रायजी विलं धनार्थनिवया नृजा ॥ या
 द्यादिगूकप्रवसाह नदंष्ट्र निधारुयं ॥ याद्यवहस्ति जंगल्यं दोर्हो म्बुद्वगकृद्वगतं ॥ मून्मूत्रं कप्ररुधार्थ
 पालुना मसयां सुको ॥ न नो दृष्टा रुषा म्बु न रुस्ययां सुयलकथनं ॥ रुस्मां म्बु न दाहः ४ स्यात्सवासः ४ यां सु
 नादुर्गं ॥ रुषं धन्य नागं यजमान गृहसदा ॥ सूरुसका शुमान रुषा म्बु विद्यापयामतः ॥ गृहस्था
 खानिधानं स्याद्वा ह्येन गत्यमाद्यतः ॥ वृषरुन निधानं च ॥ म्बु गदुर्गं विदुः ॥ सवर्षु न स्युः प्रीयं धनं य
 नं ॥ वृद्धिर्दो सिस्ते नाहदिति धनं गृहस्था ४ सुखावहं ॥ तत्सूरुगदुर्गं यः ४ स्यात्तु मज्जधनं न जायते ॥

137

यत्र निगीत्र वम्बु नद्विषयासदा ॥ अजा विकमलाहामनीतिका चार्थनागकृता वृषदं समलाद्वर्माद
 रुक्मधनहानिर्दं ॥ पुकिं सीकी रुना कुरुः ४ सूरवग्निक्रियदायिकाः ॥ सातुदिग्गजगज्जं वि कुरु अ ॥ धनि धिक्कि
 गः ॥ यक्क कृष्णस्ति ४ सूर्यस्ति मादृशे रुदादिकाः ॥ म्बु न दामुरुलदा ॥ म्बु न दकाधमवृषदा दयातः ॥ यकि म्बु
 सांष्ट्र दिक्क म्बु नि धिम्बु धन वासिनातः ॥ कथा म्बु गविदि म्बु नां कीरुना स्या रुदस्ति च ॥ न नं यामस्ति ना
 म्बु ययदिना क्रियत रुतः ॥ म्बु कधमं जाम्बु श्री सयुध धन नागकृता ॥ गदुव म्बु क म्बु म्बु नां यव म्बु
 वियहिद ॥ सूर्यास्ति सूर्ये नां रुयं गन्तु श्री यलना सदा ॥ कर्म म्बु कर्मजं गल्यं विद्याया गयद्वि कृतां स
 खावृखा स्ति कामार्थं कथा दिषा म्बु विदुः ॥ म्बु नं गन धनं धनं म्बु ४ स्यात्तु म्बु हिष म्बु ॥ न नं नाकिं गः

दांमृत्पुत्रयसाज्ञाहर्जसदा॥ वृषजसंस्थपूजाप्रनवनव्यनिष्ठता॥ कस्यैकात्मनांनदाद्वर्जनाहर्द्वयमन
 ॥ रुयस्यादिष्वकात्मनानुवृत्तिरामनिवृत्तिः॥ कस्यैकदृष्टिजीवित्वंरुग्मत्युच्चैर्दृश्यं॥ याधिसाधुनवा
 लानाम्युत्तिमायजीवितं॥ नृगत्यास्तीजलत्वंस्याद्वक्त्रहत्यानसंसयः॥ सत्यंवास्तव्यंनित्यंनित्यं
 भित्तनव॥ तन्मन्त्रादसंस्थानिसंस्थाध्वनिष्वरुहिव॥ ॥ आजमसकनान्यभाक्कृत्ययनादयि। सि
 लिनायजमानस्यत्वंन्यातनिधायिनी॥ विष्णुयंलिंगंनृगत्यान्वाहुदहनसंनयः॥ यन्नामयस्यन
 ल्यंनृग्याहर्द्वयत्वं॥ निर्विकारायदायुक्कृदादिनहिताथवा॥ निःशून्यान्तर्गतदार्ढ्यमिःक
 धितयाचदधिकः॥ वाह्यैरसंस्थितंनृगत्यारुवद्वक्त्रंनृगत्यारुवद्वक्त्रंनृगत्यारुवद्वक्त्रंनृगत्यारुवद्वक्त्रं

136

॥ निःशून्यंनृगत्यामृत्पुत्रयसाज्ञाहर्जसदा॥ वृषजसंस्थपूजाप्रनवनव्यनिष्ठता॥ कस्यैकात्मनांनदाद्वर्जनाहर्द्वयमन
 कामंनृग्याहर्द्वयत्वं॥ नृगकथूयनाम्काजीदातदन्माननः॥ मुखसंस्थर्जनकाष्टम्भैर्द्वयम
 यधिव॥ नास्याहर्द्वयनस्यादात्रिंशमवर्गमात्रं॥ दन्तादातुकिरिदंकेकनस्यादाहनकयः॥ विदु
 मीहमगात्रमाकर्षकथूयनरुवत॥ तन्मानात्संस्थितंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रं
 नृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रं॥ वृषदंसकर्वकवातद्वक्त्रंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रं
 माऊनयनंनृगत्यामात्रं॥ पूजायथा॥ अस्मिन्मन्त्रेद्वयंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रं
 विद्याहर्मानादर्थनासकृत्॥ कक्षायांरुग्मत्याहर्द्वयंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रंनृगत्यामात्रं

कंकणमालाशदक्षिणवक्त्रपृष्ठकयालमाधमृन्मयं॥कटिमारुणकन्धनक्षत्रयुक्तमात्रावाभरु
 स्तुवसंयुक्तस्वदायादस्तुदक्षिणतः॥जानूमाशादध्वजध्वनक्षीनागकानर्क।यावत्कथूयनविंशान्नमा
 द्धनदुर्वाशुली॥नरुनागभरुवरुस्यउदगध्वमूर्ध्मदुर्वाउदगध्वगुणल्यस्याकटिमारुणिसादक॥दुदय
 रुदुर्ववाधः॥रुदुदकस्यमाधतः॥युष्टनपृष्ठजंल्यसौकत्रमाधकूर्यन॥तन्मानाद्वक्त्रकलाकसौकत्रा
 दामयामहान।कटियुष्टनायकध्वजिकनाध्वनानागदः॥स्त्रिवांशुयवगनाशकटिनागपदनुमत्।सु
 रुस्यभस्त्रिलिङ्गि कनाध्वमदायद॥उर्वानुदुर्ववाधनूजसाद्विदुस्तः॥स्त्रीदःसीलागूजाकल्यादात्र
 नसाधनायद॥जानूजधयाः॥रुनाशुक्तिकानाधितस्यवा।रुस्यमाशादधःसाशुमृष्टर्धधध्वनाना॥

१३२

नायितायस्त्रयादुर्ववाधनिशुयत्रजीविनं॥जयास्यभरुदक्षिण्यादध्वजकादध्वजुलानातनवध्वजधः॥
 दुर्वाशुः॥यवत्रसंगयभाशुल्यास्यमस्त्रयादः॥स्यादध्वजुलानातनार्धध्वजुनोधध्वजवासादः॥
 स्वजीविनी।यादस्यभस्त्रजास्त्रिः॥स्याकलभस्त्रजभववा॥द्वादध्वजुलमानारुस्यवासमृतिर्दकमाना॥नी
 नीविठमयाः॥मुष्टागुर्वटीवायद्विचित्रिता॥धाउभस्त्रुलगाधस्त्रकमाकाकनासदा।द्वीगुलीरिहयास्त्रि
 ॥स्याद्वामृतिः॥साद्वितालगः॥कांगकनिष्ठयौर्ध्वं॥रुममस्त्रुलादध्वजध्वमयादतलादुर्ध्वरुवदध्वजु
 लेसदा॥यास्त्रिकथूयनगालाकयालायवदुर्ववाध।गशाध्वजनाद्विद्यानानागल्यानिवद्धिमान्॥सि
 कतारुस्यलाहस्त्रिमलिमूकादिवाशुर्ग।वद्वमस्यभनानिह्यगल्यानिविद्विधनिव॥नानिगस्त्रिममा

नननन४रुलानिपूर्वव०गत्यानिविरुतेकंरुचत्वात्रिंशच्चसफच॥नयूयवसूहानूचद्विचत्वात्रिंसदन्य
 था॥स्वयमानेकुवागेरुलस्यनवाकुनायदिहमविदुमतात्राविनत्तानिविविधानिव॥मलिमूकाथर्ग
 गृगंर्गस्वकुकीसदेवउ।सजीवावधनिर्जीवोरुकरुमोसूखयदी।तदासर्वार्थसिद्ध्यर्थह्यययङ्कुम
 श्वन॥उत्तरानननमाकुगुदगत्यनदायकुतातायानिककिर्तनगत्यासादकायदनृत्त॥तस्मान्मन्त्र
 निरुमिस्वनलायानि कीम्वध॥कविदुदसुदमुकुदतदायानजायत॥सूत्रधामसमगलुवागुलिंग
 नयेगन।रुतगत्येनेदाय॥ह्योजान्वधायोगमद्यय॥वाक्कांयत्रियहवादीयदसंस्तुयनतथा।रुहिन्या
 नेगधययजुवाकुलिकालिक।सद्वात्र॥रुनलनसदृकन्दवलुगुह।गरुपमानन४सम्यक्कुमनाया

७४०

त्रितसमा॥॥निलिकुसुमसूत्रयगत्यादामयकुविंशतिमाविधि॥॥अक०॥यजमानंस्त्रिवीजं४
 सितवकुविलयन॥आचार्य॥ह्ययति।येवदेवकायिगुधनिर्ग॥सुवोन्निगाम्नानतान्यजमानमुपूज
 यत्।ह्ययतिविंशकम्माकुदेवकानदिकम्बन॥सचवरुगलविद्वान्शीक०॥ह्ययक०स्वयी।पूजयित्वाकु
 तांसर्वोक्तायित्वाकमाययत्॥यत्रिकर्मकमाययिर्दिनेयूया०स्वगकिर्त॥हिनयवकुवदाननवाहि
 वीमोन्नुगाययत्॥ननअचम्यविधिवदाचार्य॥नित्यिनासद।यक्रुदयालिर्तद्वयविसेहूमिसमाहित
 ॥उरुत्राहिमुखोरुत्तासकलीकनविग्रह॥आत्मयूजामघेयार्गकृत्वादयालिर्साधयत्॥अमुजर्क०
 कृतेविद्वानमुत्तलिख्यसर्वेग॥निश्चयदमुसारुमिकथग।आदकनव॥गन्धगायकिर्तम्येक

स्वावदासमनुली॥ सुनूयां समदानूयां सुखा लंका नरुषितां नमया नं निष्ठावत्सं ध्यात्वा सम्युज्जयन्मही॥ स चैव
 वमयं वासु पूर्वे नेतु गृह्यथत्॥ तता विलिख्य नरुषं वहु नर्यं समनत॥ घटिका नं कथा गनन नरुषं दमन
 नवा॥ यत्ना निनूय दवक्का विमुक्तं लग्नमादिनत्॥ लग्नवला विना धन सूरु रूमो यथा जयत्॥ ॥ सिया य
 (ग) वती काना सुयिया विमला सिया॥ सुसा रा रान्की यता ॥ यथा द्वा शान वना उिका ॥ धन धन्या विमला
 च स्त्रिना नूना गदानि ॥ विदुमा विरु वल्लभा उरु ना स्या नवा दिता ॥ अष्टाष्टक य दं कुरु कर्त्तुं सुद दयाः
 चित्॥ कृत्वा यजं दनादी ना नव वल्ल द्दि को कसां ॥ ॥ यदा वल्ल न्व नं वे न्यं यजं द्यु न सुता कर्त्तुं ॥ नाथा त्य ले
 य गुरु न्ये कुरु यं द्विष्टं यता कया ॥ न त्वे निरुदं न विं चू विना न नयजं कुरु ॥ (ग) धूमा ये द्दया ॥ सत्य मूर्त्त मा

१४१

पाद नेरुत्था शामाखे ॥ यकि मो मो सु न वम्या दिनिदवता ॥ अमुद्ध काष्टक वक्रि येष्टका कुरु वधवा॥ यथा र्ग ला
 उ मेक न ॥ रुमा च विन थ द्दया ॥ को दं गुरु कृता या थ वध कानं यमा यत्र ॥ गंधर्वा य द्दया गन्ध रुग्ण य व ग
 जि द्दिका ॥ काष्टका दकि (ध) दया ली लं य व मृग यत्र ॥ यिर्शु द्दुद्ध तिला न च न नदि न द न धा व नी ॥ सुगी वा
 य द्दया या वी यू द्द दन्ना य द रु क ॥ यमं पा च न स द या द सुना य सुवां द्दया ॥ द्युता मुक त व ध ना र्थ का व
 वरु य धि म ॥ व ७ अ र्वा य व ल्ल द्द ना ग य ना ग के नी ॥ द्दया ॥ स्वाद्या नि मूखा य मूर्त्ता नै य कृ या यत्र ॥ सा
 मा य या य सी को द सा लू के विं ग या द्दया ॥ दि ह्ये ल पी मू दि ह्ये व मू या न द्द थ सो म्य न ॥ आ पा य च य य ॥
 काष्ट र्नी ग म ध ली ग का व न ॥ न द ध ॥ काष्ट क द या दा य व सा य व द मि ॥ मनी च भव लि द या व उ य द

783

नारोवन्नाहिनानिहम्याध्यायार्क ० नयरा ॥ हिनोमिहविवस्वको वाक्तात्रिदुजयागुद। सहसन्दसूहखाग
यायाया ॥ सफयकिग ॥ जानादिऊयथासंवे वक्ष्यायासफदकिग। घेरुमुषोचयादक्षे ॥ सूकावापुद
वगा ॥ हिति ॥ ॥ कथकत्वधनावाक्ताममोयममोसन्धय ॥ मृद्धसिद्धसुनोनाहिर्मोहाममोवियेव
च ॥ यादमथायममोनि। गयत्रवापुसंधय ॥ वसायवर्मत्रवा ॥ स्य गूलंषकमथाखनि ॥ वडुक्ष्वववडु
का। ला निलंयदादित ॥ ॥ गमिनि यिगवायसदा मूलसवहिति ॥ आयवस्याथसाविजाजदाग
वडुक्ष्वग ॥ विद्वत्तममिमृत् ॥ स्यात्तिजाधमयममोनि ॥ सन्धोमिगप्रदानिधवत्सवत्सकयसुध
उयवत्सरुवत्सीजगरुनागमिमूलक ॥ षड्वववर्वेनत्वंवडुक्ष्ववारुनकय ॥ लानिलचनिगवाग

नववर्षयुगीउनी॥मूर्द्धि॥कुरुविनागंसारुसादतांविदुर्कथययदात्वाठगहागननिनामानमिहादि
 तं॥अर्कदिश्वसूरागेववंसादीनामृवत्कमात्॥सुलमानमिदंयाकसूत्रमानमथयत॥नकांगुर्तसमान
 सत्वेकैकयवदानितां सोमनःपूर्वतावापि सूर्यसंचालनात्कमात्॥कथसुहादिविन्यासवधदाघीन
 जायत॥ज्ञानताज्ञानगीवापिमनेवधसुदारुव॥अद्यानगतदामयतदाभक्तिःयजायत॥००
 कावाहुयूजागृहपासादयास्तदा॥॥००॥श्रीभस्त्रेभनगूडासोयर्क्योभयनायकः॥त्वष्टृसूताजयन्ता
 योमहन्दादवनायकः॥सूर्यश्चादियौतेऽथसखाधम्माधिवामहाना नृयत्कभनरायामत्तनिर्वन्वान
 नामतः॥यथाहुयूषदवदुदधीचिर्वितथसुधा॥गृहकृतः॥कृजः॥स्थानायमः॥कात्प्रवाचन॥विश्वव

188

त्रयगन्धर्वोर्दगीसाद्वलागदः॥यमस्तसामृषाहृक्कादिगात्यादकसाधियः॥दोवात्रिकः॥सृता नदीसुगीव
 यगुरेववशः॥यूषदकागदः॥यथावन्मयकुलाधियः॥देवामासाहृवत्कः॥सायः॥कुरुद्वदकृतः॥याथा
 मन्दर्गिख्यागोवर्गावायुप्रकीर्तिः॥नागप्रवासकिः॥पाका मुख्यनामावृहस्यतिः॥रुसाटायकनाज
 सोसामयन्तामृतात्मकः॥मृद्योगेयवकावेद्यः॥सनाम्नावादितिरुवजदेवमानादिति॥अकात्वाय
 यिवहिमाचलः॥आयवस्तुडमादवीमनीवीवमृजोरुमः॥सविगावाधनामृकः॥साविरीवमृप
 तिका॥विवग्मनमृमाख्यातः॥००॥सूदद्वयन्दकः॥००॥जिदकसः॥यूशमिशालानूहृतीयकः॥न
 ददार्गयवअस्यायकायः॥सामनूदकः॥धनाधनोमननः॥स्थादमवउमृखामतः॥यथाथोयः

मृताभां तु यथा कः पानमध्वनः। सोऽका नवनकाशाः पूर्विका रुहिना कसाः॥ ॥ कादिहानैः
गानुठे विन्दुयुक्ते हनादिकानां आयादीनां लाङ्गमागुक्ता यजुश्च स्रक् वदय॥ दीर्घाश्चैकैः कूविन्वाद्यैः च
नकाशांश्च नाकसान्। पद्यवादिनमाकासात्वाहानोदलिकर्मणि॥ ॥ यादानपूजितस्वाभयदमा
दोन्यसक्तवित्। नकवल्लुकाभाः ४ कवल्लेखलनीयतः॥ रुक्म्यात्मनूनाद्याथयातसुक्ता रुयम्
वतः। मृदालुकं च काभाः ४ काकसात्पूजयच्चतः॥ मृदायां गुलयापूर्यहस्तपूनाभिरिक्ततः॥ अ
हसासायवाकाया रुक्मिपादेभ्युयादिकैः॥ देवादिब्रह्मवर्षेभ्यो मदलावर्तकमाता कपूरसकटा
रुयात्समीची सुककाश्चैः॥ नीत्वा यादानता न च ततावाप्तु यजुत्पूजः॥ समाधेति फलकस्वः

१४७

या ५

नागाद्यैश्च मलयैः॥ कदलीवृक्षमालाधनानां च ऊर्ध्वोत्तरादिना विधिना रुमकमुद्येर्गुर्वादी नुदिनं यजतः॥
नितकुम्भमुदिककुम्भांस्तुम्भश्चैव छित्तकथा। निवमिच्छातताहर्षाडककुल्यथविधिः॥ वासुदवांस्तथाघो
नीयात्पूजयन् वदो मयतः॥ सदत्तावधयाधुक्कीहियात्रदसीयतान्॥ वसुकः शनिता नूमा न्यासद्वयादि
कीकमात्। अनकम्भश्चतान् न्यानिधींश्चैव ततः कमात्॥ वदुनां ग्नादिकालेषु नूनाको वदुनां यनान्
। यद्येवैव महापद्ममकत्रं ककुपकथा॥ मरुन्दनदनीलांश्चैव न्यस्यैवैविधौ। उकायां नमानां च
मक्षमां कान्यथा कर्म॥ न्यस्य नूनिधीनता नूनसां जलथनेह। न्यानि लाष्टकदवांश्चैव विदधत न
निवे॥ कृष्णकनिधींश्चैव सन्निवदयदन्त्यसत्। नववृकानिलावायिकांश्चैव ग्नादिषु कमात्॥ सि

हाकिताय नमः प्रधमायि धौदिका न्यसतः। तजान्याः यंत्रयथाकांस्तंस्वकांमध्वदगनशा आधानग कि संक्राश्च
 धर्माद्याद्यादिभित्तः। सुवोयाहीमयर्थकांनिलाश्चकंष्टवतान्॥ स्वमाना यस्तुमन्त्रे चस्त्रानयूजादियूत्रि
 कान्। पीठत्वाभींक्रियायौधर्मायां प्रवृषादिकां॥ क्रिमासुनमध्वानंश्चत्वाष्ट्रं॥ यकल्ययत॥ ॥ अन्य
 जाकाः कवित्कृत्वाः निला अयथयंत्रव॥ न्यसत्याश्चता माना नृगश्चादिकागनः। यद्येवमहायम
 मकनैककृयनथा॥ नर्यत्रयंमं चस्वसंक्राहि निधोत्तसत॥ ॥ यासादसूयित्वाउ कश्चवित्कृत्वा मध्वत
 शकृत्सूय समस्त निला न्यासविधिर्मतः॥ वज्रसास्त्रे लाः कायास्त्रमनास्त्रमसमिताः। वित्कृत्वा नमु नि
 र्गमनवा दूय नसूयमिताः॥ अष्टकास्त्रेष्टक कायाः। नेलनेलाः निलाः उराः। न न्दरुदाऊयाजिका पू

१४३

यायत्रमोमताः। शूकनेवदिकां कृत्वा तस्या द्वविनिवनिताः। आग्नेयादिष्कात्वे मूनन्दाया अवनान
 यत॥ ह्यमैगलनिधोषे निमिरेः॥ नरुनेः॥ उरुः॥ पथमंस्त्राययत्रकां सानीत्रविष्टवनेतु॥ अन्यः कर्म
 न न्यसूयाः स्वदिकस्त्रमनुष्म तगः। समकृत्वाः॥ क्रिमाः कृत्वा स्त्राया पूर्य मन्त्राः॥ अमुताय नपथम
 मृहिकायैः॥ यूनमुनेः। प्राययित्वा निलास्त्रमुद्रमवधुः॥ सूत्रमरुनाः॥ विद्यात्रयास्तुतांश्चत्वाष्ट्रं त्रिदशांस्त्रि
 तानना॥ आवायस्त्राययत्रमुद्रविधिर्मन्त्रवाविष्म॥ स दृष्टमृन्मयेः कर्म विष्मयद्रम निमिरेः। वस्त्र
 वताय मूद्रयचन्दन नविलययत॥ वस्त्रादियूजने कृत्वा नवरी सन्निवदयत॥ कृत्वा तन्नाम मन्त्रुलसि
 तामन्त्रीयसाधयत॥ ॥ उं नन्दनदिनीयं सांत्वामरुक्ताययाम्यहं। अरु त्वंतिष्ठसंक्षयावदाचन्द्रः

नात्रकी। आयुः कामं विर्यं नन्दनं हितं सर्वदा नृणां॥ अस्मिन्नासदाकार्यायासादयत्नगत्तया॥ ॥ॐ रुद्रं सर्व
 दारुदं यन्मोहितावहं सदा॥ आयुर्दामदादविधीयदासर्वदारुव॥ ॥ॐ ऊर्यसुखदाशुनिष्ठत्वं स्कापि
 गामया॥ निर्यं ऊयावहादविस्वामिनः॥ यदासुख॥ ॥ॐ त्रिकत्रिकदायधुसिद्धिमुक्तिपदगुरु॥ सर्वदास
 त्वदायकं निष्ठत्वं मीसेनूयक॥ ॥ॐ यू॥ सुखमहाविश्वसर्वसदाहलक॥ सर्वसंयुक्तमवागुयासादक
 नसर्वदा॥ ॥ तेषामयविविच्यस्य नित्यं यवकमगु॥ निवाकूया निग्राध्वाशु नन्दायालिंगवत्सदा॥ नर्व
 यसायं नन्दायाम॥ अकर्मयजं सुधीः॥ कायासिक्कमेविन्यासं गिव विन्यासवद्विधिः॥ नत्तलाहं गधधु
 योजोषधिसपादने॥ किञ्चैवैकं गुरुष्वष्टौ वाप्येव निधीन्यासन्॥ न्यस्य धामनगकिञ्च नित्यामयत्रिय

७४०

चैव न॥ साधितवात्रवधर्कं योऽवन्मावसानतः॥ कृत्वामहासर्वनाशो दत्तादिगुरुसाम्बली॥ गुर्वदित्यासेन
 दानन्दत्वाकार्यायैयिका॥ सिखराद्धोत्पुथुनात्रायजं धारुमोक्षयः॥ मध्यमं विविदी नस्य अष्टाक्षनाध
 ॥ सामगः॥ वक्षायदार्कदवानासवक्ष्णायजं यिका॥ अधमाचतत्रयां गुरु निवस्य गुरुयथकृया॥ म॥ अस्वय
 यत्रियञ्जलिभार्दविष्णुविसृजं॥ जिलाकूमुदिकायाययत्रितः॥ सैयप्रयत्न॥ यो० म॥ अस्तिनयध्व
 कस्वरायजं नदिने॥ मूर्तिमूलासरुतेद्यौ॥ अत्तावास्तुयजं स्यनः॥ समायजं यिका कृत्वा उगतीयाव
 दवदि॥ ह्यमीगलनयसादं गुरुसुखयत्न॥ ॥ॐ नित्यं नमः समुच्चयवास्तुयुजादयसंसायनः॥ य
 नविसेतिमाविधिः॥ स्तक ३०२॥ ॥ श्रीधिवरुगुणः॥ सुत्रयासादात्रिंशमानतः॥ अर्धनतिगदेद्यौने

[illegible]

मधुयष्टिं दं सके शच उ सु फ्रा च न त्तम (अ) द्वा द श स्य थ क मा त्रिका ॥ नि ग ति ग मु का (अ) ष्ठ म्भो वा (अ) क मा त्रिका
। या ष्ठ या न ग ना वा पि क र्या दा सा न स य र ॥ स रि रि ४ का (अ) रि रि वा त्व रि रि न पि वा य न ४ स का (अ) रु रु सं
य का म धु य ष्ठ रि धा म न ॥ ग द च उ च्छिका ४ का र्या ४ या ष्ठ या ४ य ष्ठ ग मि धा द्वा द शं स मु न स र्वा ४ या सा द
वा रु मा दि क ॥ म द्वा त्री न थ र्क म धा नि रि अ य न (अ) ग थ ॥ व द न र्वा न (अ) क र्या रु र ४ का (अ) न थ न र ॥ म धा
द क द्वि त्रा मां से ४ य व ग्म त्थ पि न ४ क मा त् ॥ ज ग ती र्म स ना धृ त्वा व द्वा र्तां स उ ला य य न् ॥ न सां से व उ री क्ता
या च उ द्वि क्च म धा न ॥ वि दि क्का (अ) धा मा नि व र्त्तं से म धु ये स र ॥ रा (अ) क वा द्वा द श (अ) ष म धां ग कां द
न ॥ स म सू र्वा क्क क्क द स म र्वा दि व रु य न् ॥ ज ग त्या र्म स धा य न म धु य स्य च रि रि ष्ठा वा न सू वा ल यं स

मृगवृक्षीनिश्चयविवा॥ कूटां च यश्च न वेव नूयकं यश्च वान्नि कां॥ तद्वत्तय कथमप्यविद्ययश्च॥ सुनिश्चिन॥ क्वा
 त्वाक्तावगता गमनमूकान् वृद्धि रिरि तश्च वास्तुमानमिति त्वा रं लिंगमानमप्यथ शन॥ लिंगद्विगुणिता ग
 रुत्तद्वत्तय सप्तमसनी॥ यी ज्ञेयत्वं धनदसायां द्वात्रिंशत्तया अविस्तु त्र॥ त्रिंशत्तया विस्तुना वाक्च ऊरु गुरुत्तुस
 मृद्धिगा॥ मंजुत्री वृद्धिरागमया मंजुर्थ्येन नासिका॥ नासिका द्वे तु यच्चा द्वे मनस्कदा रुवस्तदा॥ यं वा सैस्तु १४२
 यत्वं वनप्यथ द्वे सुगं के जल॥ कथा लामलसा यो वरागमद्वे विनिर्गमो॥ द्वांसा द्वे द्वे द्विरागमद्वे ४ कमा
 दीवादि का कुर्य॥ कथालं वदिका तुल्य मी गमना लिंगमानतश्च॥ धमा द्वे तु मग्न काया तद्वेन वरि रुय
 ॥ यद्विद्वान्गता धमा द्विगुलामलु यश्च॥ मधुया द्वे यमा लनयु जना मुख मधु यश्च॥ मूखाख्य मधु या

द्वेन कनवीया वृद्धिका॥ वृद्धिका गतानि ह्यङ्ग मनी धममानतश्च॥ जगत्तय द्वे यमा लन का लधमा निरुवेय
 त्॥ तत्समा वृत्ती दिक्क स्वमान मधुया द्विगा॥ ॥ तशायज्यिका द्वे तु यदयी रं विवरुथेता या सादुयरा
 गनर्थ सैव तत्सर्ग मूद्धय॥ अङ्गमधिक धममधु विस्तु त्रस्तय कथन॥ तद्वत्तय रुने द्वा सा द्वे सैव यद्वि
 का॥ सां विद्याया रुवत्तु मृ॥ यादन कुरु यद्विका॥ द्विरागमया कथमकुरुत्तु दत्तयश्च॥ अङ्गुल मधु वत्॥ अङ्गन गल यदी
 त्या द्विगीय वलिगा किना॥ रुगीय नाय यदी तु तया मा वृत्तु नसिका॥ यादो नां स नद साखा तत्या दना द्वे यद्वि
 का॥ उरु द्वांसा मधु धमवत्ताने यय द्वा विवरुथेत्॥ अङ्कां लनयव गं ४ त्या ल्यु सना न विन्दक॥ कलिका गनि
 रागन विस्तुना चाधु नायेत॥ जिनी रुतु यी ज्ञेय मध्यम थक मधु रिश तन्मप्यु द्विरागमया म्यवगम गुरु

हृत्वा यवंगः यनगं सच मधुसूतं यकसदा न वमवकुं जाया मज्जया विदिका वधिशः जघिका मूलमधु
वउली मरुथकूरां सासा दनिखन म्मायि कया मूयन थदिकां ॥ नगेनूयन थं कया त्ववां से १ का ववन्ननं ॥ य
अयकान्क मूका यं यवंगं निगयनं ॥ यवंगं यवंगं मर्दन कू मकां सग सुधा अर्द्धन यदिकां कया द्या
कयं यवंगं ॥ कयं यदिकां निष्कासा तथा वलि तयदिका अर्द्धासन तद्वं उका यो ववा ययदिका ॥ तस्मा
निगमना यि यदिका च उगलिका ॥ यं यवंगं तः हा तस्मत्त्यद्यं यवंगं तः ॥ निगमां सन यमस्य पाका
सं यवंगं ॥ सन्धियगान्धितम्यदी विदधी तस्मा रुने ॥ अर्द्धास विंगसा दाम कलिका यगि संस्तिता निला
तयदयी रंया दवन्दा विंका मय ॥ यथद्विद्विगुलजं जाजं द्याद्विगुलमं जनी ॥ तद्व्यं यद्वं कला जं द्या तन्मधु

[illegible]

नशायायदिकासाद्वनः किना ॥ नकदायासपदिः त्यादासस्यवंगतगखनकमुवनीजंघाअछानाया
 दमानतः ॥ अमाकांअजंघाद्वकरुयालमिनीवधेशयात्रुकिञ्चवपूवायियववत्थाथवावगा ॥ तिनकाकनसा
 राद्यामकाहानावतीयता ॥ अरुधसअजंघाद्वविरुअवसुरागतः ॥ धृत्वेकतदधःयअनवधननुकानयत् ॥
 तशद्वनयवंगमयायादिकानुविवरुयत् ॥ तथानिकासिकाद्वनरागनवउन्निका ॥ यादानांमनदंसायास्य
 दीतत्यादनारुवत् ॥ हिरुगिनेवेअस्याकधृपदीउरागतः ॥ तत्यदीयादतःकायायादानांमननिर्गमा
 ॥ तरुलिकटपदीत्याकुशिवेदालिकासगतः ॥ रागमर्ककिधकृत्वायवमन्त्रेकरागतः ॥ कधृसूतसमःकायादि
 तीयनिर्गमातथा ॥ यदिकाउसकरुयाद्वितीयनायनिर्गमा ॥ ॥ वलितंहीसयादानात्यादालुत्यदिकारुवत् ॥

७७७

वलितांकलिहिरुगिनेरोहानोमुकटिद्वेवत् ॥ नकारागमनसांसेमुतरुकध्वद्विरागतः ॥ कधृसूतादिसत्कध्वरा
 गमरुत्यदिकाद्वतः ॥ रागनदंसनिकासाद्विरागवउन्निका ॥ हूमर्जघानितभोवकीलितोत्वसूसासुतः ॥ वसू
 रागमगपदीउवयर्थसैसकत्ययत् ॥ तदधःसाद्वयंकानंविस्मयमउकावयत् ॥ तरुसाद्वानुगतः ॥ कध्वनकध्व
 वाउर्गसर्क ॥ वयाःकथाअमधःसाअउन्नयादवजिनान् ॥ कृत्वाविकानरागमंअकथाद्वकध्वकावधि ॥ न
 केकनउरागनविसत्ककटसूतः ॥ कावयिअहिविस्मयांनवमनादकानर् ॥ रुवदन्नयधःअहिस्सफ
 मनादकानर् ॥ मध्वनध्वमयासेनवमियातुजिनसकान् ॥ रुःकटिस्सध्वयामध्वयवजिनद्विनारुजत् ॥
 नवीसेअविताया ॥ ॥ समाह्वककरानितः ॥ कागनूनधकादीनांवरुपवंगीउयत् ॥ ॥ यथैकरुमिका

वसावा मर्द्धन रुवत्सदा। तद्वच्चुर्थरागनयवगान्नयस्यवा। चर्वसंकावयस्याक्काममसुत्रयकेसका। लल्ला
 रागभक्तुवांस्वोम्वसिधियथाकर्म॥ कल्लन्दा मारुता रमिषथमा म्वरुयद्वध॥ यणेनं द्यंगत॥ कमुस्त्यदीया
 दतारुवत्॥ कल्लन्दा न तथा यदीया न्वया नूया नयि। यादानदीसताम। अयूटाखं वृत्तगर्क॥ तद्वरुया न्व
 या म्पुसा दनरुयोचकीत्येन॥ कम्हायमवतं कार्य कुगिका यकथा सुथा। वदाया यदिका कायायादा हीना उरुमि
 का॥ यादन कमु यदी उ मर्द्धन गलयदिका। कष्टय द्यद्वेता रुया रागन वरुनलिका॥ कम्हा न तथा यदी कष्ट
 रुत्यदी काद्वेता शयरागभवमवतं वरुयत्ता नया॥ सुधी॥ यादानदीसताम। अयूटाखं वृत्तगर्क॥ तद्वरुया न्व
 मखलवृत्तं शीसे॥ पूरु नूला लिके। शिकृका कुर्यं द्यायां यकथा सुव रुयत्॥ वरुगालयम।

१५२

कुर्यं से॥ निरवन्तिका तथा। अज्ञानदीसतामर्कं लवली हलव रुवत्॥ तत्सुध्रिवां द्विधा यदी यवग॥ यदिका द्वेता॥
 निर्गमाया यनाद्वेन वरुनसां गतारुवत्॥ कमु यदी च यदी च रुगमद्वेता साधयत्॥ तन्म। अतिलिके का
 यमवर्गं शेवेन लिका॥ नवम न्वेसग॥ या क रू चतुसाया सिधिकमात्। नूयं काव नथेये वृम्व अवाय नथ
 ल्वेता॥ यदिरागम कुर्यं रुत्ता नर्ता सा अरुनेलिका। कमु क नाद्वेता यदी कष्ट आद्वेता सतं रुथा॥ रागमर्क
 रुधिरुत्ता कष्टयदी सतारुवत्॥ वरुयदी च निष्काका म्हाग रागन कन्ययत्॥ तद्वत्या न्वे विनिष्ठा यी
 निरवनी मध्वदगन॥ अंसगर्क लिके तरु तत्या न्वेया गुण नूत॥ विरुया रुद्रीपा रु रागम कुर्या निरव य
 थ॥ उद्वो ध सिलका का नाम मध्व न्नाद्वेता॥ या न्वेया अन्तु रुया रु क रु यद्वेता निरक॥ वरुता

गच्छुः कालोऽस्य न्याय्यं न्यायलिकाऽतिवृत्तिरिति सिद्धं ॥ कायाऽसमूहं यामहीकमात् ॥ उर्वर्यं च दग्धं गच्छात् ॥ ४४ ॥
 चरुश्चिन्दुः न्यायलिकाऽ॥ ॥ मध्यत्रयं कवित्वा न साद्वनामां सकेरुजगत् ॥ साद्वनमश्नतस्तु नथ काद्वसमूहं ॥ नथ
 द्विरागवसेन दीप्तः ॥ यावत्तस्मात् ॥ यद्विरागसमूहं यं कुर्याद्वन्दुः न्यायलिके ॥ तत्तु कांसं न वदाम् ॥ कुर्यात्तु
 कनागतः ॥ कुर्याद्विन्दुः नथ कलमध्यत्रयं कल्ययत् ॥ द्विधविस्तृतं तागे कं कल्ययत्तु वृत्तिका ॥ उर्वर्यं च दग्धं
 कायाऽसमूहं गच्छात् ॥ तत्तु मध्यत्रयं कवित्वा न साद्वनामां सकेरुजगत् ॥ साद्वनमश्नतस्तु नथ काद्वसमूहं ॥ नथ
 लिका ॥ वृत्तुपाऽस्य कायाऽसमूहं कवित्वा ॥ तन्माध्यत्रयं कवित्वा न साद्वनामां सकेरुजगत् ॥ साद्वनमश्नतस्तु नथ
 नमो दीप्तस्तु सन्तु ॥ तन्माध्यत्रयं कवित्वा न साद्वनामां सकेरुजगत् ॥ साद्वनमश्नतस्तु नथ काद्वसमूहं ॥ नथ

१७३

यथैयन्निवृत्तौ लि ॥ उर्वर्यं च दग्धं गच्छात् ॥ कायाऽसमूहं यामहीकमात् ॥ उर्वर्यं च दग्धं गच्छात् ॥ ४४ ॥
 ॥ यावत्तस्मात् ॥ यद्विरागसमूहं यं कुर्याद्वन्दुः न्यायलिके ॥ तत्तु कांसं न वदाम् ॥ कुर्यात्तु
 कनागतः ॥ कुर्याद्विन्दुः नथ कलमध्यत्रयं कल्ययत् ॥ द्विधविस्तृतं तागे कं कल्ययत्तु वृत्तिका ॥ उर्वर्यं च दग्धं
 कायाऽसमूहं गच्छात् ॥ तत्तु मध्यत्रयं कवित्वा न साद्वनामां सकेरुजगत् ॥ साद्वनमश्नतस्तु नथ काद्वसमूहं ॥ नथ
 लिका ॥ वृत्तुपाऽस्य कायाऽसमूहं कवित्वा ॥ तन्माध्यत्रयं कवित्वा न साद्वनामां सकेरुजगत् ॥ साद्वनमश्नतस्तु नथ
 नमो दीप्तस्तु सन्तु ॥ तन्माध्यत्रयं कवित्वा न साद्वनामां सकेरुजगत् ॥ साद्वनमश्नतस्तु नथ काद्वसमूहं ॥ नथ

टनांननरुवदवकुमसुक ॥ अथाद्वयवमवकुयासादघटयदृष्टं ॥ ॥ यासादपृथयैवांनदमलाखीरिहा
 गत॥ सरुतांसेलि रि॥ कार्याद्यतं सु द्विगुभां कुय॥ अधात्रादकि (अस्मय) अरुत्रावामसंरुकां । पूर्वतानाज
 लेवजा ऊंघां गंदासु (येवव) ॥ निखनाद्वद्यवस्काया ॥ सनम ॥ ॥ तथमक्षग॥ कविह्वेवंनेनाद्यस (मेयकाद
 क्रिभादिग॥ निखनं तथयदेनेत्रिदाये वास्वदिकस्तिने॥ पूर्वभाभा मयुष्ठाया तऊंघामक्षना मूर्ख ॥ रुव
 क्षादिकं गवतद्वयुर्ववत्कटि॥ तत्कयुद्ध समंकार्ययविरुक्षापूरागत॥ तत्तुंसेवेलेयदा वेंदुथकानक
 रुमिकाना ॥ अंसेके अलुभालां दुद्यं सता मक्षग ॥ यट ॥ ॥ तत्तुंजी वनूयैव घटयं तूचनेवध॥ या अया अलु
 भलाया मुकलुद्यं सता रुवत ॥ पृष्ठत अलुभालां रथकं नकुवकुली । म (अद्वयलुभालाया त्वं सा द्वि सत्रकं म
 दु

७३४

गानकननिखनं वादितिलकाकात्रकं वगत ॥ नवतत्याध्वन॥ कार्या स्वाद्वन्द्वभालिकादय॥ वास्तु रूषलमस्वा
 त्कमूकमयानिचक्रव ॥ ॥ ~~निलकनसंमच्चयतलकुन्दवास्तु रूषलमस्वा सामान्यं वनधकपासादव~~
~~रुनी यदिं भानिभाविधि॥ स्रकः ॥ ॥~~ ॥ अथान्यथासूत्राद्वोसात अक्षादीं कुयथाकर्म । नथकेनेवसकय
 सैथेनकेमगा द्रव ॥ मंजयामूलविस्फा ने रुवन्नवतिरानिका । नन्वादिवससकांसे मेधार्द्धवथकायदे ॥ स
 पादकेकरा (गनजलमा (मविसेत्सुमे) नथका॥ साद्वयत्वात्र प्रत्वात्र प्रजलासमा ॥ नलीसा कुया रुस्याम
 ऊयामि नूरिमही । तत (येकेकसंयागम स्वउक्तं नवरुमिकां ॥ वदिकावा अ॥ कत्वा चन्दभा ला विरुषिता
 ॥ विद्याधनामदे येकं दवअष्टवकुमी ॥ ॥ विस्तानवधिरागमध मूनिरि॥ कालवभने । उयाख्य॥ साधि
 म
 म३

17/3

५४२

मयकीरिती। डरुमादिकनेत्रस्यादकेकं लिङ्गगतिः॥ हेमजोयं महाव्रजलिङ्गं सां धात्रगं धुरी। हीनदयां सक
 नष्टकृत्तनामाधिकस्तिरी॥ ॥ तस्मात्मानां शिबुंदास्यनासात्रयकरुमिका। वरुंगन्दसांलाख्यलक्ष्मीदग। (भा
 व्यत॥ गताद्वर्त्यवहान्यास्यद्वेगदस्तुतानव। सांभालिङ्गमानानिलिङ्गमंतस्यमाधन॥ यज्जिंनतयु
 रागमच्चउत्तमावत्रिकमात्। एतनवनिनर्धनांयासादालिङ्गमांनती॥ भनूतैन्दरकलासाविमानारुदका
 स्तवत्। पीवत्सोकयलंदाख्यास्त्रनवेनाऊजानत॥ वल्लुवडाधर्मवत्लयाकाहनिस्तथा। वृषरुहं स
 ताञ्जिकाः कमास्यनेवरुंदत॥ वललीकन्दकन्धामशैषंयस्यकसंरुवी। वडाजिपिषयाप्रदात्यद्राकोद
 लयाहनि॥ मेनिकादृषतानाग्नहसुताञ्जनवेवडु। अष्टादणयधनाञ्जयासांरुहयात्मका॥ एतदसा
 दा।

कृष्णान्विताशा मूकालिङ्गमरुहस्यतथयकमलासने। सवसांयतिमानां उपासादास्ममदाहता॥ ॥ उच्यते
 कपदसंस्कारप्रशङ्काः दण्डधामगणः कत्रसंख्याद्विधारुक्तामन्त्रादीनां वकात्रयम् ॥ हर्नासेयवहिरिति
 चक्षुःसेनसंकात्रिका। नृणांसेः काउहिरिति वगर्हासेः सुनिवक्तव्यम् ॥ नवरुणोऽथपीभर्तृसर्वासावेवभव
 दि॥ त्वंमन्त्रगतां सः स्यात्तन्त्रादिप्रकथनम् ॥ वासकशृङ्गभारितिरुपीभर्तृमयूराणां केके क
 मात्यक्ताः च वमानन्दनारुवत ॥ अथाहिराजितकुरुसहयम्भनखात्मकेऽयमेति शक्तिश्चकुर्यं सूर्यी
 ० नथननु ॥ कुरुमंधादिकारितिरुमः पी० मूवकमातु। द्वाणिमज्जिनरुयाष्टवर्दासेयनवांगक ॥
 अष्टमष्टिपदकुरुमध्वपी० यूर्गसकः। कमिकः अज्जितोऽत्र विंशदके अहिरुयः ॥ ॥ दन्तजिनविका

७७८

मासादास्युच्छेदः मरुहमातायनिताघटनातु कायाकुशयौतना ॥ साकं गतांगकं कुरु कृत्वा तिर्यगुत्तमं
 सर्क। कर्तुं सुगालिका (अथ को) लडा माद्वेके हन ॥ रूतांसेः प्रिलिका कायाघदरुताग्नि लायतात। नन्मदि
 नामरुणोऽस्यादथकानां यावद्विनि ॥ मध्वर्का सांरुणां यनिर्गमस्तु स्यात्तु। यनिर्गमस्तु वद्वि कम्पा
 यात्रथकानव ॥ साद्विद्विगुलभ्राष्टादादृक्कयस्तु यद्विचिन्त। नितम्बस्तु मध्या मध्वद्विषतायां विरुद्ध
 व ॥ कायाधारुनेखांसे अथ ऊर्ध्वके कमन्यतः। चक्षुःशालान्वितायावयावत्याउर्ध्वमयः ॥ कविदिम
 रूतूकानथकाविषमायथा। अदुः० नृणां किता नासा अतसः निरवमाद्वगमः ॥ वदिका रू० कटि० कटु
 ० कथात्ता मत्तसानक। पूर्ववत्सकलभ्राष्ट्राष्टाष्टागता नृनिगः ॥ याम्यन्दं नृकांश्च यद्विचिन्त दिव्यमंग

लाशरुद्धात्रमानतान्यस्यलिमंनवकत्रकथागुकनासायत(अर्द्धसिंहः)स्याद्विदुताननः(शायी)वनिर्गमाद्वेन
 दर्थसिंहस्यकीर्तिर्त॥तत्रिरुता(ग)ह्निगतस्यतत्त्वस्यविसृजंस्मृते।विसृजनाश्रयमाननकरुथासक्तकाश्रयः
 ॥तत्रिरुता(ग)ह्निगतायीवागुकनासाद्वेमध्यतः(शायी)वनिर्गमेनेवनासायतस्यनिर्गते॥सिंहः(यिपी)लिका
 मध्यस्त्वयांगकृतयूक्तकः(वृद्धकटि)मेहानसक्तः(करुयाः)कणत्राचिता॥ललिहानाद्वेकषुस्वपी(अयनि
 संहिता)यीवाधनारुवद्वदीयासादाद्वयविसृजनात॥वदिकायत्रिकषुषसिंहः(स्य)विकृताननः(शायी)समा
 नविसृजनायामासक्तकन्यस्ययूक्तकां(वदीया)सहिरुता(गेन)दर्थनयायकीर्तिर्त॥सिंहः(स्वल्पक)अयताः(करु
 याः)कणत्राचिता॥वद्ययत्रितथादिशुचत्वानानत्रयिगः(लम्बन)नसमायूका(चन्द्र)गलासमायका

[illegible]

की॥ तद्वत्तु नमस्तु वनथंस्तु यत्तु लेशकाशदानस्य सौम्यमवतु वरुयता निखत्रेष्टु यं सार्द्धं कृत्वा
 कथाद्वैमादिवत्। कृत्वा सांष्टिगतं सैकं पथमाह नयां सतः॥ लेशके कय निख्यामादकेरुमीसमकय। वरुनासिक
 वरुचवत्तु सा लामान्वितं॥ अनीतिर्गुणसंयुक्तं कलासंघटयत्तु॥ कला॥ ॥ मनुद्विधकृतं कुरु नूदक
 द्विसदाष्टु नि॥ शिकया जामतः॥ कांतिगया सुसूत नूदयात्॥ उपनथं कला कनन थं शीसनमश्नतः॥ लूमवा
 यनाद्वैमा वरुद्विष्टु समनतः॥ लोने सुसूत नूने मे॥ निखत्रा स सुभलके॥ सकया टागले वद द्योतन गवाक
 के॥ कृत्वा यवन वरुं नं या सु॥ कथाद्वैमिन्द्रतः॥ तद्वत्तु के क संजासा कलया रुमथा दग॥ रुसधामा नथ॥ यत्र
 वरुलीलां द्विगोत्रथो। कुरुनालिसूत्रे मे॥ अथ कस्य विमानक॥ अर्द्धाद्या टक या टेष्टु यत्र स्यत्र समीक के॥ द

१३०

त २

प्रकाशसनात्थन सकंति द्विष्टा लके॥ विमान॥ ॥ लुकद्विष्टु विनं कुरु यद्विष्टु नमश्नता नथ॥ लोके कन
 सर्वं लो शं मे॥ अथ नथो मनी॥ द्याया मत्त नथ॥ का न्य॥ का लवधुगं सके॥ सा न्धमत्र वरुना स्य व वरुं द्या
 मभान्वितः॥ सकटं गसफा द्विष्टु न्धन लान्वितं नथे॥ विद्याधना क ले नम्य रुद॥ स्यात्तु द्विष्टु गवान्॥ रु
 द॥ ॥ रुमोरुमो कठो द्यो द्यो तरुका वा धिया दग॥ रुदरा ने मदा रुद॥ था के॥ सा धन सोरु तः॥ मदा रुद
 ॥ ॥ रुद वरुन क न्धन समाधस्ता द्विष्टु तः॥ उपनिष्ठा विमानां स॥ कमता म नू म न्धनो॥ कला सा न
 न्धनायूक॥ वी वत्सा रुद सैरु क॥ सवात्मा निखत्रे॥ काय सचेता रुद काय तः॥ सफरु नथ के यको वदां
 शाष्टे उमान्वितः॥ सायस्क नथ उद्विष्टु वा नू वरु किकान्वितः॥ वरुयट समाध तः॥ सा धन वरुली मूरव॥

सर्वतारुदशा ॥ घडिं सदसककुरुं ^{किं} निरुका एवरुं नं ॥ गद्विहोमूनायाख्य ॥ सत्रं गनन थसुदा मध्याद्विनि
 रित्रयुतु त्वदसफन (धविं क ॥ कठानि नन्द गालास्या दिद्वामां ग्या स्य कात्रव ॥ त्रव क ॥ ॥ दग्मं ॥ उरु नरु
 रुम (धवत्रथ क विरि ॥ साद्वे नानन (धका यो कां वी वद्विरा गत ॥ नथ ॥ यत्र उव (धकां घा प्र ॥ निरवना वि
 व ॥ नथ धमा कि ना रू प्र क रुनी मध्या गत्रथ ॥ कुरु प्र न नाना न्य ॥ सिंह या यरु य कि ॥ मृगमद य स द ह्य वी
 वस ॥ स्या द्रव सिय ॥ सीव स ॥ ॥ वरु न य प्र सा न्ध्या न न द ग ति सि रू मि क ॥ सिंह स्रु म ला सा नै य क ॥ का
 यो गृहा धिय ॥ गृह ना ज ॥ ॥ निडां स क क न धा मि कां स्या कूल हानि त ॥ द्या यां नान न (धका यो व द्वां स
 यध्या गत्रथ ॥ च कां य स फ रू मि य यत्र न (धि न्द गालि की नानां कला प्र यो न न न ॥ सत्र न न ॥ न न न ॥

सूत्रा १

१३१

नानल कला समुच्चय साध्या नन व चा साद्वरु नी स क विं ग निमा विधि ॥ (धक १३२ ॥ ॥ वदा स धां वि दी यत्र न खां
 सो ॥ (धग रि नि । या ध्या यं व रि रि रि ॥ यृष्ट र्ग स्या कृ ना द्धे ग ॥ दग्म नां सी कृ नं कृ न्द म (धवा द्धे न (धम ग ॥ उ
 या ख्या न न थ ॥ कां व उ न र्ग गत ॥ क मा त् ॥ न न य का नि स व ग्म कृ ष च व य न्ना य ॥ ॥ या र्धे द्धे न द र्ग ग स्या म
 ध्या र्श सै य (धे उ ले ॥ नथ नि न थ का धा नि त्व के के ना द का न्द र्ग । व उ री च न्द गाला स्या च उ रा सा म्भ सै य ना ॥
 गृहा कि ना गु ले र्ग घा र्श स स्रु स फ रू म य ॥ ननी न्द गालि का द्या म क न सि ख ना न ति ॥ द्या कृ ना वि का नां
 स धि स्रु व रि रा नि की । क क ठा नां उ स का य नि ख र्ग दि र्ग रा गत ॥ उ द्धे स्रु य स म्भ ना सी धा मा या य र्ग
 य मा । सर्वा या रा क वि का य ॥ य र्ग र्ग क म्भ क ॥ म स्रु का ॥ वदा म द य धा र्ग द या दा रु य धा उ ॥ दि य द्धे

पार्श्वयार्थोद्घोषोपाधमग्नः॥ गरुमकेर्मयः॥ यादेतथन्यजिननासनातागरुकिनासिकाकल्यावदास्था
 वल्यव॥ वलरी॥ वासवावाकवकस्तुकांथास्यमूमिकः॥ गरुवृक्षाथवदाभमूराभवासुनाधिय॥ वजा॥
 दग्नाभागरुवत्यः॥ याउभयः॥ कविमते॥ वलोवाकुनसीयूकः॥ याउसावदलनव॥ तद्वत्तद्विदलायतागरुवृ
 रुः॥ सुभरुनः॥ एकद्वार्कनाभयद्यनाभसुनालयः॥ यमः॥ ॥ वदाशकासूजाद्विदमोसांनमाउमातु॥ वृ
 रुः॥ सखेलयाकः॥ स्यात्यजितावलयाचिती॥ वलयाकनयजाभिकंकभगुगरुवर्ग॥ वदीगदामलासानेपूर्ववत्तासि
 काचिना॥ वलयः॥ ॥ युगमसिधासमकुरुन्यासादुरुस्यवासुतः॥ मध्ववृक्षानताभयः॥ सिंदूररुतिनचितः॥ कुं
 दकाधयुगः॥ धास्ते॥ कत्रिकुरुविदाविहिः॥ यासादः॥ सिंदूरसंकायंनवसिंदूरामनधियः॥ सिंदूरः॥ ॥ स्वादिष्टवृक्षायने

१६२

यो १

कुरुजंघासुमन्तिनारुवत्॥ नासागर्भेवदाभोयचरुसूक्ष्मयावृषः॥ वृषः॥ ॥ वदाभलागसूजावकत्रीश्वः
 सननाउमातु॥ यष्टवृक्षादिकाभाभगरुवरुतगनासिकः॥ गजः॥ ॥ धाउभयोरुतकुरुवृक्षगरुसकाध
 या॥ ऊधयावविमानस्यकद्यारुडाकयस्यव॥ जीवत्सस्यवर्मजंरंसारुवतिलांकितः॥ गरुत्यकटिधामास्यांया
 र्वयाः॥ सननदयाः॥ वज्राधंस्यययवैधंदांतयाद्विर्णकनो॥ कुरुत्रिक्कावसदन्यायसुखावायुरुयको॥ हंस
 ॥ ॥ युगमस्युष्टयादागनासायकोचगरुवत्॥ ऊध्यासुमवतीकायाकुंगवायकसंयुतागरुः॥ यउय
 कस्तुके॥ सकुठार्यचरुमयः॥ ससर्पकटिकभस्यविश्विष्टविष्कामय॥ उमभमभयस्यास्यैप्रकुष्काका
 धममरुः॥ दिशुस्वेवउस्याः॥ सायानजगतीयताः॥ तार्क्ष्यः॥ ॥ विरुजद्विगुभासुयाऊधकांसा

7133

[illegible]

रुत्रीपुत्रकृत्याताम्रदन्तंनसंख्यामत्यत्रिंशोऽनुकनासिका॥अथधामायतादात्रममभनसमदिक्किंनशसर्वका
 मयसिद्धार्थपूर्वमवकुकात्रयत्॥यत्रिमंसिद्धिमुख्यर्थसोमंभंयर्थयष्टिर्दी॥कूत्रकर्मलियाभ्यवगतधकृत्याद्विदि
 कृतत्॥चकद्विहिमूर्खलिं(गया)गवद्वानमिष्यत्॥अमायायादिसोम्यान्तत्त्वयकयकयात्रयि॥यनादनीत्यसत्वा
 न्कलिंभद्यथासुवान्॥वाम्पुरुत्रवरुह्यद्वान्यामाम्दिशुवा॥यथाप्ररुदकाल्याश्रयोभ्यवन्तथवात्रुध
 ॥कृत्याद्वान्त्रुद्विद्विष्वक्वदालिंभया॥दिविदि॥संकिंनः॥सर्वपूर्वापमाननांगुला॥दिग्वलरीन्द्रयाया
 ह्याक्कागधमात्रसन्मूला॥धाममानातिधाम्नाजंघावित्कृत्ररागत॥उर्यजसादिरागतश्चमधमधर्मक
 मात्॥नृदानाद्विषूयर्थनात्कगवाच्चित्रत्युध॥चकद्विहिक्कादीनांघात्रंस्याल्लिभमानत॥कन्यसंवाहमध

१३४

नमधममधमसदाउरुमंकन्यसदात्रंगरुमानात(धयत्)॥त्रिचकुरुतरागतश्चमधमकन्यसीहीना
 दीनामवद्वान्गरुकुर्विराजित॥यिलिकाकावविस्तान्द्रुधाम्निकविन्मतीउक्त्याद्विगु(ध)द्वानादन्य
 थावासउच्यत्॥अंगुले॥गतषष्ट्याथेदंहानिकमंगु॥द्वानादिदगसिद्धानिवत्वार्यग्राहितभूत्॥जीव्य
 उमधमानिसूक्ष्मवर्कन्यसानिहु॥उक्त्याद्वनविस्तान्द्रुधयावाविधाम्निक॥दिशागमशंगुलेव्यधिदा
 न्त्रुगुरुकर्नकमात्॥उक्त्याद्वनविस्तीर्णसोखाविषमसंख्या॥तत्समाद्विगु(ध)॥होत॥यधिमाद्वनस्य
 व॥भखायुधत्वमभानन्दलम्बाकृत्यामत्॥जीव्यदिगुरुसंख्याति॥सोखाविद्वानमिष्टदी॥सदात्राधाम्निक
 कथाविद्वद्भखाचित्रमर्त॥॥विस्तान्नवत॥कृत्वावाहृत्यकिथिराजित॥दत्तसोखाजसांसिनतमा॥

खायगहानिका॥ रूतहागननूपाखात्तन्धकारीतनूहिता। मत्रीवीयमनकाया मूलाखाविषयनउ॥ दण्ड
 द्विषति सादोदो साद्विषकवसायकेशसबलिकात्रिकाद्विषमा मूलगभासा मारुवत॥ डिभस्यद्वारं॥ ॥ डिभद
 गयविष्ठात्रावृहिरागमदलनया॥ विरुधद्वानवाकूचरूतसिद्धधुभाखिका॥ वृथत्तना न्धकारीता॥ यविष्ठा
 कनसांसग॥ खल्वभाखायवृवन्म साद्विषविष्ठा नगउ॥ पादानविष्ठाकायावार्वकार्यकवसनात्॥ द्विष
 वभात्युथत्तवार्सुसुभाखावृवदिय॥ मध्वभादन्धकारीवयादानो ग॥ यविष्ठाकात्॥ खसाहीनूयभाखायायु
 थूताविषयनउ॥ पादानोसनविष्ठा मत्रीवीयवृवगता॥ यवभाखवृविष्ठावाकूचनार्कहागत॥ सो
 नूयत॥ काया॥ यदिकायासु निस्थिरि॥ यवभाखाद्वारं॥ ॥ अगीत्यद्विषविष्ठावाकूचकनधदल॥ दण

७५७

न्धकारिका नागभाकाखा नूयभलिका॥ अंधत्रीयवृसाखाया द्वा नाखासु मूनासिका॥ अन्धकारीतनूपाखात्रा
 न्धकारीमत्रीविका॥ नामाभंमूलसाखार्क कमाहागनिधामत॥ साद्वरूतांससाद्वक यूगेकसाद्ववात्रि॥ त
 यामूरुवसाद्विगनूयक यककेश॥ वाधंसा मूलभाखावृवृमदुयवगने॥ उगवृयगवाधस्थेसकन
 वांसकेशकमाता॥ भाखा॥ गयदिकाकाया सौराथेचविश्रुलो॥ सकभाखाद्वारं॥ ॥ दलाग्नीसासुनूपासा
 यास॥ कायागताद्वत॥ दण्डकात्रिगनागभाकाखासु मूसाखिका॥ अन्धकारीमृवभाखात्तन्धकारी
 त्रीव नूयिका॥ धनाखायवृभाखावृतधन्धकारिकायन॥ सुभाभाखावृनूपाकात्तन्धकारीसमीविका
 । यवभाखा॥ कमाकाया॥ साद्वषसाद्ववृवत॥ यूगेकयवृपागि वृवकयगसंरूकेश॥ तनूयवृवभाका

स्वावालेकजलसंख्याया॥ रुवाहिनीववदाहु दलुहिंसतिघट्टि के शसाद्वयं चाम्बसकसुमनिप्रभुदिके॥
 ॥ मूलभाखसमावेभंसत्ताभकात्रिकासूत्रासांखायकपयित्वाहु दस्यभडीउपटिका॥ ११॥ विरुद्धपृथवात्य
 धसकांसेमनिक्कु निशदलुभकात्रिकानागनमसुहाभकात्रिका॥ यरुनामान्धकारीचनूयात्याभननासि
 का॥ नागभकात्रिकांकवसुहाभकात्रिकायून॥ यरागमांकिकानूयात्तन्धकारीसुगालिकांशंभखाकमनी
 र्यका मूलभाखतिकीहितां॥ साद्वरुनेमुसाद्वकयुगेकयं चवन्दके शवदेकसाद्ववदेमु रुवाम्बतयुयके॥
 ॥ चन्द्रवात्रिनयाहारित्रकाभिननयूमके॥ साद्वभूनाहितिर्हयासांभात्रिकया॥ कमात्॥ रुतयकहुहु
 यर्षि॥ सफसूतसयकुने॥ अकडाखांयवंग॥ स्यान्धवीभाहुमूलवत्॥ भखेकादगदान॥ ॥ भखाद्वयव

१३३

उर्ध्वसपतिहात्रोत्वधः क्लिप्तोऽसद्रवीयमूनवाधितत्याल्वरानवाहकाशावाभीरि॥ यरुवलीरिमिथुनेकिंनवादिः
 रि॥ विशाधनेयसारुये॥ सद्यटेनागयूमके॥ भयंस्वत्तिकमालारि॥ जीवत्साडात्तलाउजे॥ सारुयशत्तन॥
 खासुथान्येप्रसूभाहने॥ नीयदसो गवभावाशाखात्रुधथमृत्तुकिता॥ यथमादम्बनसुयाभवीदये॥ सुभाहना॥
 वद्वविष्णुनेनूडाद्वन्धराननागुद॥ यहाथमातनादद्यानाद्यायात्रसंक्लिता॥ तस्याद्यविशवसुया॥ नि
 लिनादम्बनेकमात्॥ ललाटसोरुनवाधेनागदकाचिनंदुटी॥ साखायथं समाकृता नूदनूदसमदनी॥ ननकुयादियाल्व
 कनपादद्वयनवा॥ हीनायजीरुनल्लद्वमूयत॥ गतार्द्धासांधिकरुतायवैगीनामहागत॥ खनकायमराण
 नसुहोवेवद्विरागत॥ किरुधुमानिनिशुंनिद्विद्विरागखनदयी॥ अंधकारीतनूरागनषकागनखनऊ

व

[illegible]

737

स्वता। चक्र गवसूदा गमत्वालिनः शवधनरी॥ सता विद्वन्दा विद्वामूदक नधनरुय। नथ विद्व रुयं रुदं स्व
वधमथ सूत रुय॥ काया विद्वन्दा विद्वो नाय रुधन दम्भेति॥ कलुन्याधन नग॥ स्या क्लि ला विद्वन्ना गथा॥
तस्माद्वधय मिथ्या गं रुयात्किं रु॥ सूत रुया। उच्च पाका नठानन तक्के दाद्वन धनवा॥ तद्गुमिद्विगु धा गम
वध दाषान जाय ग। गत्य स्वावा धवा लुच्चा कलु नरु निदहली॥ नीत्रा वथा घिर्न नून नधन विस्त्र वही निः
का। लिं गध्व कृयणी काया सा द्यायां पीठिका रुया॥ लारु॥ काया रुवक्का का दान मान विवर्जित। अथ स
विस्त्र न दानं नूक स्या नूकी वाध र्वत्रला॥ दद्यात्कृष्ण मयम्भ (ध्व) की स्वामी दा॥ पृथूद्वेन॥ रुयं घिपी लिकाम
ध्वं कलु घ्नी गवक रुके॥ वरुं गमहिषी धां रु रुया नो वरुयं यदी। हिन्न गव रुया दान दि रुान रुवान वि

उमः॥ यत्राग्नवसंयुक्तं दानि शुभं कुरुते ॥ ऊर्जं विपरीतं वा धनं नागं सदानं ॥ आधिष्ठितं चितं कुरु
कलिः स्यात्स गच्छेत् ॥ स्वयं मृदु टिकान् दत्त्वा हितादितानां नाना ॥ उन्मादः कुरुते मृत्युं मूलं दानां कुरुते कमात् ॥
द्वौ मविद्वं ह्युद्वं भूकलं रुय रुयात्सदा ॥ सामान्यं वधं ह्युक्तां गृह्यासादयाम्येया ॥ वधुं वधकया वा साह्यं कुरुते
गुणमनुजं ॥ यथैव सुकलं कार्यं कुरुते कुरुते ॥ सर्वेषां गुरुदाया दानादीनां च तां कुरुते ॥ दानादीं विदुः
नो योच सांगुलाकलं सैव या ॥ तावकी कुरुते सैव या ॥ नक्षत्रायास्तु तत्राया तदा यथा नका
सदा ॥ विषमाः गुरुदास्तु समा अनिष्टकर्मसु ॥ धनुः सिंह वृष राखा दिश्या आदिषु स्थिताः ॥ धूमः स्वावरा
त्रा धीः ॥ समागतं विदुः स्थिताः धामशुद्धासनादीनां धजाया यगुः ॥ धीः सो राग्य सुतायुदो धर्मवृद्धि

दशमोऽयं वेदोऽयं गद्ययुक्तः । यत्र कायमहात्म्यं गुणगुणयुक्तं मुख्यं लक्षणं मानि वषट्कारेणैकं शुद्धं कथायां ज्ञानं कलिं वषट्कारेण
 मानमनद्वयं । न द्विगुणं न रुतं त्वं शुद्धं न द्विगुणं न रुतं । वक्षि तं रागं द्विगुणं कलिं वषट्कारेणैकं शुद्धं कथायां ज्ञानं कलिं वषट्कारेण
 पदाक्षरं राजयात्रायां मित्रादि सत्त्वसिद्धिं कथायां निःशब्दं यथायावत्तथा दत्तं सत्त्वगुरुदः कनी । प्रागनाया नि
 दानि शब्दं धूमः सर्वार्थनाशकः ॥ याधिमुख्यं पदात्तकः ॥ सा नभयोऽथ गम्यते । सत्त्वोऽथ न विद्वद्य विद्या गुरुय
 दत्तः ॥ रुतं त्वं शुद्धं न द्विगुणं न रुतं । वक्षि तं रागं द्विगुणं कलिं वषट्कारेणैकं शुद्धं कथायां ज्ञानं कलिं वषट्कारेण
 धिवाञ्छाधिकं शब्दं वायुः सत्त्वोऽथ न विद्वद्य विद्या गुरुय दत्तः ॥ सा नभयोऽथ गम्यते । सत्त्वोऽथ न विद्वद्य विद्या गुरुय
 रुतं त्वं शुद्धं न द्विगुणं न रुतं । वक्षि तं रागं द्विगुणं कलिं वषट्कारेणैकं शुद्धं कथायां ज्ञानं कलिं वषट्कारेण
 ॥ १ ॥ ॥ तिलकं सत्त्वोऽथ न विद्वद्य विद्या गुरुय दत्तः ॥ सा नभयोऽथ गम्यते । सत्त्वोऽथ न विद्वद्य विद्या गुरुय
 ॥ २ ॥ ॥ वायुः सत्त्वोऽथ न विद्वद्य विद्या गुरुय दत्तः ॥ सा नभयोऽथ गम्यते । सत्त्वोऽथ न विद्वद्य विद्या गुरुय
 दत्तः ॥ रुतं त्वं शुद्धं न द्विगुणं न रुतं । वक्षि तं रागं द्विगुणं कलिं वषट्कारेणैकं शुद्धं कथायां ज्ञानं कलिं वषट्कारेण

पुष्पवाधमयुयः सुसुदीनादयः सुश्रुतफाविंशतिप्रवहि ॥ यस्तु सुसुतु वयं ॥ कथं न नाम नूयतः नूय
 काव्य श्रवदाय सुसुता वदसंरुक्कशा ॥ ७ ॥ मयातिवकाशा दगनाय ॥ यतीनकः मन्तु नावदय सुसा वृत्ता मन्म
 धनामकः ॥ द्वादसां तुलविस्तु वा द्वात्रा द्वाय समुक्तयः ॥ सामान्यस्तु ॥ ८ ॥ यं यथा ऊनीयमुक्तयः ॥ वदुर्गुलवृ
 द्वासा द्वादन विस्तु नगत्रा यासा दमानया दाना न सुसुता द्वाय ॥ कवि मगः ॥ यद्वा किता म्पुत्रा सुसुमे र्वाधने सुध
 ॥ मध्वहना वलीरिः ॥ सुनूय या मलसा नके ॥ सुसुता कटय ॥ मेला गालि सुलिन्द के ॥ ऊं घाल मन्म (ध) राग म द
 द्वाया म्पुया रुवन् ॥ वदुर्गुलवृ ॥ सुमे विनय वां तु मयुयः ॥ सामान्या सुर्वे म्पुय या का सा च दाम्य तः ॥ स
 सुसुता य रुदय सिंहा दियद संरुक्कः ॥ कलिका नय रुत्या ॥ सुगी वामान रुदकः ॥ मानवान नन्दन (धे) व ता य वन

सु २

१७२

कनन्दनः सुनीलः विमलः यरु रुदः सुगीधः ॥ वासु सीकीर्ण कानाम्ना विजया र्थ सुध धनः ॥ वल सुजय
 धेव ऊय रुदा धवृद्धि रुगः ॥ को गत्यः ॥ यश्च न दायः ॥ सुवतः ॥ यश्च रुदकः ॥ यश्च कान्तिर्यागाः ॥ सुफा विंशति म
 गुया ॥ द्वादश दि दि वृद्धा सु श्रुतयश्च दमान नः ॥ सुसु कमा ल निष्ठा या उकाः ॥ म्पुन सा नगः ॥ सुदृष्टः ॥ म्पु
 ने ॥ सुया ॥ निला काष्ठा दि रिचैत्र ॥ तस्म (ध) वा द्वा त सुद द क दि रि विमानिका ॥ कार्यगी वा मला सा न कल सैध स
 मन्विता ॥ यश्च वृद्धे कदा रु वस्त्र यथा ॥ म्पुका ॥ ना ऊ सिद्धि नि यूसा द सुत दय यदा ॥ कमा नः ॥ सुव (ध) ना नि
 दया वृत्त लानि वदुर्गुलवृ ॥ मयुय ल रुगः ॥ ॥ पूर्व त य वृथाना मा न्त सा धय नो क गरी ॥ वल ही रुदका या
 म्पुने म्पुयां ग नूतः ॥ सुतः ॥ म्पुवृत्त रु क सुध यथा द्वा य यथा ॥ म्पुका ॥ यन्मां ग ऊ म्पु सो म्या यां ता यै म्पु सुवृ

उक्तं मधुयात्रमृगमिश्रायनयाश्चमुसाधनं। चतुर्भुजदिकरुद्रकृतवनेविवर्तितं तद्विष्णुसहस्रनामविधिं क
 र्त्तव्यं कर्त्तव्यं हिना। साद्वैतात्साधनयाश्चालिङ्गनिनायथाक्वचित्॥ चतुर्भुजसंभवं कृत्वा तिष्ठिदं संजयक
 मश्चमायादिवृद्धावविभक्तमहानगरं॥ यन्निताहिरुयांसनजिह्वेयवीथिका। सुम्हान्विताऽप्युपपृष्टः
 शंसेयुः सेश्वरकेशः॥ द्वगुरुमश्नतः कार्यवायसाधनदत्तव। तथाहि तर्थासनशुभेद्वानं चमश्नतः॥ तद्
 द्वेषुविकर्तुं मश्नतु चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥

११०

२२

सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥
 सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः। सुकुलाय कर्त्तव्यं चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥ चतुर्वीथी चतुर्भुजः॥

निगद्य

रुमिवन्मयनस्यते ॥ अथ कादव्यथा न्मादियत्तु खण्डवसमनितावद्वयसदृशाधिककलननदितिसत्यन ॥ रुवन्मल
 रुर्वा ॥ ॥ यथस्तु १ यथहन्त्रमाविद्युन्वा १ निवाक्रुया ॥ अत्रभूकटिनास्त्रायुक्त ॥ अथमूर्द्धियथकर्म ॥ अलस्यामाह
 नश्चापिविउमः १ मसकस्तथा ॥ यथमः १ कालदण्डाया १ साध्या १ रुलदायका ॥ अलस्यवालस १ रुथातमाहक
 चैथोभाहनः १ विजानि मिउमः १ रुथाकासक १ सासयत्तदा ॥ कालद ॥ अमहानोदः १ रुथादरुयमहता ॥ अतस्तु
 नगृहविद्यायावरुणुनयुजिता ॥ सुलुलवायूनयवृत्तिताया ॥ अकनूयक १ घडगेमावृता १ सर्वविद्ययाव
 लिहामके ॥ शुर्वेकातामूनिशाप्रदाया ॥ कूर्वैत्यनकधा ॥ तस्मादादोचसकथा १ साक्षनोदीमूखास्तथा ॥ विद्युः
 नाभयगंलनीयुजा ॥ ॥ यथनूयद्विधविद्यातुस्तुलज्जलज्जगता ॥ सुलज्ज ॥ अथसुहृत् ॥ निलारुदसमंघने ॥

११२

सुलज्जवियलाखास्यात्यतिगंवादिगंदिमा ॥ सुलज्जमाकुक्कनाकुक्किलकाकुक्कितदके ॥ घनगन्धिविभलांकविटिका
 कुलसारिणी ॥ वियलवद्वग्भाखासंलककामलमदिऊ ॥ घटिका ॥ तिलकैवेकं ॥ निरुसंवादितीयके ॥ कृतीयघट
 मद्धऊ ॥ लक्ष्मीरुलिकस्यव ॥ अथरुवत्सना ॥ अगंक्वविदिनीसुकामले ॥ सगनेकटिलंसकिया ॥ अतवितर्तसु
 ट ॥ कन्दो ॥ रुवमिदंवेकं ॥ सा ॥ रुनेवा ॥ त्रिसम्वत ॥ यथधादणप्रवारि १ षष्ठसवलनूयके ॥ सुलज्ज ॥ अलज्ज ॥ वेवक
 यथादणरुदके ॥ कालि ॥ अंकालदण्डा ॥ रुक ॥ १ यत्रितेयते ॥ नीलीसुकामलंवल ॥ निन्दुवखाद्यरुगुने ॥ क
 वृकंभेस ॥ अंगु १ यथस्वाला ॥ रुज्ज ॥ रुवत ॥ घनदटा ॥ कुलीयोर्तनिविउमं ॥ विसर्पिव ॥ अगस्तिमूकलाका ॥
 कवृकम्यावनाक ॥ रुक्क ॥ अन्विगं ॥ रुथा ॥ घत्रिता ॥ रुकया ॥ कुली ॥ स्वयंकववेवृका ॥ यमाज्ज ॥ त्रिनख ॥ रुगुने ॥

[illegible][illegible]

यसीनयश्चाक सहादिंसा चनोदिकानसकूर्मभूतलाकु गंगामूर्धन्यगयाक ॥ अर्धादकं क्रियद्यायाननम ॥ अत्र
 दिव्यशिकाना विनयसद्विगुर्गस्तुशालादानाम्नाथसाद्विकाना ॥ गलसुन्दनिकादीनां दृढां दृग्मानपूर्विकाना ॥ सुस्नायगं
 भवमुद्योः सीपूश्चाननकमनु तः ॥ तनेवात्राययनम ॥ अत्रकोथेरागयष्टिकां ॥ वद ह्येनिनादनधुवन्मकलकनं ॥
 सकलागकृष्णयविश्वधामस्तुता यव ॥ दूदूअनननागयनागधियतयनमः ॥ अननकमनु ॥ अमुदकनवात् ॥ ११४
 अयापुयतनयागयत ॥ खनिकनावधायोथुसुनां रुसिवाक्रियत ॥ तात्रयागकृष्णकलकयन्यापुयतगुनी ॥
 कसिलायष्टलनागसनेत्रयजमानकः ॥ ततः ॥ अरुवत्कलनी ॥ अवेतनी नदी ॥ ततः ॥ अरुवत्कलनी ॥ ततः ॥ अरुवत्कलनी ॥
 नृपगहामयत ॥ तयोथद्वर्णीदवन्मामदवैवकविता ॥ वनं संसाधयकननाकिं तनेवकाययत ॥ पूरु

दयाकुनहेरनिवनानिवहाविना ॥ तांयगंगुलदंवेत्तासनाययत्तविरुतः ॥ कृययवैकतकीर्से ॥ सा
 वैद्यीष्टिमीध्वनी ॥ गलसुन्दनिकादीनां दृढां दृग्मानपूर्विकाना ॥ सुस्नायगं
 भवमुद्योः सीपूश्चाननकमनु तः ॥ तनेवात्राययनम ॥ अत्रकोथेरागयष्टिकां ॥ वद ह्येनिनादनधुवन्मकलकनं ॥
 सकलागकृष्णयविश्वधामस्तुता यव ॥ दूदूअनननागयनागधियतयनमः ॥ अननकमनु ॥ अमुदकनवात् ॥ ११४
 अयापुयतनयागयत ॥ खनिकनावधायोथुसुनां रुसिवाक्रियत ॥ तात्रयागकृष्णकलकयन्यापुयतगुनी ॥
 कसिलायष्टलनागसनेत्रयजमानकः ॥ ततः ॥ अरुवत्कलनी ॥ अवेतनी नदी ॥ ततः ॥ अरुवत्कलनी ॥ ततः ॥ अरुवत्कलनी ॥
 नृपगहामयत ॥ तयोथद्वर्णीदवन्मामदवैवकविता ॥ वनं संसाधयकननाकिं तनेवकाययत ॥ पूरु

[illegible]

यदादि॥ दलनवक्त्रगोत्रीर्भाहजन्मस्य चयागिनो। नूदाकेर्गंकवाभांचयलीयमविशजसां॥ विष्णुमन्त्र
थगमूनाम्योर्मास्यानथपूज॥ सर्वेष्वपि नृणांचयविशज। हर्षमर्त॥ नियुक्तेषु न कश्चिदो गृहीत्वा दन
भावनं। मृदुस्मयश्च वक्त्रादिनथसूर्यचसफधा॥ क्रोर्ममोक्षुर्गणधन्वाकोर्गयर्कर्मववा॥ याज्ञिकार्यास
ऊर्गुर्द्विऊक्यादिनिर्मितं॥ त्रिगुर्गुणीकृत्यश्चार्थलिंगमानत॥ दध्मकुलान्कमार्गन्वि। चैकैका
गुलहानि॥ द्वीगुलान्कमृवक्त्रा रुक्मान्कनवादिक। सूर्य॥ साष्टांगैश्चैवा न्यशाष्टाष्टहानि॥
गंधयस्मन्नुसंख्याताविषमयन्कय॥ कचित्। वाचनादकमाकथमदत्तमुद्राकित॥ प्रऊन्याधामुद्रि
व्यापिगर्भांसांमुसंसारयत्। त्रितत्त्वलीलिकार्यादिप्रदुर्थवावलम्बनं॥ सूक्ष्मेतानियविशानिघी॥ ७॥

[illegible]

कादशकमातु ॥ यद्विंशत्यसंख्यानेर्गन्धयानवयवधा कनिष्ठामूलककान्तस्त्र्यनाश्रद्धमानक ॥ स्त्रानेयजाऊयः
हामध्वानेदिकृपिनवव ॥ यद्विंशत्याह्वेकयादिसृमन्तेनितत्तत्त ॥ याग्याभ्यन्द्यतीचीयकमात्तिनद्विजादिरि
॥ दद्यात्पविर्कं गद्वद्वद्वाद्यदिकृपतर्जेश ॥ पुचिंत्तानादिक ॥ यूजीरुत्वावेसधिकेययत ॥ त्रिपेयसूयकवायिः
ददायामन्तुर्गणरा ॥ आमन्त्रितमुदवगयूजामयद्वतामया ॥ गूहाधमां हादेवसमस्तविधिकान्व
॥ मृदसा मलगन्धैवसूरुसदन्धवर्न ॥ यत्रगर्थकमारुषतालन्दनलीहर्क ॥ निलाम्बात्रावर्नायेवस्वम
मुत्साययात्रयत् ॥ होमदद्यादिसर्वाणिसकृर्गाययनानन ॥ कऊलीककूमनेलेसलाकाकगसोध
नीतामूलैगुश्चकदद्यात्सान्यत्रनत्रयन ॥ यश्चाकसूययीकोनरिक्तायाहालिद्विहानेगान्यामास

नैऋतं पादकयागयदकं ॥ यदसम्य नमते घाम्न नसा तस्य कल्ययत् ॥ या रुक्ताय विष्णो निधातिता नि नि
 वा रुसा ॥ रुक्मां जिनादिना क्वाशु मेरुं सहितया लरुत् ॥ गंधपूर्यं प्रधूया श्री सा कर्तव्य विरुक् ॥ य ७ त्म रु
 रुमं विद्वा नाम रुक्ताय दत्तकं ॥ सिवे निवदयत्तु धिः प्रवक्तुना मृती कर्तुं ॥ ॥ ॐ नमो वरुणाय पूजय २ स्वाहा
 ॥ ॥ सा यवा सा वसदा शो रुक्मं नक्षत्रमवच ॥ या तः स्ना तः शु विः शु द्विः पूजां कुर्यात्स्वि विरुक्ता ॥ वसु पू न न
 नाथ नयैव गय न रुक्मि तः ॥ यं वरि मेधुनेः स्नाने रुला नने विनू रुक्मं ॥ गंधनाया दि हिः स्नाने नाय मा रुक्म
 वा ससा ॥ अक्षौ मा धेय दयायाथ समालस्य पूजयत् ॥ निवर्तु रुक्म नक्षत्र मधु लं भा रुक्मा दिती ॥ वसुः ४ सीका दि
 तीवम् घृत्ना वाम लेख्य ॥ यथ्य मा लाय लम्ब नी वक्षु नी ना विधे वने ॥ कदली चूत मा ला रिक्तो नवीज

४१२

१११

सनावके ॥ यता काक्षजदीयाये नवये ॥ सो रुय रुद ॥ नृत्तगीतं कने वशि नैयदा रि म्महा स्ववेशा दनिकां विव
 यागीन्द्रां जिनिनयस्व विरुक्ता ॥ रुक्मा सीता यथ सव नक्षत्र दाना दि रुक्म ने ॥ चर्व रुक्ताय ॥ अक्षौ य विष्णो नाह
 र्जं गुरुं ॥ सर्वयाय विनिर्मका नूदला कमदीयता ॥ नक्षत्रां रिवा रुक्ताय विरुक्ता प्रय रुद ॥ खद्वा सथन मि
 थावा लीयाण मिषवर्क क ॥ वा रुमास्य मसा मर्थ्य यती नां नृ रुया दि तः ॥ पूजां रुक्ता निर्वनत्वा य विरुक्ता वि
 सृज्यत् ॥ कारुण्यं मरुतीं पूजां पूर्ववत् नक्षत्रा दिक् ॥ रुक्ता क्रियत्य विष्णो नि निवा ॥ गो वा सदा म्म सि ॥ दी क्रिता
 यान रुया द्वे य विष्णो नाह र्जं विरुक्ता ॥ या नयाय विरुक्ता मे ॥ अगमी रुक्ता नूदा रुक्ता दि सः ॥ य विष्णो नाह र्जं ॥
 रुम लिङ्ग च ना ॥ रुक्ता विरुक्ता वाना नक्षत्रा ना म लिङ्ग च ना दक ॥ यि न्मां वत्स स म्म वा ॥ सी सिद्धा वस वा

४

वा ॥ मु

धावाडीतिजाभनूतावेनातासीसजागुर्वकांसर्वलादाउकाःसुत्रानका॥जिलाहानातत्र॥सर्वमार्तुत्तः
 हलाहजान॥वजासुनयमाकः॥मोकिासर्वनीपु॥योषागमसुनावायावेदुयादायवानुय॥यप्रगमद
 तागधनेन्दनीसावेनादमि॥वा॥भासिनायकतालिगमसुटिकाककुलाधिय॥वेदुमस्यावेनानाग॥यु॥का
 कननासदा॥पुलकाककुवागीगमनाजवरुकुनेध्र॥योलेह्याजीवजातीजातटटिरुसिद्धकिन्नरा॥उ
 कजावेलि॥सिद्ध॥भाखादुद्वयसाकवान्॥अभिहोयकमुद्रुगामधर्वादानुसमुवात्॥वद्वलेलाहवासिद्धामन
 य॥यद्विजुजानागी॥भाहृगात्रकद्वय॥योषलिगदिगव॥भासिंशवनादकागजदन्नाचमागुति॥क
 मेकनिकसंरुतावासुकिनागनायक॥नृकल्याकवेनासिद्धाद्विधदाननाधिय॥नर्वसुनादय॥सिद्धालि

११८

मसेकयनावेनाता॥अरयिषाहवालिगदयोसिद्धागलधवाशनावनीताक॥सिद्धाधनंनत्रिमुगमयाग
 ॥उदनस्यावेनाका॥भागेजलिगधधकथा॥नानाहसाकलिगनिविधिनसविगानिच॥नननमनयसिद्धा
 वालखिल्यामहादया॥सैकताद्विधकमोचनवीचलवनाहवात्॥हीविषयधर्मासूक्तमूलाकवेनकावेना
 त्॥वसांकलीकलिगवेसगवानामयार्थिच॥योत्राऊयदधमजात्राह्वाम०अवेनाता॥सऊमयावेसो
 मिशायानिय॥निकुममवात्॥लयजात्यप्रजादवीमृदिसाल्यचयायुवा॥नेदिकस्यायसिद्धालिखिताव
 द्गममुत॥नेदिकानियऊरुमात्यतिष्ठात्रदिताययि॥सैमर्क॥कामदानिसूसिद्धदानीगवासुत॥सवेद
 वमयलिगलिगसर्वेषसिद्धि॥कायितनिवमनुमुधमकामार्थभाहृद॥नकसिंकायितलिग॥वृवा

त्रिलोकवताशा यजिताः स्वायितारस्य प्रयुक्तं कथयन्तु तस्य सद्यः कृतं तथा दानं तीर्थं दत्तं यत्कृत्वा ॥ तत्कृत्वा
 ठिगु निगं कथयन्ति लं लं लं ॥ या लिंगं कथयन्तु दत्तं विधिपूर्वम् सदा क्रिया ॥ सर्वांगमादिर्गंधं काठिका ठिगु
 लं लं ॥ दत्तं कर्कशं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं ॥ लिंगं कर्तुं जगत्सु सुगंधं कर्तुं नापियस्येति ॥ सिद्धिं मक्तिप सि
 द्धं मृकानां हितं कामया ॥ गृहीत्वा गमनं सर्वं लिखितं सिद्धं विनीतं ॥ सद्यः कागमं दृष्ट्वा न सम्यक् सन्निधाय
 ॥ विष्णुवाही प्रभादः स्यात् तस्मात्तन्मध्यं तत्र दत्तं ॥ सन्तनायैः यतिनां कामयाय कालां किना ॥ यद्विजतिव १०२
 तां किं नयां तीर्थं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं ॥ सुसुखिता ॥ अस्मान् गीतनां सोयक कथार्यं सुखं
 जिताः ॥ गदा कथार्यं तायां तस्मात्तं लिंगं पण्यने ॥ अनन्तं सुधीया तन्मध्यं कविस्तं न पलं कृतं ॥ ॥ आसीत् ॥

निव ४

पालक्यस्य कलवसु मती रुषा दासहीनः ॥ स्यामां हर्मिहात्मा कृतं नृप नियतिद्वित्रिनाथः पृथ्वी ॥ तस्य
 श्याक कीर्तिर्वनत्रयुयी नाख्य लाकानूक्यं प्रकृष्टं विधिविधिविधिनायैव वक्तुं योगी ॥ ॥ श्रीमन्
 रुमयूत्रजा हवसमः सैव कलया तं कः ॥ पृथ्वा काविमला दिकः निवयत्र आचार्यं वयो रवत ॥ यूष्मो निरुय
 रुमि नस्य वगुत्रु नारिषिकः सुयः ॥ श्रुती नमनं सदां विजनिता वेना वनाद निवः ॥ माया केमा दिजा तः
 रु विधिमल रुनां कृानदहावकी लुः ॥ नम्रा अरुद नूया मुनिजन विदितः ॥ अर्द्धवका रिधानः ॥ आचार्य
 रुः ॥ यसिद्धस्य कलजन हितः ॥ युद्धं सैवामं मस्य स्याह नमामि किति विदितः ॥ निवाः ४ या दयमं गुवा
 मी ॥ ॥ सिद्धान्तं यद्वक्तुं न उच्यते हरी कृपा दं सुयया ॥ उक्ताय स्य सकं गत्रा विवतथा स्याय स्याग

मो॥ विसृष्टिखिलरुतर्तुनखत्रवेवावन४क॥ श्री सायम्भरुम (गरुदच्युतलनारुका ननुशाम्यति॥ सतत
 ध्ययनं वा द४ यत्र तत्तावलाकनी। तद्विद्यावायुसंवायवद्विमधकनायुग॥ वसुततिलकं त्वादो दीयन्कयचः
 नास्तुथा। संवायानुरुताम (अथुलसाहसिकं कर्त॥ दिताय दानिकानां यदूर्कं स्वत्यधिया मया। दूर्कं सूकमा
 क्रायतल्लविष्यति यद्विना॥ नान्यदनिनिनाद यमं तत्कुरु मया यत्र। नवखनवदातयमर्थत४ नमुन
 सुदा॥ यत्राययावनाचोनास्तदासिचिलवधनात्। वसिकाखुलानिर्वामात्रकृताहपसुक४॥ धरुनः १८०
 काश्यनडाउवमयविगतायावदाधत्रगकं कुम्बुदीयस्यम (अनिखवित्रवृतायावदासुसुभन४॥ या
 वच्चन्द्राकं तात्रामयत्रवित्रवित्रैयकवनाऊनीयं तावद्वेवावनस्यसवित्रवृत्तुवा४यसुनूपाउकीरि४॥

१८०

यावत्तुलीमाननत्ताधत्रतिवसुमतीमूर्द्धमाधत्रगकयावत्सकाननीयां वृत्तयुधिवीमधतामत्रवसि।
 यावच्चन्द्राकं तात्रामयद्विनिदिशऊतयुक्तमरुतावद्वेवावनीयाऊगतिवित्रमिदं यसुनूपासुकीरि
 ४॥ ॥ ति यतिवा लकषासात्रसमूचितायाम्यविज्ञात्राहगदा जिं सतिमा विधि४ समाफ४॥ ॥ सच्चैक
 त्वनर्गधसुसुयययवगताधिकं च तिर्जकतायि३००॥ * ॥ सच्चतु४२ योषयुक्त॥ यद्युक्तिः
 ॥ ॥ वृहस्पतिवासव॥ तस्मिन्दिनं देवकुरुनमस्तुवाऊनलिखितमिदं यसुनूपासुकीरि४॥ * ॥ उरु॥

E 19374
 E 929/2

१८१

आर्य समाज काथि
१९०१ I

ASMA ARCHIVES